इतिहास
तारीख़

हमारी कहानी

तीसरा भाग

पांचवीं श्रेणी के लिए



सम्पादक तथा प्रकाशक –
डाइरेक्टोरेट आफ़ एजुकेशन

प्रबन्धक :–
स्टेशनरी एण्ड प्रिंटिंग डिपार्टमेन्ट
जम्मू एण्ड कश्मीर गवर्नमैन्ट

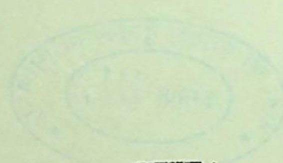
1966

ग्यारहवीं बार

कीमत : 0. 45 पै

इस पुस्तक की कुंजी बनाना निषिद्ध है

सम्पादक तथा प्रकाशक :–
डाइरेक्टोरेट आफ एजुकेश



प्रबन्धक :–
स्टेशनरी एण्ड प्रिंटिंग डिपार्टमेन्ट
जम्मू एण्ड कश्मीर गवर्नमेन्ट

मुद्रक :–
गवर्नमेंट प्रेस, श्रीनगर

विषय सूची

१. कश्मीर के पुराने किस्से कहानियां

कश्मीर एक वादी है । ऊंचे ऊंचे पहाड़ों से घिरी हुई यह सर जमीन हज़ारों वर्ष पहले पानी से भरी हुई थी । इस लिए उस ज़माने में इस लम्बी चौड़ी पहाड़ी झील का नाम सतीसर था । वादी के आस पास के पहाड़ों और उन की तल-हटियों में दो कौमें आवाद थीं जो बहुत ज़माना से यहां रहती चली आ रही थीं । एक का नाम नाग था और दूसरी का पिशाच । कहा जाता है कि नाग कौम के लोग बहुत सुन्दर और वहादुर थे । पिशाच कौम के लोग छोटे कद्द के मगर बड़े मेहनती लोग थे । रहन सहन में उन्हों ने इतनी तरक्की नहीं की थी जितनी नाग कौम ने ।

पढ़े लिखे लोगों का ख्याल है कि पिशाच लोग यहां पहले से रह रहे थे । उन्हों ने पत्थर के औज़ार वनाना सिखाया और गांव भी वसाये । कश्मीर की घाटियों में पत्थर की बनी हुई बहुत सी चीज़ें मिली हैं । उस ज़माना के वसाये हुए गांव भी कहीं कहीं बाकी हैं । उन के नाम के आखिर में होम लगा हुआ है जैसे वन्दा होम, मक्का होम, यन्दरा होम । यहां के पहाड़ों से पत्थर की कुल्हाड़ियां, प्याले, भाले, तीर और कई दूसरी चीज़ें मिली हैं । आदमी ने पत्थर के औज़ार बहुत पहले वनाये थे, हज़ारों वर्ष पहले । इस से पता चलता है कि पिशाच लोग बहुत पुराने ज़माने के लोग हैं ।

नाग लोग कौन थे और कहां से आये थे यह कहना कठिन है, मगर इतना पता चलता है कि यह लोग पिशाच कौम के बाद कश्मीर में आये । कुछ लोगों का ख्याल है कि यह आसाम और वर्मा से हिमालय पहाड़ के किनारे किनारे चल कर

यहां पहुंचे । आसाम में इस वक्त भी एक पहाड़ी कौम रहती है, जिस को नाग कहते हैं ।

आज जिसे हम कश्मीर की वादी कहते हैं वह कैसे बनी । यह कहानी भी मनोहर है । कश्मीरियों की एक बहुत पुरानी किताब "नीलमत पुराण" में लिखा हुआ है कि कश्यप ऋषि जो हिन्दोस्तान के रहने वाले थे एक बार तीर्थ यात्रा के लिए घर से चले । उस समय उन का लड़का नील नाग कश्मीर के नागों का राजा था । जब कश्यप ऋषि पूर्वी पंजाब के शहर कनखल में पहुंचे तो उन के लड़के राजा नील नाग ने भी उन से मिल कर उन्हें कहा कि आप कश्मीर में चल कर रहिये । बाप बेटा अपने साथियों समेत राजौरी के रास्ते "नौका बन्धन" पहुंचे । यह जगह कौन्सर नाग से ज़रा ऊपर है । यहां लोगों ने आकर कश्यप ऋषि से कहा कि महाराज हम बड़ी मुश्किल में हैं । इस झील सतीसर में एक बड़ा देव रहता है, वह हमें दुःख देता है आप हमें बचाइये । कश्यप जी ने कहा कि अच्छा तुम जाओ हम उस देव को खत्म कर देंगे । कश्यप जी ज्यादा वक्त पूजा पाठ में गुज़ारते थे । कहा जाता है कि उन्हों ने प्रार्थना की और उन की प्रार्थना स्वीकार हो गई । एक ज़ोर का भूंचाल आया और बारहमूला के पास पहाड़ फट गया । सतीसर का पानी बह निकला और नीचे से ज़मीन निकल आई । वही कश्मीर की वादी कहलाई ।

आज कल के बहुत से लोगों का ख्याल है कि झील में जलोद्‌भव या जलोद भावा नाम का कोई देव नहीं रहता था । शायद सतीसर झील में बर्फ की बड़ी सी चट्टान थी जो तेज़ हवा के चलने से इधर उधर बहती थी और एक किनारे से दूसरे किनारे जाती थी । सीधे सादे लोग समझते थे कि यह कोई देव है जो दौड़ता फिरता है । जब कोई मुश्किल आन पड़ती तो लोग सोचते कि सब कुछ उसी देव ने किया है ।

यह देव खत्म हो जाए तो सारी खराबी दूर हो जाएगी। इसी लिए लोग कश्यप ऋषि के पास गये होंगे। और भूंचाल भी कश्मीर में बहुत पुराने ज़माने से आते हैं, इस लिये ऐसा ही कोई भूंचाल आया होगा जिस से पहाड़ फट गया और सतीसर झील का पानी बह निकला। जहां आज कल वुल्लर की झील है वहां किसी वक्त बहुत बड़ा शहर आबाद था। यहां बहुत अच्छे बाग, घर और मन्दिर थे। भूंचाल आने से ज़मीन फटी और पानी ने शहर को डुबो दिया।

पुरानी कहानी यह है कि जब कश्यप ऋषि की प्रार्थना से झील सतीसर का पानी बारहमूला के पास बह निकला तो नई ज़मीन आबाद करने के लिये ऋषि जी ने हिन्दोस्तान से कई हज़ार आदमी लाए और आने वालों ने कश्मीर की वादी को आबाद करना शुरू किया। कश्यप जी खुद ब्राह्मण थे मगर वह हिन्दोस्तान से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों जातों के आदमी लाये थे।

नागों ने बाहिर से आये हुए लोगों के साथ मेल जोल रखना पसन्द नहीं किया और पिशाच लोगों ने भी बाहिर वालों से लड़ना झगड़ना शुरू किया। जो लोग बाहिर से आकर कश्मीर में नये नये बसे थे वह भी पिशाच लोगों को जंगली समझते थे। पिशाच का मतलब है भूत, मांस खाने वाला याने बुरे लोग। यह नाम नये आने वाले लोगों ने ही पुराने रहने वालों को दिया था। क्योंकि वह पुराने लोगों को नीच और बुरा समझते थे। दुनिया में ऐसा बहुत है कि जब एक जगह के लोग किसी दूसरे देश पर हाकिम हो जाते थे तो वहां के लोगों को नीच समझने लगते थे। कभी कभी नये आने वालों को भी नीच समझा गया है। हिन्दोस्तान के लोग बाहिर से आने वाले यूनानियों को म्लेच्छ कहते थे और अरबों ने जब ईरान जीता तो उसे अजम कहा जिस का मतलब है गूंगा।

नागों, पिशाचों और हिन्द से आये हुये लोगों का झगड़ा मिटाने के लिये कश्यप ऋषि ने यह सोचा कि हिन्दी लोग गर्मियों में छः महीने कश्मीर में रहें और जाड़े के दिनों में बाहिर चले जायें, इस तरह वह कश्मीर की सख्त सर्दी से भी बच जायेंगे। असूज की पूर्णमाशी को वह कश्मीर छोड़ कर गर्म इलाकों में जाने लगे। पिशाच लोग गर्मी में उत्तर की तरफ पहाड़ों पर रहते और जाड़ों में कश्मीर के मैदान में आ जाते। कुछ समय तक ऐसा ही होता रहा।

एक साल जब हिन्दी लोग जाडों में कश्मीर से बाहिर जाने लगे तो एक बूढ़ा ब्राह्मण बीमारी की वजह से यहीं रह गया। घर वालों ने उस के लिये छः महीने का खाना कपड़ा छोड़ दिया और खुद चले गये। मगर उनको डर था कि पिशाच लोग उस बूढ़े आदमी को ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे। जब पिशाच लोग उत्तर के पहाड़ों से नीचे उतरे तो उन्होंने उस बूढ़े ब्राह्मण को देखा और उसे ठोकरें मारीं मगर जान से नहीं मारा। वह बूढ़ा ब्राह्मण चलता चलता नील राजा की राजधानी नील-नाग पहुंचा। यह जगह आज कल वेरीनाग कहलाती है।

नील राजा ने ब्राह्मण की आवभगत की और उस को बहुत सी बातें बताईं और कहा कि अगर तुम्हारे भाई बन्ध इन बातों पर चलेंगे तो तुम साल भर कश्मीर में रह सकोगे और जाड़ों में बाहर जाना नहीं पड़ेगा। पिशाच लोग तुम को दुःख नहीं देंगे और धीरे धीरे वह खुद ही मिट जायेंगे। चेत में उस बूढ़े के भाई बन्ध लौटे तो उसे जीते जी पाकर बहुत खुश हुये। बूढ़े ब्राह्मण ने सब हाल बताया और उन के राजा ने भी सारी कहानी सुनी। नील राजा ने बूढ़े ब्राह्मण को जो बातें बताई थीं उन को कश्मीर के राजा ने इकट्ठा किया और उस किताब का नाम "नीलमत पुराण" पड़ा। कहा जाता है कि उसी वक्त से हिन्दी लोग साल भर कश्मीर में रहने लगे

और पिशाच लोग धीरे धीरे या तो मिट गये या चार ज़ातों में मिल गये ।

नीलमत पुराण में वहुत सी रस्में बयान की गई हैं और हिन्दू लोग अभी तक उन रस्मों को पूरा करते हैं । कहा जाता है कि उन रस्मों को पूरा करने और त्यौहारों को मनाने की वजह से खेती अच्छी होती थी, बीमारियां नहीं फैलती थीं, लड़ाई में जीत होती थी । पुराने ज़माने के रहन सहन और कारोवार को देख कर उन रस्मों और त्यौहारों में काम की बातें रखी गई थीं मगर धीरे धीरे बहुत सी फज़ूल बातें भी आ गईं जिन को देख कर आज कल के लोग हंसते हैं । जिस बूढ़े ब्राह्मण ने नील राजा से सुन कर नीलमत पुराण इकट्ठा किया था उस का नाम उस किताव में चन्द्रदेव बताया गया है ।

कश्मीर के पुराने इतिहास से पता चलता है कि धीरे धीरे नाग कौम के लोग हिन्दोस्तान से आये हुए आर्य लोगों से घुल मिल गये और फिर कारकोट के चश्मा के पास वसने वाले नाग कश्मीर के राजा बने । उन्हों ने कई सौ साल तक कश्मीर पर राज्य किया । पुरानी कहानियों में उस ज़माना का एक किस्सा वहुत मशहूर है । नाग लोगों के एक राजकुमार का नाम नाग अर्जुन था । उस ने एक आर्य राजकुमारी हीमाल को देखा और उसे अपनी रानी बनाना चाहा । हीमाल राजा वलबीर की लड़की थी और शुपयान के पास एक गांव वलपुरा में रहती थी । नाग अर्जुन उसे अपने महल में ले गया । मगर वहां हीमाल खुश नहीं रही । दूसरी रानियां उसे दुःख देती थीं । नाग अर्जुन ने सोचा कि उसे वलपुरा वापस पहुंचा दे । रास्ता में एक अमीर सौदागर ने हीमाल को देखा और वह उसे अपने साथ भगा ले गया । नाग अर्जुन ने उस का पीछा किया और उसे जान से मार डाला । मगर

हीमाल वापस नहीं आई, वहीं पर सती हो गई । राजकुमारी हीमाल अपनी खूबसूरती के लिये मशहूर है । नागराय और हीमाल की कहानी बहुत मशहूर है ।

कश्मीर के पुराने किस्से कहानियों से पता चलता है कि यहां का इतिहास बहुत पुराना है । नीलमत पुराण में तो लिखा है कि श्री कृष्ण महाराज भी कश्मीर आये थे । श्री कृष्ण को हिन्दू लोग भगवान का अवतार मानते हैं । महाभारत की लड़ाई में उन्हों ने पांडवों की मदद की थी । यह तीन हज़ार वर्ष पहले की बात हैं । श्री कृष्ण के कश्मीर आने की कहानी इस तरह बयान की जाती है । श्री कृष्ण के खानदान यादव वालों का झगड़ा राजा जरासंध से हो गया । कश्मीर का राजा जरासंध का सम्बन्धी था । वह फौज ले कर जरासंध की मदद को गया । मथुरा में लड़ाई हुई और कश्मीर का राजा गोनन्द मारा गया । तब उस का लड़का दामोदर श्री कृष्ण से लड़ने गया । इसी दामोदर के नाम पर दामोदर का करेवा मशहूर है जहां आज कल हमारा हवाई अड्डा है । दामोदर को भी हार हुई और वह मारा गया । श्री कृष्ण जी कश्मीर को ऋषियों की बस्ती मानते थे इसलिये वह यहां का इन्तिज़ाम ठीक करने खुद आये । उन्होंने दामोदर की रानी यशोमती को गद्दी पर बिठाया और मथुरा वापस चले गये । उसी के बाद महाभारत की लड़ाई शुरू हो गई ।

कहा जाता है कि श्री रामचन्द्र भी कश्मीर आते जाते रहते थे क्योंकि उन के बाप राजा दशरथ का विवाह कश्मीर में हुआ था । रामचन्द्र, सीता, लक्ष्मण और भरत के नाम पर कश्मीर में कई जगहों और चश्मों के नाम पड़े हैं ।

कहते हैं कि पांडव भी कश्मीर आये थे । पांडव-लरि (घर) पांडव गली और दूसरी चीज़ें उन के नामों से अब तक मशहूर हैं । किश्तवाड़ और पाडर के रहने वालों में

मशहूर है कि पांडव उन के इलाके से भी गुज़रे थे । हिन्दुओं के तीन बड़े देवता ब्रह्मा जी, विष्णु जी और शिव जी हैं । कहा जाता है कि शिव जी कैलाश पर्वत पर रहते हैं । विष्णु जी के नाम पर कौन्सर नाग या वैष्णव पाद अब तक मशहूर है । ब्रह्मा जी के नाम से हिमालय पहाड़ की कई चोटियां कश्मीर में अब तक याद की जाती ह ।

बुद्ध मत के मानने वाले कहते हैं कि महात्मा बुद्ध अपने मत का प्रचार करने कश्मीर भी आये थे और जहां परी महल है वहां उन्होंने तिब्बत से आये हुये लोगों से मुलाकात की थी । यह जगह श्रीनगर के पास पहाड़ की गोदी में अब तक मौजूद है । एक और कहानी यह है कि मशहूर पैगम्बर हज़रत सुलेमान भी कश्मीर आये थे । श्रीनगर में एक पहाड़ी को सुलेमान टेंग यानी हज़रत सुलेमान की पहाड़ी कहते हैं जो कि शंकराचार्या पहाड़ी के नाम से भी मशहूर है । सिक्खों के गुरु नानक देव जी का कश्मीर आना भी पुरानी किताबों में लिखा है ।

कश्मीर के पुराने किस्से कहानियों से पता चलता है कि यह जगह हमेशा अच्छी समझी जाती थी । हज़ारों ऋषियों मुनियों, सूफियों और आलिमों ने कश्मीर में रहना पसन्द किया । यहां अवतार और पैगम्बर भी आये । उन्होंने कश्मीर के लोगों को मिल जुल कर रहने, एक दूसरे की मदद करने और भाई चारे की ज़िन्दगी गुज़ारने का पाठ सिखाया । हमें भी उस रास्ता पर चल कर कश्मीर का नाम चमकाना चाहि हिन्दू मुसलमान और सिक्ख भाई भाई हैं । जम्मू, लद्दाख और कश्मीर के रहने वाले एक परिवार के लोग हैं । इन सब की एकता बड़ी चीज़ है । इसी जज़बे से हम फलें फूलें और बहुत तरक्की करेंगे ।

सवालात

१. कश्मीर का पुराना नाम क्या था, वादी बनने की कहानी बयान कीजिए ?
२. नाग और पिशाच कौन थे, यहां हिन्दी लोग कैसे आये ?
३. कश्यप ऋषि ने कश्मीर में क्या किया ?
४. नीलमत पुराण कैसे लिखा गया, इस में क्या बताया गया है ?

---

२. आर्यों का कश्मीर में आना

आर्य कौन थे :—अभी तक पूरी तरह यह नहीं मालूम हो सका कि आर्य लोग पहले कहां रहते थे और वहां से दूसरे मुल्कों में कब गये । कोई कहता है कि यह लोग पूर्वी योरुप में रहते थे और वहां से दूसरे देशों को गये । कुछ लोगों का यह भी कहना है कि यह उत्तरी योरुप में रहते थे । बहुत से लोगों का ख्याल है कि वह बीच एशिया के रहने वाले थे और कुछ लोगों का ख्याल है कि आर्य लोग रूस के बीच के हिस्सा में रहते थे । उन लोगों का पहला वतन कहीं भी हो । यह बात सब मानते हैं कि हिन्दोस्तान में आर्य लोग बाहिर से आये हैं । आर्य कद्द के लम्बे चौड़े और रंग के गोरे थे । नाक नक्शा साफ और अच्छा था । उन की ज़बान पुराने किस्म की संस्कृत थी । आज से कोई पांच हज़ार वर्ष पहले यह लोग नई बस्तियां बसाने निकले और ईरान, हिन्दोस्तान और योरुप के मुल्कों में भी गये । आर्य लोग अपने वतन में माल मवेशी पालते थे और बड़े बड़े रेवड़ लेकर एक जगह से दूसरी जगह जाया करते थे ।

आर्यों के आने का रास्ता :—अगर आप हिन्दोस्तान के नक्शा को देखें तो आप को हिन्दोस्तान के उत्तर पूर्व में एक दूसरे से मिले हुए बहुत से पहाड़ दिखाई देंगे । जिन लोगों को उस तरफ से हिन्दोस्तान आना होता था वह उन पहाड़ों के दर्रों से ही आ सकते थे । हिन्दोस्तान आने के लिए हिन्दुकुश पहाड़ से गुज़रना पड़ता है । आर्य लोग जब उस पहाड़ के करीब आये तो उन में से एक गिरोह ईरान चला गया, दूसरा गिरोह पहाड़ पार कर के गिलगित पहुंचा और उस रास्ता से अफ़गानिस्तान चला गया । एक और टोली पहाड़ों से गुज़र कर ज़ोजिला और ब्राज़ील के दर्रों स होती हुई कश्मीर पहुंची । उन में से बहुत से लोग हिन्दोस्तान के मैदानों की तरफ बढ़े और कुछ लोग कश्मीर में बसे रहे ।

आर्य कश्मीर में :—कश्मीर की हरी भरी वादी में चरागाहें बहुत थीं और आर्य लोग माल मवेशी पालते थे । उन्हें यह वादी पसन्द आई । इसलिए जो लोग यहां समा सके वह यहीं ठहर गये । उन्होंने अपने ठहरने की जगहों के नाम भी रखे । यह नाम ज्यादातर संस्कृत में हैं । कहीं कहीं यह नाम बदले हैं । मगर हज़ारों वर्ष गुज़रने के बाद भी उन जगहों के नये पुराने दोनों नाम अभी तक मौजूद हैं ।

आर्य हिन्दोस्तान में पहुंच कर पहले सिंध की वादी में बसे । उन की आबादी बढ़ी और बाहिर से भी और लोग आये । इसलिये उन लोगों को सिंध की वादी से आगे हिन्दोस्तान के मैदानों में फैलना पड़ा । आर्यों का सिंध से पंजाब जाना कोई एक या दो दिन की बात नहीं थी । एक जगह से निकलने और दूसरी जगह बसने में हज़ारों वर्ष लग गये ।

उन पुराने वक्तों में न तो सड़कें थीं और न पुल । सैंकड़ों मील घने जंगल, चौड़े और गहरे दरिया, पत्थरीले पहाड़ और तपते हुये रेतले मैदान रास्ते में पड़ते थे । उन में से गुज़रने

और पुराने रहने वालों के साथ लड़ने भिड़ने में बहुत वक्त लगा। उस सफर में ऐसा भी हुआ कि आर्य लोगों की कई टोलियां रास्ते में जगह जगह बस गई और उन्होंने अपने बचाव के लिए अपने आप को छोटी छोटी बरादरियों में बन्द कर लिया। हर छोटी बरादरी अपने माल मवेशी और खेती बाड़ी को दूसरे गिरोह से बचाने के लिये तैयार रहती थी और साथ ही आर्यों के यह गिरोह मिल कर हिन्दोस्तान के पुराने रहने वालों से मुकाबला करते। अगर यह आर्य मिल जुल कर पुराने रहने वालों से न लड़ते तो हिन्दोस्तान में उन का बसना कठिन हो जाता। आपस की एकता से ही यह इस मुल्क पर काबू पा सके।

आर्यों पर कश्मीर का असर :—आर्य हिन्दोस्तान के उत्तर और उत्तर पूर्वी इलाका में जो जेहलम, चिनाब, रावी, सतलुज और ब्यास से सींचा जाता है और पंजाब कहलाता है पूरी तरह बस गये। तब उन की ज़िन्दगी ज्यादा आराम और चैन से गुज़रने लगी। लड़ाई, भिड़ाई से छुटकारा मिला और इन लोगों को कुदरत के भेद, इनसान के दु:ख सुख और जीने मरने के सिलसिला पर सोच विचार करने का मौका मिलने लगा। उस ज़माने में जिन लोगों ने इन बातों पर ध्यान देना और बाकी लोगों को अपनी मालूमात का फायदा देना अपनी ज़िन्दगी का उद्देश्य बना लिया उन्हें ऋषि की उपाधि दी गई। आज कल भी ऐसे लोगों को हिन्दोस्तान में ऋषि और महर्षि की उपाधि दी जाती है। जैसे महर्षि टैगोर या महर्षि अरविन्द घोष। यह विद्वान लोग अपना ज्ञान दर्शन (फलसफा) और कविता के रूप में वर्णन करने लगे। उन बातों को चार बेदों में इकट्ठा किया गया है। वेदों में दुनिया और धर्म और इनसान की ज़िन्दगी से सम्बन्धित हर आध्यात्मिक, आधिभौतिक (मादी और रूहानी) फलसफा के बारे में बातें लिखी गई हैं। वेद के अर्थ इल्म के हैं। विदवान शब्द

या आलिम इसी से वना है ।

कुछ पढ़े लिखे लोगों का खयाल है कि उन चारों वेदों में से ऋग्वेद कश्मीर के शारदा के स्थान पर तैयार हुआ था। ऋग्वेद सब से बड़ा वेद समझा जाता है । कश्मीर की खूबसूरत वादी पहाड़ों से घिरी हुई है । झील, चश्मे, मैदान और जंगल हैं । खाने पीने की चीज़ें आसानी से हासिल हो सकती थीं । कश्मीर में उस का अच्छा मौका था कि लोग सोच विचार करते, फलसफा और कविता को तरक्की देते और अपने खयालों को संवारते और कारीगरी में भी आगे बढ़ते । कश्मीर ऊंची और अच्छी संस्कृति (कल्चर) का घर बन गया जिस से हिन्दोस्तान ने भी फ़ायदा उठाया । ऊंचे विचार और खयाल, एकता और आज़ादी के जो बीज कश्मीर में बोये गये थे उस का फल हिन्दोस्तान ने भी पाया । रहन सहन और संस्कृति (कल्चर) के जो बेल बूटे हिन्दोस्तान में पैदा हुए उन में कश्मीर की महक भी थी ।

सवालात

१. आर्य कौन थे ?
२. आर्य हिन्दोस्तान में किस तरफ से आये ?
३. आर्यों के रहने सहने का ढंग क्या था ?
४. ऋग्वेद के बारे में आप क्या जानते हैं ?
५. कश्मीर के लीडरों और लोगों ने दुनिया को क्या पाठ सिखाया ?

३. महाभारत और रामायण का ज़माना

बहादुरी का ज़माना :—आप पिछले पाठ में पढ़ चुके हैं कि किस तरह आर्य लोग हिन्दोस्तान में दाखिल हो कर पंजाब में बस गये । आज कल के इतिहास लिखने वालों ने उस ज़माना को वेदों का ज़माना कहा है क्योंकि उस ज़माना

में चारों वेद इकट्ठे हुये । यह ज़माना काफी लम्बा था, इस समय में आर्य लोग समाज की शकल में आ चुके थे और इस योग्य हो गये थे कि हिन्दोस्तान के फैले हुए इलाका में जगह जगह आगे बढ़े ।

उस ज़माना में दुनिया भर में सड़कें और गाड़ियां कहीं नहीं थीं । दरिया का सफर ही आसान रहता था । यही वजह है कि सब से पहले दरियाओं के किनारे पर लगी हुई बस्तियों ही में तहज़ीब शुरू हुई । चुनांचि जब आर्य लोग पंजाब से पूर्व की तरफ चले तो गंगा और जमुना के किनारे किनारे वर्षों तक चलते रहे । रास्ते में लोग बसते जाते थे और कुछ लोग आगे बढ़ते थे । धीरे धीरे आर्य लोग बंगाल तक बस गये । गंगा और जमुना बड़ी नदियां हैं । रास्ते में छोटी छोटी नदियां भी थीं । उन के किनारे आर्य लोग अपनी बस्तियां बनाते जाते थे । चूंकि दरियाओं के ज़रिये इन बस्तियों के रहने वालों का आना जाना रहता था इसलिये इन स्थानों में तहज़ीब और ज़िन्दगी ने पहले तरक्की की । गंगा और जमुना के दर्मियान स्थित बड़े मैदान में जिसे दोआबा यानी दो नदियों की जगह भी कहते हैं, आर्यों की बस्तियां कई राज-वाड़ों में बट गईं । उन राजाओं में अब आपस की लड़ाइयां होने लगीं । इतिहास लिखने वालों ने उस ज़माने को "बहादुरी का जमाना" कहा है । उस ज़माना की दो लड़ाइयां बहुत मशहूर हैं । एक महाभारत की लड़ाई जो उत्तर में लड़ी गई दूसरी जिस का हाल रामायण में बयान किया गया है, दक्षिण में लड़ी गई थी ।

महाभारत :—पंजाब में आर्यों के जो कबीले आबाद थे उन में सब से बड़े और ताकतवर कबीले का नाम भारत था । उस कबीले की दो शाखें थीं, एक का नाम कौरव था । उस खानदान का कायम करने वाला राजा कुरु था । जिस

ज़माना में महाभारत की लड़ाई हुई, कौरव लोगों का राजा दुर्योधन था । उस की राजधानी का नाम हस्तिनापुर था जो कि आज कल की देहली के उत्तर में थी ।

उस कबीले की दूसरी शाख का नाम पांडव था । उस का नाम राजा पांडु के नाम पर पड़ा था । उस राजा के पांच लड़के थे, सब से बड़े लड़के का नाम युधिष्ठिर था । वही राजा था । ये पांचों भाई मिल कर अपनी राजधानी इन्द्रप्रस्थ में रहते थे । इन्द्रप्रस्थ आज कल की देहली का पुराना नाम है । उन दिनों विवाह प्रायः स्वयंवर की रीति (रस्म) के अनुसार होते थे । यानि लड़की अपना वर आप ही बहुत से लड़कों में से चुनती थी । चुनांचि इन पांचों भाइयों में से सिर्फ अर्जुन बड़ी शान से रहते थे ।

कौरवों का राजा दुर्योधन पांडवों की दौलत और शान देख कर जलने लगा । एक दिन उस ने पांडवों को अपनी राजधानी में बुलाया और उन की खूब आवभगत की । फिर उन से जुआ खेलने को कहा । युधिष्ठिर सीधे सादे आदमी थे, दुर्योधन की चाल न समझ सके, जुआ खेलने बैठे तो हारने लगे । हारते जाते और बाज़ी बढ़ाते जाते । तमाम धन दौलत दाव पर लगा दिया । फिर अपने भाइयों को भी हार गये, आखिर में अपने आप को दाव पर लगाया और अपनी आज़ादी भी खो बैठे । दुर्योधन ने कहा कि द्रौपदी और पांचों भाई मेरे दास हैं मगर में उन को इस शर्त पर आज़ाद कर दूंगा कि वह फिर कभी अपने राज्य में वापिस न लौटें ।

यह पांचों भाई और द्रौपदी अपने वतन से बाहिर गांव गांव और जंगल जंगल मारे मारे फिरते रहे । कहा जाता है कि उसी चक्कर में वह कश्मीर पहुंचे और बहुत दिनों तक यहां रहे । उस देश निकाले ज़माने में वह जिन राजवाड़ों

और शहरों से गुज़रे वहां के राजाओं और सरदारों से उन की दोस्ती हो गई क्योंकि पांडव अच्छे और नेक लोग थे ।

अपने मित्रों की मदद से एक दिन पांडवों ने कौरवों पर धावा बोल दिया । दुर्योधन ने अपने दोस्त राजाओं और महाराजाओं की मदद हासिल की और कुरुक्षेत्र के मैदान में घमसान की लड़ाई हुई । दोनों तरफ बड़ी बड़ी फौजें थीं । लड़ने वाले बहादुर थे । अठारह दिन तक लड़ाई होती रही । उस लड़ाई में श्री कृष्ण जी पांडवों की मदद कर रहे थे । वह अर्जुन के रथवान थे । पहले अर्जुन लड़ने के लिये तैयार नहीं थे । वह कहते थे कौरव हमारे भाई हैं उन का खून बहाना अच्छा नहीं । तब श्री कृष्ण जी ने उन्हें समझाया कि धर्म और सच्चाई के लिये लड़ना बुरा नहीं । श्री कृष्ण जी ने जो उपदेश दिया था उसे श्री भगवद्गीता कहते हैं । यह पुस्तक आज भी लोग पढ़ते हैं और इस से अच्छी बातें सीखते हैं ।

महाभारत की लड़ाई में कौरवों को हार हुई । उन के सब चुने हुए सरदार मारे गये और बाकी फौज मैदान से भाग खड़ी हुई । दुर्योधन भी भाग रहा था मगर भीम के हाथों मारा गया । उस लड़ाई में कौरव बिल्कुल नष्ट हुए और पांडवों के सब से बड़े भाई युधिष्ठिर को हस्तिनापुर का राजा बनाया गया । उन्हों ने लगभग ३६ (छत्तीस) वर्ष राज्य किया । फिर राज पाट के कारोबार से दिल उच्चाट हो गया और वह अपने चारों भाई और द्रौपदी समेत उत्तर की तरफ मेरु पर्वत पर चले गये । वहां उन्हों ने वानप्रस्थ का जीवन गुज़ारा ।

महाभारत की कहानी एक लम्बी कविता के रूप में लिखी गई है । इसे कई आदमियों ने अलग अलग वक्तों में लिख कर पूरा किया है । उस में नये नये हिस्से जोड़े जाते रहे हैं । पूरी कविता एक समय में नहीं लिखी गई है और न

उसे एक कवि ने लिखा है । कवियों ने महाभारत की कविता में यह दिखाया है कि किस तरह राज करने और दौलत समेटने का लालच आदमी को अन्धा बना देता है और आखिर में कैसे सच्चाई और नेकी की ही जीत होती है । महाभारत की कविता पढ़ने से हमें उस ज़माने के रीति रिवाज और रहन सहन का पता चलता है । मालूम होता है कि जात पात का फर्क पैदा हो चुका था और लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की चार बड़ी ज़ातों में बट चुके थे । छोटी छोटी रियासतों पर राजाओं का राज्य था । यह लोग एक दूसरे के राज्य पर कब्ज़ा करने की चिन्ता में रहते थे । लोग लड़ाके और ताकतवर थे । बचपन से तीर तलवार चलाना सीखते थे । औरतों को बहुत आज़ादी थी और वह बहुत से कामों में मर्दों का हाथ बटाती थीं । उन्हें अधिकार था कि अपना वर खुद चुनें । इस के लिये स्वयंवर भी होते थे ।

कश्मीर और कौरव पांडव :—जिस वक्त कौरव और पांडव हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ में राज्य कर रहे थे उस समय कश्मीर में राजा दामोदर का राज्य था । उस ने यादवों के राजा पर चढ़ाई कर दी थी । श्री कृष्ण जी यादवों के वंश से थे । राजा दामोदर उन के हाथ से मारा गया । उस के बाद श्री कृष्ण जी कश्मीर आये और उन्हों ने राजा दामोदर की विधवा पत्नी यशोवती को जिसे बच्चा पैदा होने वाला था कश्मीर की गद्दी पर बिठा दिया । रानी का गद्दी पर बैठना कश्मीर के लोगों को अच्छा नहीं लगा । तब श्री कृष्ण जी ने कहा कि कश्मीर की ज़मीन पार्वती है, यहां का राजा वही होगा जो शिवजी का एक अंश या हिस्सा हो । इस लिये अगर देश के लोग अपना भला चाहते हैं तो जो कोई भी उन का राजा बने उस के हुक्म पर चलें । उस दिन से लोगों ने रानी यशोवती को मान लिया और उसे मां की तरह समझने लगे । रानी से जो बच्चा हुआ उस का नाम बाल गोनन्द रखा गया ।

जब महाभारत की लड़ाई हुई तो राजा बहुत छोटा था इस लिये लड़ाई में नहीं गया ।

रामायण :—वह कम लोग होंगे जिन्हों ने रामायण की कहानी न सुनी हो । बहुत से लोगों ने राम लीला में नाटक देखा होगा । रामायण की कहानी से फिल्में भी बनी हैं । इतिहास लिखने वाले महाभारत और रामायण का ज़िकर साथ साथ करते हैं । क्योंकि उन की राय में इन दोनों में बहुत कम फर्क है और इन दोनों से उस ज़माने का हाल मालूम होता है जिसे बहादुरी का ज़माना कहते हैं । रामायण के ज़माने में आर्य लोग हिन्दोस्तान में पूर्व की तरफ काफी दूर तक फैल गये थे । अवध में भी उन का राज्य कायम था ।

रामायण की कहानी यूं है कि अयोध्या म राजा दशरथ राज्य करते थे । उन की कई रानियां थीं । उन रानियों से राजा दशरथ के चार बेटे थे । सब से बड़े का नाम रामचन्द्र था, दूसरे का भरत, तीसरे का लक्ष्मण और चौथे का नाम शत्रुघ्न था । लक्ष्मण और शत्रुघ्न के बिना बाकी सब अलग अलग माताओं से थे । भरत की मां रानी कैकेई राजा दशरथ की चहेती रानी थी । मगर उन सब भाइयों में ऐसा प्रेम था जैसे कि यह सब एक ही मां के बेटे हैं । राजा दशरथ जब बूढ़े हो गये तो उन्हों ने सोचा कि वह राज पाट अपने बड़े लड़के राम को सौंप दें और खुद बाकी ज़िन्दगी भगवान के ध्यान में गुज़ार दें । कैकेई ने चाहा कि राज्य उस के अपने लड़के भरत को मिले । इस लिये उस ने रूठ कर राजा को परेशान करना शुरू किया । यहां तक कि राजा दशरथ कैकेई की बात मानने पर राज़ी हो गये । कैकेई ने ज़िद्द कर के श्री रामचन्द्र को चौदह वर्ष का बनवास भी दिलवा दिया ।

रामचन्द्र जी के साथ वह बड़ी ज़्यादती थी । मगर उन्हों ने बाप का कहा सिर आंखों पर रखा और घर छोड़

कर वनवास जाने को तैयार हो गये। रामचन्द्र का विवाह हो चुका था। उन की भार्या का नाम सीता जी था। यह राजा जनक की बेटी थी। यह विवाह उस समय के स्वयम्वर की रीति से हुआ था। शर्त यह रखी हुई थी कि जो एक बड़ा मज़बूत धनुष, जो कि वहां रखा गया था, तोड़ेगा सीता का विवाह उसी से होगा। मुकाबला का एक दिन मुकर्रर हुआ। उस रोज़ एक बड़े भारी दंगल में बहुत से राजे और राजकुमार जमा हुये और धनुष तोड़ने के लिये बढ़े, मगर बाकी तो सब हार गये सिर्फ रामचन्द्र मज़बूत धनुष यानी कमान तोड़ सके तो राजकुमारी सीता से उन का विवाह हो गया। राम के साथ सीता ने भी वनवास लिया और लक्ष्मण भी उन लोगों के साथ गये। भरत जी को अपनी मां की हठ अच्छी नहीं मालूम हुई थी। बाप के कहने पर उन्हों ने राजपाट का काम तो ले लिया मगर सिर्फ रामचन्द्र जी के वनवास तक के लिये। उन्हों ने कहा कि जब तक राम वापिस नहीं आते उन की खड़ावें गद्दी पर रहेंगी क्योंकि असल राजा रामचन्द्र ही हैं। मैं सिर्फ उन की तरफ से राज्य करूंगा। जब तक रामचन्द्र नहीं थे भरत प्रतिदिन उन की खड़ाओं को प्रणाम करते थे।

जंगल में जा कर रामचन्द्र और उन के साथियों को बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। सीता जी को लंका का राजा रावण चुरा कर ले गया। रामचन्द्र ने सीता को वापस लाने के लिये रावण पर चढ़ाई की। हिन्दोस्तान के दक्षिणी हिस्सा में रामचन्द्र ने कई मुल्क जीते और आखिर लंका पहुंच कर रावण को भी हराया। रावण बड़ा विद्वान और ताकतवर ब्राह्मण राजा था। उस लड़ाई में रावण के सौ बेटे और भाई मारे गये। इस तरह आर्यों की सभ्यता (तहज़ीब) सारे हिन्दोस्तान में बल्कि उस के बाहिर लंका में भी फैल गई।

बनवास के चौदह वर्ष खत्म होने पर रामचन्द्र जी अयोध्या वापिस आये और राज्य करने लगे । लोगों में चर्चा हुआ कि रामचन्द्र जी जैसे महावीर और नेक आदमी के लिये अच्छा नहीं कि वह सीता को अपनी रानी बनाये रखें क्योंकि वह रावण के महल में रह चुकी है । सीता रावण की कैद में थी । अगरचि वह उस की रानी नहीं बनी थी मगर लोगों की ज़बान पर बुरी बातें आती रहीं । रामचन्द्र जी ने कहा कि जब लोगों की यही मर्ज़ी है कि मैं सीता को रानी नहीं बनाऊं तो मैं ऐसा ही करूंगा । उन्हों ने सीता को बनवास दे दिया । बन में जाते ही सीता रामचन्द्र जी के दो लड़कों लव और कुश की मां बनी ।

रामायण की कथा से मालूम होता है कि उस वक्त लोग अपने कुम्बे वालों का बड़ा खयाल करते थे । बच्चे मां बाप के हुक्म पर चलने के लिये कड़ी से कड़ी तकलीफ सहते थे । लोगों की राय का राजा बड़ा ख्याल करता था । यह भी पता चलता है कि उस ज़माने में आर्य लोग दूर दूर तक फैले और उन्हों ने हिन्दोस्तान के दूसरे रहने वालों को हराया या अपना लिया । राम चन्द्र जी ने वानर लोगों के राजा सुग्रीव को अपने साथ मिलाया था और उन की ही मदद से लंका पर विजय पाई । हनुमान वानर राम चन्द्र जी का सच्चा भक्त था और हर समय उन का साथ देता रहा ।

रामायण और कश्मीर :—कश्मीर के कवि कल्हण पर रामायण का बहुत गहरा असर पड़ा था । उन की रची हुई राज तरङ्गिणी में जगह जगह रामायण की कविता की झलक दिखाई देती है । हिन्दोस्तान के दूसरे लोगों की तरह कश्मीर के लोगों पर भी राम चरित्र का असर पड़ा है । यह भी मशहूर है कि राम चन्द्र जी के बेटे लव और कुश बाद में कश्मीर के राजा बने थे । कई लोग कहते हैं कि कैकेयी का

मायका कश्मीर में था ।

सवालात

१. बहादुरी का ज़माना किसे कहते हैं ?
२. महाभारत की लड़ाई का हाल बताइए ?
३. महाभारत की लड़ाई से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
४. रामायण की कहानी बयान कीजिए ?

४. महात्मा गौतम बुद्ध

आज से कोई ढाई हज़ार वर्ष पहले की बात है कि हिन्दोस्तान के उत्तर पूर्व में कपिलवस्तु का राजा शुद्धोदन राज्य करता था । राजा के हां एक बेटा पैदा हुआ जिस का नाम सिद्धार्थ रखा गया । यही लड़का बाद में महात्मा गौतम बुद्ध कहलाया ।

सिद्धार्थ के बचपन ही में उस की मां मर गई थी । फिर भी यह बच्चा बड़े लाड़ प्यार से पाला गया और इसे बड़ी अच्छी शिक्षा दी गई । क्षत्रिय राजकुमार होने की वजह से सिद्धार्थ को फौजी काम भी सिखाया गया । मगर उन चीज़ों में उस का दिल नहीं लगा । उस को सोच विचार से बड़ा लगाव था । दुनिया के धन्धों में उस का दिल नहीं लगता था । राजा को बेटे का यह त्याग अच्छा नहीं लगता था । वह चाहता था कि उस का बेटा बहादुर सिपाही बने, राज पाट में मदद दे और एक दिन राजा बने । राजा शुद्धोदन ने सोचा कि अगर राजकुमार का ब्याह कर दिया जाये तो शायद वह

दुनिया के धन्धों में फंस जायेगा । उस ने एक वहुत सुन्दर राजकुमारी यशोधरा से सिद्धार्थ का ब्याह कर दिया । कुछ दिनों बाद उन के हां एक बेटा पैदा हुआ । तब भी सिद्धार्थ की तबीयत में कोई तबदीली पैदा नहीं हुई ।

यह भी मशहूर है कि सिद्धार्थ ने एक दिन एक बूढ़ा आदमी देखा फिर उन्हें एक बीमार दिखाई दिया । फिर उन्हें यह मालूम हुआ कि एक दिन हर आदमी मर जाता है । इस से गौतम के दिल को बड़ा दुःख पहुंचा । उन्हें यकीन हो गया कि दुनिया दुःखों का घर है और इस दुनिया में वही जन्म लेता है जिस ने पहले जन्म में बुरे कर्म किये हों । इसलिये दुनिया के झमेलों से किनारा करना ही अच्छा है ।

यह सोच कर वह राजपाट, घरवार और बीवी बच्चों को छोड़ कर जंगल में चला गया । उन्हों ने कड़ी तपस्या की, वेद और शास्त्र पढ़े और उन पर बड़ा ध्यान दिया । छः साल की तपस्या के बाद भी उन्हें वह शान्ति न मिली जिस के लिए उन्हों ने इतनी सख्तियां झेलीं । इन को यकीन हो गया कि यह सब तरीका अकार्थ है । तब वह गया के शहर में एक बड़ के वृक्ष के नीचे समाधि लगा कर बैठ गये और पचास दिन तक उसी हालत में रहे । उस गहरे ध्यान में उन को वह भेद मालूम हो गया जिस की तलाश में वह मारे मारे फिर रहे थे । यह ज्ञान पाने की वजह से वह बुद्ध के नाम से मशहूर हुए । गया से महात्मा बुद्ध सारनाथ गये जो बनारस के पास है । उन्हों ने वहां अपनी शिक्षा का प्रचार शुरू किया । देश भर में अपने धर्म का प्रचार करने के बाद वह अस्सी साल की आयु में स्वर्ग सिधारे ।

महात्मा बुद्ध की शिक्षा का प्रचार करने वालों को भिक्षु कहते हैं और भिक्षुओं की बरादरी संघ कहलाती है । महात्मा बुद्ध की शिक्षा बड़ी अच्छी और सादा थी । वह जात पात

का फर्क नहीं मानते थे और कहते थे कि आदमी अपने कर्म यानी काम से परखा जाता है । यह बात लोगों के दिल में उतर गई । क्योंकि ब्राह्मणों ने उस समय हिन्दू धर्म में इतनी रस्में भर दी थीं और ऊंच नीच का ऐसा फर्क पैदा कर दिया था कि लोग परेशान थे । गरीब और छोटी ज़ात के लोग बहुत दुःखी थे । जब महात्मा बुद्ध ने कहा कि दुनिया दुःख का घर है तो यह बात भी लोगों के दिल में उतर गई ।

महात्मा बुद्ध का विचार था कि पहले जन्म के बुरे कर्म का फल भोगने के लिये इनसान दुनिया में बार बार जन्म लेता है । इनसान अगर दुनिया के झमेलों में न फंसे, धन दौलत का लालच न करे, अच्छे विचारों और अच्छे कामों में लगा रहे तो बार बार के जन्मों से मुक्ति हासिल कर सकता है । यही निर्वाण है । उस को हासिल करने के लिये देवी देवताओं की पूजा, उन्हें भेंट देना और यज्ञ करना ज़रूरी नहीं । निर्वाण अच्छे विचारों और अच्छे कामों से हासिल होता है । महात्मा बुद्ध ने परमात्मा या खुदा के बारे में कुछ नहीं कहा ।

महात्मा बुद्ध का कहना है कि सब इनसान जन्म के आधार पर एक से हैं । यह अच्छे या बुरे अपने २ खयालों की अच्छाई या बुराई और अपने अपने चलन की नेकी और बदी से बनते हैं । ऊंच नीच का फर्क करना और लोगों को ज़ात पात में बांटना ठीक नहीं । गरीबों और जिन लोगों को छोटी ज़ात का समझा जाता था, उन्हों ने महात्मा बुद्ध की शिक्षा को बहुत पसन्द किया और उन के मानने वालों की गिनती बहुत बढ़ गई । कुछ राजाओं ने भी बुद्ध मंत को अपनाया । उन में सब से मशहूर महाराजा अशोक हुआ ।

महात्मा बुद्ध अहिंसा में पूरा यकीन रखते थे । किसी जानदार को ज़बान या हाथ से दुःख देना पाप समझते थे । यह असूल हर इनसान को अच्छा मालूम होता है । महात्मा

गांधी ने भी अहिंसा के असूल को अपनाया था और अंग्रेज़ के खिलाफ लड़ने में इस असूल को इस्तेमाल किया । अंग्रेज़ फौज और पोलीस की मदद से राज्य करते थे । जो लोग देश की आज़ादी के लिये लड़ रहे थे उन को जेल डालते, गोली मारते और तकलीफ पहुंचाते, मगर महात्मा गान्धी का कहना था कि हम इन बातों का जवाब अहिंसा से देंगे । खुद लाठी गोली नहीं चलायेंगे । महात्मा गान्धी ने ज़ात पात के खिलाफ भी प्रचार किया और अछूतों की हालत अच्छी बनाने की कोशिश की । महात्मा बुद्ध की शिक्षा के अनुसार गान्धी जी की शिक्षा थी कि ज़ालिम को हराने के लिये उस का जुल्म सहन करो मगर उस की बात पर ध्यान न दो । एक न एक दिन ज़ालिम की आंख ज़रूर खुलेगी । बुद्ध मत हिन्दोस्तान में ज्यादा देर तक अपना ज़ोर कायम न रख सका, कारण उस का यह था कि उस की बहुत सी अच्छी बातें पहले ही से हिन्दू धर्म में मौजूद थीं और बहुत सी बाद में शामिल कर दी गईं । इलावा इस के ब्राह्मण लोगों ने बुद्ध मत के खिलाफ प्रचार भी किया और बाद में कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य ने हिन्दू धर्म को अच्छे रूप में पेश किया और जो बुराईयां ब्राह्मणों ने पैदा की थीं उन्हें दूर भी किया । उन तमाम बातों से बुद्ध मत के मानने वालों की गिनती पहले की अपेक्षा कम होती गई । बुद्ध मत के मानने वाले चीन, जापान, बर्मा, मलाया, कम्बोडिया , वीटनाम, थाईलैंड, इण्डोनेशिया, नेपाल और लंका में भी मिलते हैं । तिब्बत और लद्दाख में तो यह आम हैं । महाराजा अशोक के ज़माने में तो यह मत पूर्वी योरुप के कई इलाकों तक फैल गया था । इस मत के फलसफा के बुनियादी असूलों की झलक दुनिया के बड़े बड़े धर्म के असूलों में पाई जाती है ।

सवालात

१. महात्मा बुद्ध के बारे में आप क्या जानते हैं?
२. बुद्ध मज़हब की शिक्षा क्या थी?
३. बुद्ध-मत का असर हिन्दोस्तान में क्यों कम हो गया?
४. भिक्षु किसे कहते हैं ?
५. बुद्ध-मत के मानने वाले कहां कहां पाये जाते हैं?

५. कश्मीर में बुद्धमत

पिछली बातों पर एक नज़र :—महात्मा बुद्ध के ीवन का हाल पढ़ कर मुमकिन है कि आप को यह विचार आया हो कि हमारी दुनिया में किस कदर दुःख दर्द है और इस दुनिया में रहने वालों को कितने कष्ट और परेशानियां उठानी पड़ती हैं। बहुत से लोग ऐसी बातें देख कर चुप रहते हैं। मगर शाहज़ादा सिद्धार्थ ने लोगों के दुःख, उन का भूखा नंगा रहना, बीमार पड़ना और एड़ियां रगड़ रगड़ कर मर जाना देखा तो वह बहुत परेशान हुआ। उस ने दुनिया वालों के दुःख दर्द दूर करने की बात सोची। वर्षों योग साधा, जंगलों में भटकता फिरा और आखिर में इस नतीजा पर पहुंचा कि हमारे दुःख हमारे ही कर्मों का फल है। अगर हम अपने कर्म ठीक रखें और अपनी बहुत सी बुरी इच्छाओं पर काबू पायें तो हमारे दुःख कम हो सकते हैं। यूं तो ज़िन्दगी में दुःख होते हैं मगर महात्मा बुद्ध ने सिखाया कि आपस में प्यार से रहो, एक दूसरे की मदद करो, दिल में बुरे विचार मत पैदा होने दो, किसी को दुःख न दो, जो लोग ऐसा करेंगे उन की ज़िन्दगी में शान्ति होगी। यहां पर महात्मा बुद्ध की शिक्षा कुछ शब्दों

में बयान की गई है । मगर इन के खयाल और फलसफा पर बहुत सी किताबें लिखी गई हैं और आज भी इस धर्म के मानने वालों की गिनती बहुत ज्यादा है । करोड़ों लोग बुद्धमत को मानते हैं और बहुत से लोग दूसरे धर्म को मानते हुए भी बुद्ध मत की बड़ी इज्ज़त करते हैं और महात्मा बुद्ध के बताये हुए रास्ता पर चलना चाहते हैं । क्योंकि दूसरे मज़हबों में भी अच्छे चाल चलन और काम को दुनिया में सुख और शान्ति पाने का जरिया बताया गया है ।

कश्मीर में बुद्धमत :—बुद्धमत को चले हुए अब लगभग ढाई हज़ार वर्ष हो चुके हैं । इस बीच में दुनिया में बहुत सी तब्दीलियां हुईं और बुद्धमत के मानने वालों पर भी इस लम्बे समय का असर पड़ा है । मगर बुद्धमत में जो मोटे मोटे असूल बताये गये हैं वह अपनी जगह पर हैं । बल्कि यह हम कह सकते हैं कि इन ढाई हज़ार वर्षों में दुनिया के अन्दर जो कुछ होता रहा है उस से महात्मा बुद्ध की बताई हुई बातें सच्च मालूम होती हैं ।

हज़रत ईसा ने भी अच्छे काम करना, दूसरों के साथ भलाई, सच्चाई और मुहब्बत से पेश आना और गरीबों की मदद करना हर इनसान के लिये ज़रूरी बताया है । कश्मीरी पहले ही से खुला दिल रखते थे । जब इन पर बुद्ध मत का असर पड़ा तो इन में और भी अच्छी बातें पैदा हुईं । उन्हों ने विद्या पढ़ना, अच्छी ज़िन्दगी का रहस्य समझना ज़रूरी जाना । धन दौलत समेटने में समय गंवा देना अच्छा नहीं समझा । यहां बुद्ध मत की बड़ी आवभगत हुई और उस के असूलों को पसन्द किया गया । दीन धर्म का फर्क किये बिना, उन असूलों से फायदा हासिल हो सकता था । बुद्धमत पैदा होने के दो सौ वर्ष के अन्दर ही इस मत का प्रचार कश्मीर में भी होने लगा ।

सम्राट अशोक ने जब बुद्ध मत को मान लिया तो उस ने अपने राज्य की सारी ताक़त इसे फैलाने में लगा दी । उस ने अपने भाई बन्ध और अधिकारी हिन्दोस्तान और बाहर के मुल्कों में प्रचारक बना कर भेजे । कुछ लोग कश्मीर में भी आये । यह प्रचारक भिक्षु कहलाते थे । यहां के पहाड़, जंगल, चश्मे, दरिया और झीलें ऐसी शान्त प्रकृति को जतलाती हैं कि भिक्षुओं को भक्ति के लिये यह जगह बहुत पसन्द आई । अच्छी अच्छी जगहों पर उन के मठ बनने लगे जिन में भिक्षु भक्ति किया करते थे । कश्मीर के पण्डित और आलिम उस मत को समझने और समझाने में लग गये और उन्हों ने इतनी तरक्की की कि उन में से कई एक दूसरे मुल्कों में प्रचार करने के लिये भेजे गये । बुद्ध मत के कश्मीरी विद्वान प्रचार करने के लिये चीन, काश्गर, खुतन, ईरान, यूनान और रूस तक गये ।

कश्मीर में भी हिन्दोस्तान की तरह ऐसा तो नहीं हुआ कि सारी आबादी बौद्ध हो गई हो । मगर यह भी नहीं हुआ कि मज़हब के फर्क की वजह से बौद्धों और हिन्दुओं में किसी किस्म का झगड़ा फसाद हुआ हो । राज तरङ्गिणी के लिखने वाले कल्हण का कहना है कि सब लोग एक दूसरे का खयाल रखते थे और मिलजुल कर रहते थे । यहां तक कि शिवमत के मानने वालों ने बौद्धों के स्तूप और मठ तय्यार कराये और इसी तरह बुद्ध मत के मानने वालों ने मन्दिर और धर्मशालायें बनवाईं । उस ज़माना के राजे भी धर्म का भेद भाव नहीं मानते थे । उन में राजा ललितादित्य, जयापीड, जयसिंह रानी रतना दवी, रानी दिद्धा, वज़ीर दल्हन और रानी धन्या ओदे के नाम वर्णन करने के योग्य हैं ।

कनिष्क और उस के बाद :—अठारह सौ वर्ष से ज्यादा हुआ जब कि महाराजा कनिष्क हिन्दोस्तान में राज्य करता

था । वह बुद्धमत का मानने वाला था । अशोक के बाद उस राजा ने बुद्ध मत फैलाने की कोशिश की और सफल भी हुआ । बुद्ध धर्म आज भी बड़े २ मज़हबों के साथ ज़िन्दा है । महाराजा कनिष्क ने कश्मीर में बुद्ध मत के विद्वानों की एक बड़ी सभा बुलाई । उसमें उस ज़माना के सब से बड़े बौद्ध गुरु नाग-अर्जुन भी शामिल थे । नाग अर्जुन कश्मीर में हार्वन के गांव में रहते थे । उन्हों ने बुद्ध मत पर बहुत सी किताबें लिखी हैं । महाराजा कनिष्क उन की बड़ी इज्ज़त करता था । उन के कहने पर ही बुद्ध मत की चौथी सभा कश्मीर के अन्दर कनिष्कपुर में की गई । बौद्धों में मत का फर्क शुरू हो गया था । कुछ लोग कहते थे कि बौद्धों को चाहिये कि महात्मा बुद्ध के बनाये हुये तरीकों से ही पूजा करें और कुछ लोगों का ब्राह्मण के असर से यह खयाल था कि महात्मा बुद्ध की मूर्ति की पूजा उसी तरह की जाये जैसे विष्णु देवता पूजे जाते हैं । नाग अर्जुन की राय भी यही थी । मगर उस सभा में फैसला हुआ कि लोगों को आज़ादी होनी चाहिये । वह चाहें तो महात्मा बुद्ध को देवता मान कर उनकी मूर्ति पूजें या पुराने तरीकों से वगैर मूर्ति के भक्ति ध्यान करें । जिन्हों ने पुराना तरीका माना उन्हें हीनयान का नाम दिया गया । उन का लक्ष्य निर्वाण हासिल करना था । दूसरे तरीका पर चलने वालों को महायान कहते हैं । यह लोग अपने अच्छे कामों से बुद्ध का दर्जा हासिल करना चाहते हैं । नये तरीका पर चलने वाले बौद्ध अभी तक उत्तर और बीच हिन्दोस्तान में हैं और पुराने रास्ता पर चलने वाले हिन्दोस्तान से बाहिर लंका, बर्मा, चीन और दूसरे मुल्कों में मिलते हैं ।

सवालात

(१) कश्मीरियों ने बुद्ध-मत के फैलाने में क्या हिस्सा लिया ?

(२) कश्मीर के भिक्षु दुनिया में किस किस इलाका में प्रचार करने गये ?

(३) गुरु नागार्जुन कश्मीर में कहां रहते थे, उन्हों ने बुद्ध मत फैलाने के लिये क्या किया ?
(४) बौद्ध आज कल कहां कहां मिलते हैं ?
(५) महाराजा कनिष्क ने बुद्ध मत फैलाने के लिये क्या किया ?

---

६. कश्मीर की तरक्की का ज़माना

कश्मीर चौथी से ग्यारहवीं सदी ईस्वी तक बहुत तरक्की कर चुका था । उस ज़माना में कश्मीर के सिपाही हिन्दोस्तान ही नहीं बल्कि चीन, खुतन, काशगर और अफगानिस्तान में भी अपनी बहादुरी दिखा आये थे । ललितादित्य ने मुल्क में बड़ा अच्छा इन्तिज़ाम किया था । उस ने कई नये नये महकमे बनाये और सरकारी काम चलाने के लिये कोई पच्चीस अफसर मुकर्रर किये । जैसे वज़ीर माल, बड़ा जज, विदेशी मामलों के लिये वज़ीर, सेनापति, जेल खानों के दारोगा, किलों का दारोगा, अफसर ड्योढ़ी, अफसर ख़ज़ाना और दूसरे महकमों के अफसर ।

उसी ज़माना में कश्मीर के अन्दर अच्छे कवि, नाटक लिखने वाले, तस्वीर बनाने वाले, फलसफी, हकीम और बड़े बड़े कारीगर पैदा हुये । कवियों में कालिदास, बिल्हण और मम्मट्टाचार्य बहुत मशहूर हैं । कहा जाता है कि कालिदास अलकापुर यानी मनिगाम का रहने वाला था जो कि लार में है । उसका शकुन्तला नाटक दुनिया के सब से अच्छे नाटकों में गिना जाता है । उस नाटक का अनुवाद दुनिया की कई ज़बानों में हो चुका है । बिल्हण कश्मीर छोड़ कर दक्षिण के कोंकण देश में पहुंचा था और वहां राजा का दरबारी कवि

बना था । उस ने कई मशहूर किताबें लिखी हैं । मम्मट्टाचार्य छच्छ कूट का रहने वाला था । उस नाम का गांव अवन्तीपुर से पांच छः मील के फासला पर अब भी मौजूद है । उस ने काव्यप्रकाश नामी किताब लिखी है जो कविता के विचार से दुनिया की एक अच्छी किताब समझी जाती है । विष्णु शर्मा ने पञ्चतन्त्र नाम की किताब लिखी । कहा जाता है कि यह दुनिया में कहानियों की सब से पहली किताब है । ईरान, अरब और योरुप वालों ने अपनी ज़बानों में इस किताब का अनुवाद किया है । यहां के लोग तस्वीर बनाने में भी बड़े योग्य थे । हसूराय कश्मीर का मशहूर चित्रकार गुज़रा है । उस का चित्र बनाने का ढंग हिन्दोस्तानी चित्रकारी से अलग है । क्षेमेन्द्र ने कई किताबें लिखीं हैं जिन के पढ़ने से कश्मीर के समाज़ी, सियासी और इक्तसादी या आर्थिक हालात मालूम करने में बहुत सहायता मिलती है ।

चन्द्र पण्डित ने संस्कृत भाषा का व्याकरण लिखा है । कश्मीर के फिलासफरों में वसुगुप्त, उत्पलाचार्य और अभि-नवगुप्त के नाम बहुत मशहूर हैं । अब तक हमारी हकूमत अभिनव-गुप्त की लिखी हुई किताबों की बीस जिल्दें छपवा चुकी हैं । संगीत का भी कश्मीर में काफी शौक था । कश्मीर के रागी हिन्दोस्तान के मुख्तलिफ दरबारों में जाते थे और अपने मुल्क का नाम रोशन करते थे । सारङ्गदेव ने संगीत रत्नाकर नामी मशहूर किताब संस्कृत ज़बान में राग विद्या के सम्बन्ध में लिखी है । सारङ्ग देव कश्मीरी था । कश्मीरियों को नाच का बहुत शौक रहा है । नाटक खेलने के लिये कश्मीरी लोग स्टेज बनाते थे जिस पर मर्द और औरतें दोनों नाटक खेलते थे । कश्मीर में अच्छे अच्छे ज्योतिषी भी पैदा हुये हैं । तारीख लिखने वाले तो यहां अनगिनत थे । कल्हण पण्डित ने बारहवीं सदी में राज-तरङ्गिणी लिखी है । वह कहता है कि उस ने इतिहास से सम्बन्धित ग्यारह किताबें पढ़ने के बाद

अपनी किताब लिखी थी । संग-तराशी यानी पत्थर के काम में कश्मीरी कारीगर बड़े कुशल थे । मार्तण्ड के खण्डहर आज भी इस बात का सबूत दे रहे हैं । खम्बों की बनावट से मालूम होता है कि शायद उन्होंने कारीगरी यूनानियों से सीखी थी । चरक हकीम जो दुनिया भर में मशहूर है कश्मीरी था । शारदा और बिजबिहाड़ा में यूनिवर्सिटियां कायम थीं । बंगाल, दक्षिण और चीन जैसे मुल्क से भी लोग यहां विद्या पढ़ने के लिये आते थे ।

कश्मीर का व्योपार भी उस ज़माना में बहुत फूला फला । कश्मीर के व्योपारी चीन, अफगानिस्तान, ईरान और ताजिकिस्तान जैसे मुल्कों में जाते थे और उन के साथ तिजारत करते थे ।

सवालात

१. कश्मीर का शानदार ज़माना कब से कब तक रहा ?
२. कश्मीर के मशहूर कवि और नाटक लिखने वाले कौन थे ?
३. कहानियों की पहली किताब किस ने लिखी ?
४. कश्मीर के मशहूर हकीम, चित्रकार और इतिहास लिखने वालों के नाम बताइये ?
५. कश्मीर में कारीगरी और व्योपार का क्या हाल था ?

७. कश्मीर की हालत कैसे बिगड़ी

कश्मीर की हालत दसवीं सदी से लेकर चौदहवीं सदी के मध्य तक खराब रही और इसके बाद संभली भी तो अपनी पुरानी शान को न पा सकी । इस लम्बे समय में कश्मीर में जितने शासक आये वह खुदगर्ज़ , कमज़ोर और निकम्मे साबित

हुये । जागीरदारों ने ज़ोर पकड़ा । यह जागीरदार कभी एक शाहज़ादे की तरफदारी करते थे और कभी दूसरे शाहज़ादे की । यह जागीरदार आपस में भी लड़ते थे । हर जागीरदार की अपनी बाकायदा फौज हुआ करती थी । जागीरदारों ने लोगों और आमतौर पर किसानों के साथ बुरा सलूक बर्ता । यह जागीरदार लूट मार करते थे और दंगा फसाद की आग मुल्क में भड़काते रहे ।

इन जागीरदार फिर्कों में अंगी, तान्त्रे, परे, लोन और डामर फिर्के मशहूर थे । अगर तान्त्रे फिर्का राजा का दोस्त था, तो डामर फिर्का युवराज या बड़े वज़ीर का साथ देता था । इस तरह शाही दरबारों में साज़िशें होती रहीं और सारे वज़ीर मिल जुल कर काम नहीं करते थे । इन बातों से कश्मीर के राजाओं का रोब लोगों की नज़रों में गिर गया । राजे और वज़ीर मन्दिरों की जायदादों के मालिक बन गये । मन्दिरों में जो करोड़ों रुपये का सोने और चांदी का सामान था वह इन लालची राजाओं और वज़ीरों के कब्ज़ा में आ गया ।

इस दौर में दो महारानियां कश्मीर के तख्त पर बैठीं । एक का नाम सुगन्धा रानी था और दूसरी का नाम दिद्दा रानी । यह दोनों रानियां अपने हाथों में ताकत रखना चाहती थीं । मगर आम लोग चाहते थे कि रानियों की जगह राजे हकूमत करें । इस लिये इन रानियों ने वज़ीरों को रिश्वतें देनी शुरू कीं । एक फिर्के को दूसरे फिर्के के खिलाफ उकसाती रहीं ताकि इन की हकूमत कायम रहे ।

इस असहयोग (बेइतिफाकी) और आपसी फूट से लोगों के चरित्र पर बुरा असर पड़ा । शराब पीना, जुआ खेलना आम हुआ । यहां तक कि हर किस्म की इखलाकी गिरावट पैदा हुई और लोग जादू, टोने में यकीन और जन्त्र मन्त्र पर भरोसा करने लगे ।

लोगों ने मज़हब के नेक असूल छोड़ दिये । बुद्ध धर्म में इस की पुरानी सच्चाई और पवित्रता (पाकीज़गी) बाकी न रही । बौद्ध भिक्षु तक बुरे कामों में लग गये थे । हिन्दू धर्म वाले ज्यादातर रस्मों के पाबन्द थे । वह समझते थे कि अगर हम बुरे काम भी करेंगे तो एक या दो मन्त्रों का जाप करने से हमारे पाप धुल जायेंगे । मज़हब से लोगों के दिल साफ हो जाने चाहियें । ज़िन्दगियां पवित्र बननी चाहियें । लेकिन इन दिनों मज़हब (धर्म) पापों और गुनाहों पर पर्दा डालने का एक ज़रिया बन गया था । इसलिये इस का नतीजा यह रहा कि लोगों का चरित्र बिगड़ता ही गया ।

चौदहवीं सदी के शुरू में ज़ुलकदर खां तातारी सत्तर हज़ार की फौज लेकर कश्मीर पर चढ़ आया । वह मौसिम बहार में आया और पतझड़ तक कश्मीर में रहा । उस ने श्रीनगर को आग लगा दी, गांव उजाड़ दिये, हज़ारों आदमियों को मौत के घाट उतारा । वह अपने साथ पच्चास हज़ार बच्चे और औरतें कैदी बना कर ले गया । उस ने कैदियों से वापिस लौटने का आसान रास्ता मालूम किया । कैदियों ने जान बूझ कर एक मुश्किल रास्ते का पता दिया । वह रास्ता खुरी बटपुरा से हो कर जाता था । बानिहाल के दामन में पहुंचते ही सर्द हवा चली और बर्फ गिरी । ज़ुलकदर खां की सारी फौज और कैदी बर्फ के नीचे दब कर मर गये । श्रीनगर दस बारह साल तक उजड़ा रहा । सिर्फ ग्यारह आदमी अपना मकान नये सिरे से तामीर कर सके । इस हमले ने कश्मीर को माली हालत बहुत कमज़ोर कर दी । हकूमत भी कमजोर हो गई ।

इन बिगड़े हुये हालात से एक लद्दाखी शाहज़ादा ने फायदा उठाया और कश्मीर की हकूमत पर कब्ज़ा जमाया । इस शाहज़ादे का नाम रेंचन था । यह शाहज़ादा कई वर्ष

पहले कश्मीर के इलाका लार में बस गया था। उस ने हिन्दुओं से कहा कि मुझे हिन्दू धर्म में दाखिल करो लेकिन उन्होंने नहीं माना। बाद में यह एक मुसलमान सूफी बुलबुल शाह का अनुचर बना और इस ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। इस्लाम कश्मीर में कब और कैसे आया। इस का हाल आप अगले पाठ में पढ़ेंगे।

सवालात

१. कश्मीर की हालत किन सदियों में खराब रही।
२. आम लोगों की इखलाकी हालत इस दौर में कैसी थी?
३. कश्मीर में जागीरदारों के कौन से फिर्के मशहूर थे उन के नाम लिखिए?
४. कौन सी दो महारानियों ने कश्मीर को साज़िशों का अखाड़ा बनाया?
५. इस दौर में लोगों के मज़हबी खयालात किस किस्म के थे?
६. जुलकदर खां के हमले का हाल लिखिए?

८. पैगम्बर इस्लाम

हज़रत मुहम्मद मक्का के मशहूर कबीला कुरैश में पैदा हुए थे। उन के बाप का नाम अब्दुल्ला और दादा का नाम अब्दुल्ल मतलब था जो कुरैश के सरदार थे। जब अब्दुल्ला २४ साल की उमर को पहुंचे तो उनका विवाह हज़रति आमिना से हुआ जो बड़े अच्छे खानदान से थीं। विवाह के कुछ महीने बाद ही अब्दुल्ला व्योपार के लिये एक लम्बे सफर पर गये। रास्ते में बीमार पड़ गये और बच न सके। उन के मरने के

तीन महीने बाद आमिना के हां बेटा पैदा हुआ। अब्दुल्ल मतलब ने अपने पोते का नाम मुहम्मद रखा लेकिन मां उन को अहमद के नाम से पुकारना ज्यादा पसन्द करती थी। हज़रत मुहम्मद को आमिना का लाल भी कहा गया है।

कुरैश में यह रिवाज था कि बच्चों का पालना पोसना मां की जगह दूसरी औरतों को सौंप दिया जाता था। यह औरतें ज्यादातर मक्का के बाहिर रहती थीं क्योंकि मक्का की आबोहवा बच्चों के लिये अच्छी नहीं समझी जाती थी। अभी हज़रत मुहम्मद तीन साल के थे कि उन के सिर से मां का साया भी उठ गया और उन का लालन पालन और देख-भाल का बोझ उन के चच्चा अब्बू तालब के सिर पर पड़ा। अब्बू तालब ने हज़रत मुहम्मद को बड़े लाड प्यार से पाला और बड़ा किया।

बचपन ही से हज़रत मुहम्मद की आदतें बहुत अच्छी थीं। इसलिये हर शख्स उन्हें प्यार की नज़र से देखता था। आप हर एक को मदद देने के लिये तैयार रहते थे। जो कोई भी आप से मिलता आप ही का हो जाता था। हज़रत मुहम्मद हमेशा सच्च बोलते थे और हर काम ईमानदारी से करते थे। इसी वजह से आप 'अमीन' मशहूर थे। आप के बरताव में बड़ी नर्मी थी और बड़ी से बड़ी मुसीबत भी हंसते हुये सह लेते थे। जब आप के नबी होने का ऐलान हुआ तो बहुत से मुखालिफ और दुश्मन पैदा हो गये। उन्हों ने आप को तंग करना शुरू किया। हालात इतने बिगड़ गये कि कोई भी दूसरा इनसान उन्हें सहन नहीं कर सकता था। उस वक्त आप के सच्चे दोस्तों ने आप से कहा कि इन ज़ालिमों के लिये बद्दुआ करें लेकिन आप ने जवाब दिया कि मैं दुनिया में खुदा की रहमत बन कर आया हूं। यह भूले भटके लोग हैं। यह दया और हमदर्दी के योग्य हैं। मैं तो यही प्रार्थना करूंगा कि खुदा

उन को सीधे रास्ते पर लाये ।

हज़रत मुहम्मद ने अपनी ज़िन्दगी का पहला सफर अपने चच्चा अब्बू तालब के साथ दिया और वे शाम के मुल्क तक गये । जब आप जवान हुए और खुद भी व्योपार करने लगे तो यमन और खलीज फारस के मुल्कों तक हो आये । अपने सफर में उन्हों ने बड़ा तजरबा हासिल किया । हर मुल्क के लोग देखे । उन की आदतों और रहने सहने को अच्छी तरह देखा भाला ।

जब आप बीस साल की उमर को पहुंचे तो आप अपने वतन के मामलों में भी दिलचस्पी लेने लगे । आप ने देखा कि ताकतवर लोग कमज़ोरों को सताते हैं । इनसाफ का गला घोंटा जा रहा है । लोगों में तरह तरह की बुराइयां हैं । शराब पीना, जुआ खेलना बुरा नहीं समझा जाता बल्कि इन बुराइयों पर भी लोग घमण्ड करते हैं । इस समय अरब का मुल्क अंधेर गर्दी से गुज़र रहा था । हर कबीले का अलग अलग खुदा था । बुतों की पूजा होती थी । लड़ाई झगड़ा ज़िन्दगी का एक हिस्सा था । हज़रत मुहम्मद को यह बातें बुरी मालूम हुईं । आप को अचम्भा होता था कि एक इनसान अपने ही जैसे दूसरे इनसान पर क्यों ज़ुल्म करता है । आप यह सब कुछ सोचते थे और इन सब बातों का भेद जानना चाहते थे । आप के दिल में यह धुन पैदा हो गई कि किसी सूरत में इन बुराइयों को दूर किया जाये ।

सोच विचार करने के लिये आप ने एक गार में जाकर बैठना शुरू किया जो "गारे हुर्रा" के नाम से मशहूर है । यहां आप महीनों रहे । आप ने ईश्वर से प्रार्थना की कि मुझे ऐसी रोशनी दे जिस से भूले भटके लोगों को रास्ता दिखा सकूं और उन के दिल में उजाला पैदा करूं । आप की प्रार्थना सुनी गई और खुदा के हुक्म से हज़रत मुहम्मद ने दुनिया के

सामने इस्लाम की तालीम रखी ।

इस्लाम चाहता है कि दुनिया के दुःख दूर हों । लोगों को मालूम हो कि उन सब का पैदा करने वाला एक है । उस के सिवा कोई दूसरा नहीं जिस के सामने झुका जाये । बुतों की पूजा करना पाप है । सब एक खुदा के बन्दे हैं और सब आपस में बराबर हैं । कोई किसी से बड़ा नहीं । सब खुदा की दी हुई चीज़ों में बराबर का हिस्सा पाने का अधिकार रखते हैं । जो पाप या बुरे काम करेंगे उन्हें खुदा के सामने जवाब देना होगा । किसी को दुःख देना या किसी का खून बहाना खुदा को पसन्द नहीं । गरीबों की सहायता करना, अतिथि की सेवा करना, हर पैगम्बर को मानना और दूसरे मज़हब के बुज़र्गों को बुरा न कहना अच्छी बातें हैं । हर मुसलमान को चाहिये कि ज़ुल्म के खिलाफ सीना तान कर लड़े और ज़रूरत पड़ने पर अपनी जान की कुर्बानी देदे ।

यह था वह पैगाम जो खुदा का रसूल लोगों के सामने लाया । लेकिन मक्का के रहने वालों ने यह बातें मानने से इनकार किया और कहा कि हम तो वही करेंगे जो हमारे बाप दादा करते आये हैं । कुछ दिनों यह हालत रही । लेकिन जब लोगों ने आप की बातों पर ठण्डे दिल से विचार किया तो उन्हें पता चला कि यह बातें अच्छी हैं और इन से इनकार नहीं किया जा सकता । लोग आप पर ईमान लाये । धीरे धीरे पूरा अरब देश जो अंधेरे में घिरा हुआ था इस्लाम की रोशनी से जगमगा उठा । अरब लोग इस्लाम के पहले सिपाही बने और प्रेम और मुहब्बत का पैगाम ले कर अपने मुल्क से निकले । थोड़े ही दिनों में इस्लाम दुनिया के कोने कोने में पहुंच गया ।

सवालात

१. हज़रत मुहम्मद की ज़िन्दगी का हाल लिखिए ।

२. इस्लाम फैलाने से पहले अरब की क्या हालत थी ?

३. हज़रत मुहम्मद ने दुनिया को क्या पैग़ाम दिया ?

९. कश्मीर में इस्लाम

यह कहना कठिन है कि वह कौन सा वर्ष था जब कश्मीर में इस्लाम आया । किसी तहरीक या मज़हब के फैलने की तारीख नियत नहीं की जा सकती क्योंकि वह यकायक नहीं फैलते बल्कि धीरे धीरे ऐसे हालात पैदा हो जाते हैं कि वह फलने फूलने लगते हैं ।

इनसानियत जब कुचल दी जाती है तो साथ ही उस को उभरने का वक्त भी आ जाता है । कोई न कोई कारण बनता है जिस से लोगों में नई सूझ बूझ पैदा होती है । भटके हुये लोग सीधे रास्ता पर आने लगते हैं । खुदा उन को सीधे रास्ता पर लाने के लिये नबी और पैगम्बर भेजता है । वह बिगड़े हुये हालात को संवारते हैं ।

जब ब्राह्मण अपना असर खो चुके थे तो बुद्ध मत का सिक्का चल पड़ा था । कश्मीरियों ने उस मत की आवभगत की क्योंकि उस से इनसानों को बरावरी का दर्जा मिलता था । यह वह हक था जिसे ब्राह्मणों ने देने से इनकार किया था । उस के बाद शंकराचार्य आये । इन्हों ने हिन्दू धर्म को इस के नये रूप में लोगों के सामने रखा और लोगों को बताया कि बुद्धमत और हिन्दू धर्म में कोई बड़ा फर्क नहीं । बुद्धमत

ने जो बातें बताई हैं वह हिन्दू धर्म में भी मिल सकती हैं। कश्मीर के लोगों ने उन बातों को समझा, जांचा और उन की सच्चाई के सामने झुक गये। इस लिए वह बहुत दिनों तक शंकराचार्य की तालीम पर चलते रहे।

होते होते उन के बताये हुए असूल लोगों के मन से मिट गये और लोग फिर से पुरानी और बुरी रस्मों में फंस गये। हिन्दू राजे ऐश करने लगे। उन की देखा देखी अमीरों और वज़ीरों का चलन भी बिगड़ गया। ब्राह्मण बड़े लालची हो गये और हर ताकत वाला कमज़ोर को दबाने लगा। मुल्क की हालत खराब देख कर कन्धार की फौजों का सेनापति ज़ुलकदर खां कश्मीर पर चढ़ आया। लूट मार का बाज़ार गर्म हुआ और वह यहां से हज़ारों लोगों को गुलाम बना कर ले गया। ज़ुलकदर खां घर वापस नहीं पहुंचा, रास्ता ही में बर्फ के नीचे दब कर मर गया। मगर कश्मीर की हालत और खराब हो गई।

इसी धमा चौकड़ी में तिब्बत का रहने वाला रेंचन कश्मीर का तख्त सम्भाल बैठा। उस ने देखा कि यहां के लोग दीन धर्म पर नहीं चलते। कहने को तो शिव जी की पूजा करते हैं मगर असल में हर आदमी का नया देवता और नया मत हो चुका है। रेंचन को इस्लाम से लगाव हो गया। इस की एक वजह यह भी बताई जाती है कि ब्राह्मणों ने उसे हिन्दू बनाने से इनकार कर दिया था। उन्हीं दिनों अब्दुल रहमान बुलबुल शाह साहिब यहां आये। वह बड़े नेक और सूफी आदमी थे। उन के हाथ पर रेंचन ने इस्लाम स्वीकार किया। बादशाह की देखा देखी उस के अफसर भी मुसलमान हो गये। धीरे धीरे और भी मुसलमान हुये। लेकिन रेंचन के मरते ही उन में इस्लाम का जोश कम हो गया।

कुछ दिनों बाद १३३९ ई० में जब शाहमीर, सुलतान शमसुद्दीन के नाम से तख्त पर बैठा तो उसने लोगों को इस्लाम स्वीकार करने के लिये फिर कहा। मगर सुलतान को राज्य के काम से इतनी फुरसत न मिली कि वह इस्लाम की शिक्षा लोगों तक पहुंचाने का कोई अच्छा प्रवन्ध करता। फिर भी जो लोग अब मुसलमान हुये वह इस्लाम की शिक्षा को समझ चुके थे। इस लिये उन्होंने फिर इस मज़हब को नहीं छोड़ा।

जब सुलतान कुतुबुद्दीन कश्मीर के तख्त पर बैठा तो उन दिनों हज़रत अमीर कबीर मीर सय्यद अली हमदानी कश्मीर में आये। उन्होंने महसूस किया कि लोगों में इस्लाम की तालीम फैलाने की पूरी कोशिश नहीं की गई है, उन का ख्याल था कि अगर यहां मुसलमान हैं तो सिर्फ नाम को। उन्होंने लोगों में इस्लामी तालीम को फैलाया। मीर सय्यद अली हमदानी के साथ कई और सय्यद खानदान भी आये थे। उन से भी लोगों ने फायदा उठाया और बहुत से लोग मुसलमान हुये। सुलतान कुतुबुद्दीन हर मज़हब के लोगों का खयाल रखता था। उस ने राज्य के काम में मज़हब को दाखिल न होने दिया। मगर सूफी बज़ुर्गों की कोशिश से इस्लाम दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करता गया और कश्मीरियों का एक बहुत हिस्सा मुसलमान हो गया। एक कश्मीरी ने इस्लाम की शिक्षा इतनी अच्छी तरह हासिल कर ली थी कि बड़े बड़े विद्वान उस का मान करते थे। इस से पता चलता है कि कश्मीरी थोड़े ही दिनों में इस्लाम की तालीम को अच्छी तरह समझने लगे थे। इसीलिये इस्लाम यहां सफल हुआ।

फिर सुलतान सिकन्दर यहां का बादशाह हुआ। उस की मां बड़ी समझदार थी। उस ने सुलतान सिकन्दर को लोगों की सेवा करना सिखाया। इस का नतीजा यह निकला कि सुलतान सिकन्दर ने इल्म और हुनर वालों का बड़ा खयाल

रखा। दूर दूर से लोग इस के दरबार में आये। अमीर कबीर सय्यद अली हमदानी के नौजवान बेटे सय्यद मीर हमदानी भी यहां आये और उन के कारण इस्लाम और भी फैला। हज़ारों लोग मुसलमान हुए। उन में कश्मीरी पण्डित सहभट्ट बहुत मशहूर था।

सहभट्ट बड़ा होशियार और चालाक था। मगर दूसरों से जलता था। न मालूम क्यों उसे अपने भाई बंधुओं से बैर था। इसी लिये वह भी उसे अच्छा नहीं समझते थे। सहभट्ट अपनी सूझ बूझ की वजह से जल्द ही सुलतान का वज़ीर हो गया। उस के दिल में बदला लेने की ज्वाला दहक रही थी। आहिस्ता आहिस्ता उस ने सुलतान सिकन्दर को हिन्दुओं के खिलाफ भड़काया। पहले पहल तो सुलतान ने उस की बात नहीं सुनी। अगर वह सहभट्ट की बातों पर ध्यान देता भी था तो उस की मां उसे समझा बुझा कर रोक देती। मगर जब सुलतान की मां मर गई तो सहभट्ट को मौका मिला और उस ने अपनी कोशिश तेज़ कर दी। हिन्दुओं को उस शख्स से बड़ा भय पैदा हुआ। इस लिये उन्होंने उस के खिलाफ आवाज़ उठाई। मगर सहभट्ट ने सुलतान को भड़काया कि असल में हिन्दू लोग उसे तख्त से उतारना चाहते हैं। इसलिये सुलतान को चाहिये कि वह हिन्दुओं को सज़ा दे। तब सुलतान ने सहभट्ट को इजाज़त दे दी कि वह हिन्दुओं के साथ जैसा बरताव चाहे करे। फिर तो उस आदमी ने हिन्दुओं को इतना परेशान किया कि हज़ारों आदमियों ने घर बार छोड़ दिया। सहभट्ट ने हिन्दुओं पर जज़िया टैक्स लगाया। उस ने मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट किया और यह सब कुछ सुलतान के नाम पर हुआ। इसी लिये सुलतान का नाम सिकन्दर बुतशिकन पड़ा यानी बुत तोड़ने वाला सिकन्दर।

सय्यद मीर मुहम्मद हमदानी राज्य के काम में बोलना

पसन्द नहीं करते थे । मगर यह ज़ुल्म उन से भी न देखा गया और उन्होंने सुलतान से कहा कि इस्लाम इन चीज़ों की आज्ञा नहीं देता । इस्लाम तो सलामती और शान्ति का दूसरा नाम है । जो कुछ हो रहा है वह अच्छा नहीं बल्कि गुनाह और पाप है और तुम्हें खुदा के सामने जवाब देना होगा । तुम्हें चाहिये कि लोगों के दिलों में घर पैदा करो । इस्लाम को लोगों के सामने अच्छी तरह रखो ताकि लोग अपने आप इस की तरफ खिंच कर आयें । इस्लाम तो लड़ाई में भी यह इजाज़त नहीं देता कि दुश्मन पर पहले हमला करो । अगर तलवार और ताकत से इस्लाम का सिक्का बिठाया तो वह ज्यादा देर नहीं रहेगा । ताकत हमेशा रहने वाली चीज़ नहीं । सुलतान के दिल पर इस उपदेश का बड़ा असर हुआ । लेकिन सहभट्ट उस वक्त तक अपने दिल की भड़ास निकाल चुका था ।

सुलतान सिकन्दर का लड़का जो ज़ैन-उल-आब्दीन और बडशाह कहलाया, हिन्दुओं का बहुत खयाल रखता था । उस ने सहभट्ट के लगाये हुये ज़ख्म पर प्यार का मरहम रखा और हिन्दुओं का दिल मोह लिया । वह सुल्तान सिकन्दर के ज़ुल्म भूल गये । जो लोग घर बार छोड़ कर चले गये थे वह फिर वापस आ गये । ज़ैन-उल-आब्दीन के समय में हिन्दू मुसलमान घुल मिल गये और भाइयों की तरह रहने लगे । कश्मीर में फिर प्यार के वार फूटे जिस पर कश्मीर को हमेशा फ़ख़र रहेगा ।

सवालात

१. कश्मीर में पहले पहल इस्लाम कैसे फैला ?
२. हज़रत अमीर कबीर मीर सय्यद अली हमदानी ने कश्मीर में इस्लाम के लिये क्या किया ?
३. सहभट्ट कौन था और उस ने क्या किया ?

१०. ज़ैन-उल-आब्दीन

(सन् १४२१ ई० से १४७२ ई० तक)

शाही खां जो बाद में ज़ैन-उल-आब्दीन के नाम से तख्त पर बैठा, शाहमीरी खानदान से था। यह खानदान बहुत दिनों से कश्मीर में राज्य करता चला आ रहा था। शाही खां से पहले उस का भाई अली शाह तख्त पर बैठा। उस ने शाही खां को अपना वज़ीर बनाया। लेकिन असल इख्तियार पण्डित सहभट्ट के हाथ में था, जिस के ज़ुल्म से लोग बहुत परेशान थे। शाही खां को राज्य का यह ढंग पसन्द नहीं आया और उस ने अपने भाई के खिलाफ आवाज़ उठाई। हकूमत अली शाह की थी मगर लोग शाही खां के साथ थे। क्योंकि वह उन के साथ हमदर्दी करता था। जब दोनों भाईयों में लड़ाई हुई तो शाही खां जीत गया और अली शाह को भागना पड़ा और शाही खां ज़ैन-उल-आब्दीन के नाम से तख्त पर बैठा।

ज़ैन-उल-आब्दीन वही बादशाह है जिसे कश्मीर के लोग बड़े प्यार से बडशाह यानी बड़ा बादशाह कहते हैं। सुलतान ज़ैन-उल-आब्दीन बड़ा बहादुर, नेक, इनसाफ करने वाला, लोगों का हमदर्द और बड़ी सूझ बूझ वाला बादशाह था। उस ने राज्य सम्भालते ही पिछले तमाम ऐसे हुक्म खत्म कर दिये जो लोगों के फायदे के नहीं थे। सब कैदी छोड़ दिये। ऐसे लगान जो ठीक नहीं थे माफ कर दिये। ऐसे हुक्मों को ताम्बे की तख्तियों पर खुदवा कर जगह जगह लटका दिया गया ताकि सरकारी मुलाज़िम लोगों के अनजान होने से फायदा न उठा सकें।

सुलतान ने लोगों को समझाया कि चोरी और लूट मार से वचें और व्योपार और काम धन्धे की तरफ ध्यान दें। इस के लिये सुल्तान ने उन को हर किस्म की सुविधा देने की प्रतिज्ञा की। सुल्तान ने तोलने के वज़न और पैमाने खुद परखे और उन को देश भर में जारी किया। पहले के तमाम सिक्के जो खोटे थे और ज्यादा इस्तेमाल की वजह से अपनी असली कीमत खो चुके थे बंद कर दिये गये। उन की जगह नये सिक्के चलाये गये। कश्मीर में आना जाना आसान नहीं था क्योंकि रास्ते कठिन थे, इस लिये वाहिर से बहुत कम चीज़ें आती थीं और जो आती थीं व्योपारी उन की मनमानी कीमत लेते थे। सुल्तान ने वाहिर से आने वाली चीज़ों की कीमतें मुकर्रर कर दीं और जो व्योपारी ज्यादा कीमत लेता उसे सज़ा मिलती। स्वदेशी माल की कीमतें मुकर्रर कर दी गईं। इन तमाम वातों से व्योपार में वहुत तरक्की हुई और थोड़े ही दिनों में लोग खुशहाल हो गये।

सुल्तान इन्साफ पसन्द था इस लिये उस ने अदालत की तरफ खास ध्यान दिया। वह वड़ा नेक और दयालु था मगर इन्साफ में कड़ा और बेलाग था। वह उलझे हुए मामलों में अपनी सूझ बूझ से ऐसे फैसले देता था कि लोग हैरान रह जाते। वह मुलज़िम जो सजा पाते थे वह भी उस के फैसले के खिलाफ शिकायत नहीं कर सकते थे। सुल्तान ने अपनी अदालतें नये तरीकों पर बनाईं। चोरियां रोकने के लिये उस ने हुक्म दे रखा था कि जिस इलाका में चोरी हो वहां के लोग खुद चोर पकड़ कर अदालत में लायें। अगर ऐसा नहीं करेंगे तो खुद चोर की सज़ा पायेंगे। एक सौ साल वाद शेर शाह सूरी ने यह तरीके हिन्दोस्तान में अपनाये थे। इन की वजह से शेरशाह भी वहुत मशहूर हुआ था।

जुर्म करने वाले जब जेल से निकलते थे तो बुरी आदत

इन के रोएं रोएं में घुल जाती थी और बाहिर निकल कर वह फिर जुर्म करते थे। सुल्तान ने कैदियों के सुधार के लिये जेल में कारीगरी और दस्तकारी का काम शुरू कराया। कैदियों को जेल में गया हुनर और काम सिखाया जाता था। जब वह जेल से निकलते तो काम के आदमी और अच्छे शहरी बनते। इस तरह सुल्तान ने उन लोगों का सुधार किया जो जुर्म करना अपना पेशा समझते थे। बहुत से कैदी जेल से निकल कर बड़े बड़े काम करते और अपने देश के लोगों को फायदा पहुंचाते थे। सुल्तान ज़ैन-उल-आब्दीन ने कैदियों के सुधार के लिये जो पन्द्रहवीं सदी में किया था वह इंगलिस्तान जैसे मुल्क ने उन्नीसवीं सदी में शुरू किया। इस से पता चलता है कि सुल्तान ज़ैन-उल-आब्दीन कितना समझदार और अच्छा बादशाह था।

सुल्तान ज़ैन-उल-आब्दीन के ज़माने में सिर्फ सूझ बूझ वाले लायक लोगों को सरकारी पद मिलते थे। पद देते समय धर्म और जन्म का ख्याल नहीं किया जाता था। सुल्तान का बड़ा वज़ीर एक वक्त तिलक आचार्य था जो बुद्ध मत का मानने वाला था। उस के मरने के बाद दरिया खां बड़े वज़ीर बने। पण्डित श्री भट्ट हकीम खज़ाने के बड़े अफसर और जज थे।

सुल्तान बड़ा आज़ाद खयाल था। इस लिए वह किसी खास फिर्के या रहन सहन की तरफ नहीं झुका। वह सब पर मेहरबान था। उस के दरवाज़े हर एक के लिए खुले रहते थे। हिन्दुओं का भी उस ने बहुत खयाल किया। उन्हें इतनी आसानियां मिलीं कि हिन्दू राजाओं के वक्त में भी नहीं मिली थीं। कुछ इतिहासकारों ने उस की वजह बताने की कोशिश की है। जैसे कहा जाता है कि श्री भट्ट हकीम ने बादशाह को किसी भयानक बीमारी से छुटकारा दिला कर हिन्दुओं के

लिए आसानियां हासिल की थी । अगर ऐसा हुआ भी होता तो बादशाह हिन्दुओं का टैक्स यानी जज़िया माफ कर देता या ज्यादा से ज्यादा उन पर नौकरी के दरवाज़े खोल देता। मगर सुल्तान ने इस से कहीं बढ़ चढ़ कर हिन्दुओं का खयाल रखा। इस से मालूम होता है कि सुल्तान तमाम कश्मीरियों को दीन धर्म का फर्क किये बिना अपनी प्रजा को समृद्ध और खुशहाल देखना चाहता था । उस ने तमाम मज़हब वालों से एक जैसा सलूक किया । सुल्तान सिकन्दर और अलीशाह के ज़माने में हिन्दुओं के साथ जो ज्यादती हुई थी, ज़ैन-उल-आब्दीन इसे खत्म करना चाहता था । उस नें उजड़े हुये लोगों को जागीरें दीं । ओहृदे दिये और जो लोग घर बार छोड़ कर चले गये थे उन्हें वापस बुलाया । हिन्दुओं की मज़हबी रस्में जो बन्द हो चुकी थीं उन्हें फिर से जारी कराया । कहा जाता है कि उस ने हिन्दुओं से लिखवा लिया था कि वह अपने धर्म के खिलाफ कोई काम नहीं करेंगे और अपने आप को खुलम खुला हिन्दू कहेंगे । सुल्तान हिन्दुओं के तीर्थों और मेलों में खुद जाया करता था । गिरे हुये मन्दिर उस ने नये सिरे से बनवा दिये । उस के ज़माना में एक ब्राह्मण शिक्षा-मन्त्री बनाया गया । मन्दिरों का खर्च पूरा करने के लिये बड़ी बड़ी जागीरें दी गईं और हर मन्दिर के साथ एक पाठशाला भी बनवा दी गई जिस में हिन्दू विद्यार्थी बगैर रोक टोक पढ़ लिख सकते थे । हिन्दुओं को मस्जिदों में जाने की इजाज़त थी। हिन्दुओं का खयाल कर के गौ हत्या भी बन्द कर दी गई थी। सुल्तान ने वेदों और शास्त्रों का फारसी में तर्जमा करवाया। उन किताबों को मुसलमानों ने भी पढ़ा । इस तरह हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के खयालों और रहन सहन को समझने लगे । उन के दिलों का आपस का वैर दूर हो गया । यह भाई चारा आज तक मौजूद है । नैशनल कान्फ्रेंस ने हिन्दू मुस्लिम सिक्ख एकता का जो नारा बलन्द किया है वह हमारी पुरानी रीत है ।

सुल्तान ज़ैन-उल-आब्दीन को सैर सपाटे का बड़ा शौक था इसलिये वह राजधानी के दूर के इलाकों में काफी समय गुज़ारता था । जहां भी आबोहवा अच्छी देखता वहां बारा-दरियां और बाग बनवाता । ऐसी जगहों में से ज़ैनाडब, ज़ैना पुर, ज़ैना कोट, जैना कदल, ज़ैना बाज़ार और ज़ैना लैंक बहुत मशहूर हैं । झील वुल्लर के पश्चिमी किनारे पर पानी की कमी की वजह से कुछ ज़मीन बंजर पड़ी थी, उस की सिंचाई के लिये सुल्तान ने नहरें खुदवाईं और उस जगह का नाम ज़ैनगीर रखा और उस बंजर इलाके को आबाद कर के उस की तमाम आमदनी विद्वानों पर खर्च करने के लिये अलग कर दी गई ।

कश्मीर में ऐसी बहुत सी ज़मीन है जहां खेती बारिश के पानी पर ही होती है । यहां पैदावार कम होती थी, कहीं कहीं तो पैदावार होती ही नहीं थी । उन इलाकों की सिंचाई के लिये सुल्तान ने नहरें खुदवाईं । जिन की संख्या आठ थी । अब भी कहीं कहीं उन के निशान मिलते हैं ।

सुल्तान ज़ैन-उल-आब्दीन ने मुल्क में सिर्फ नहरें, बाग और महल ही नहीं बनवाये बल्कि मुल्क की सन्नत को तरक्की दने का प्रबन्ध भी किया । उस ने दूर दूर से कारीगर बुलवाये और कश्मीरियों ने उन कारीगरों से बहुत जल्द काम सीख लिया और वह अपनी कला के लिये दुनिया भर में मशहूर हो गये । आज भी दुनिया कश्मीर की कारीगरी की तारीफ करती है । कालीन और कागज़ बनाने और काढ़ने के काम में कश्मीर के कारीगरों ने बड़ी जानकारी हासिल की । ज़ैन-उल-आब्दीन के वक्त में रेशम की पैदावार भी बढ़ गई थी । उस को तरक्की देने के लिये और रेशमी कपड़ा बनाने के लिये खुरासान से कारीगर बुलवाये गये । सुल्तान के ज़माने में ही यहां के कुछ कारीगरों ने पहली बार एक तोप तय्यार की । यह तोप बादल की तरह गरजती थी ।

ज़ैन-उल-आब्दीन ने जिस शानदार तरीका से राज्य किया उस के लिये बड़े खज़ाने की ज़रूरत थी इस लिए कश्मीर की माली हालत को भी संवारना ज़रूरी था । सुल्तान ने कानें खुदवाईं । लद्दाख के दरियाओं की रेत से सोना निकलवाया । सूखी ज़मीन को सींच कर खेती को बढ़ावा दिया । ज़मीन का कोई हिस्सा बेकार नहीं रहा । माली हालत अच्छी हुई तो खज़ाना में रुपया आया और सुल्तान आसानी के साथ राजको के तमाम काम पूरे कर सका ।

सुल्तान ने कश्मीर के बाहिर के इलाकों को भी अपने राज्य में मिलाया । उस ने सिन्ध और तिब्बत फतह किया और गंधार, जम्मू और राजौरी के राजाओं पर अपनी हकूमत का सिक्का जमाया । सुल्तान बहलोल लोधी और गुजरात के सुल्तान महमूद से सुल्तान ज़ैन-उल-आब्दीन की दोस्ती थी । पड़ोसी मुल्कों के बादशाह सुल्तान ज़ैन-उल-आब्दीन की दोस्ती पर बड़ा मान करते थे । ऐसे अच्छे और बड़े बादशाह को अगर कश्मीरी प्यार और इज्ज़त के खयाल से बड़शाह कहते हैं तो कोई अचम्भे की बात नहीं ।

सवालात

१. ज़ैन-उल-आब्दीन का असली नाम क्या था ?

२. ज़ैन-उल-आब्दीन को बडशाह क्यों कहते हैं ?

३. उसके ज़माने में राज्य का इन्तिज़ाम कैसा था ?

४. ज़ैन-उल-आब्दीन ने राज्य करते वक्त किन चीज़ों का खयाल रखा ?

५. ज़ैन-उल-आब्दीन के नाम से कौन कौन सी चीज़ें मशहूर हैं ?

११. कश्मीर की आज़ादी की शाम

यूसुफ शाह चक को कश्मीर का आखिरी स्वतंत्र बादशाह कहते हैं। उस ने अपना बहुत सा समय रंग रलियों में अकारथ किया था। जिस बादशाह के दरबार में राग रंग के सिवाय कुछ न हो भला उस के मुल्क का इन्तज़ाम अच्छा कैसे हो सकता है। मुल्क में गड़बड़ ज़रूर होगी और दूसरे मुल्कों के बादशाह उस से फायदा भी उठा सकेंगे। कश्मीर में भी ऐसा ही हुआ।

यूसुफ शाह चक की मलिका हब्बा खातून बड़ी सूझ बूझ की और दिल वाली औरत थी। वह राज्य का काम भी अच्छी तरह समझती थी। हिन्दोस्तान के इतिहास में मलिका नूरजहां मशहूर है, हब्बा खातून भी नूरजहां की तरह राज-काज में दिलचस्पी लेती थी और उस ने कश्मीर के लिए बहुत कुछ किया है। वह बादशाह को हमेशा याद दिलाती रहती थी कि उसे मुल्क का अच्छा इन्तिज़ाम करना चाहिये। वह किसान की लड़की थी। उसे प्रजा का बहुत खयाल था। लेकिन यूसुफ शाह चक को राग रंग से छुट्टी नहीं मिलती थी। वह मुल्क की भलाई के लिए कुछ न कर सका।

जब बादशाह के वज़ीर मुहम्मद भट्ट ने देखा कि बादशाह राज्य के कामों की परवाह नहीं करता तो वह बादशाह से बिगड़ गया। उस ने बहुत से बड़े २ आदमियों को अपनी तरफ मिला लिया। एक और आदमी अब्दाल भट्ट था, उसे मुहम्मद भट्ट से दुश्मनी थी। इस लिये अब्दाल भट्ट ने बादशाह और

वज़ीर दोनों के खिलाफ साज़िश शुरु कर दी। यह खुद बादशाह बनना चाहता था। आखिर अपने साथियों की मदद से उस ने खुलमखुला बगावत का झण्डा उठा लिया। उस ने दरिया का पुल तोड़ दिया ताकि शाही फौज फौरन उस पर हमला न कर सके।

उस ज़माने में मुबारक खां नामी एक सय्यद जो यूसुफ शाह चक की भलाई चाहता था और कश्मीर की सियासत को अच्छी तरह समझता था, बादशाह की रंग रलियां देख कर दरबार से अलग ही रहता था। लेकिन जब उसे मुहम्मद भट्ट और अब्दाल भट्ट की साज़िशों का पता चला तो उस ने उन दोनों को गद्दारी करने से मना किया। उस ने बादशाह के पास भी अपने एक खास आदमी से कहलवाया कि बादशाह हकूमत के कामों में ज्यादा दिलचस्पी ले और मुहम्मद भट्ट और अब्दाल भट्ट को समझा बुझा कर बगावत से बाज़ रखे वरना तख्त की खैर नहीं।

बादशाह ने मुबारक खां का यह संदेश पसन्द नहीं किया। बल्कि उस का उल्टा मतलब समझा। उस की बात पर ध्यान देने की जगह बादशाह ने मुबारक खां को हुक्म भेजा कि "अच्छा होगा कि एक दिन के अन्दर २ सब बागी पकड़ कर मेरे सामने लाओ, वरना तुम्हारी खैर नहीं।" सय्यद मुबारक यह सुन कर आग बगोला हो गया और उस ने अपने बचाव के लिये शाही फौज के मुकाबला पर ईदगाह श्रीनगर के सामने अपनी फौज सजा दी। शाही फौज को हार हुई और बादशाह ने सुलह के लिये हाथ फैलाये। मगर मुबारक खां ने न माना। बादशाह जान बचाने के लिये पहाड़ों में छुप गया और मुबारक खां ने राज्य का काम सम्भाला। यूसुफ शाह के घमण्डी चक सरदारों ने हथियार डाल दिये और कश्मीर में कुछ दिनों के लिये अमनो अमान कायम हुआ।

मगर थोड़े ही दिनों बाद मुहम्मद भट्ट, अब्दाल भट्ट और चक सरदारों की साज़िशों की वजह से मुबारक खां को तख्त से उतरना पड़ा। उस की जगह यूसुफ शाह चक का चच्चा ज़ाद भाई लोहर चक कश्मीर के तख्त पर बैठा। यूसुफ शाह चक ने पहाड़ों से निकल कर फिर लड़ाई शुरू की और बड़ी मार काट के बाद वह दोबारा कश्मीर का बादशाह बना।

यह सब मुसीबतें झेलने के बाद भी यूसुफ शाह का चलन न बदला। उस की रंग रलियां जारी रहीं। मुल्क की खराब हालत देख कर कुछ बड़े लोग इतना तंग आये कि वह अकबर बादशाह के पास गये और उस को कश्मीर फतह करने पर आमादा किया। अकबर मान गया। उस ने फौज कशी की और चालबाज़ी इस्तेमाल कर के यूसुफ शाह चक को पकड़वा लिया। इस तरह कश्मीर पर अकबर का कब्ज़ा हो गया और कश्मीरी बादशाहों की खुदमुख्तारी खत्म हुई।

सवालात

१. यूसुफ शाह चक कैसा बादशाह था?

२ हब्बा खातून को नूरजहां जैसी मलिका क्यों कहते हैं?

३. यसुफ शाह चक के वज़ीर और सरदार क्यों बागी हुये?

४. अकबर ने कश्मीर पर कैसे कब्ज़ा किया?

१२. गुरु नानक कश्मीर में

आज से कोई साढ़े चार सौ वर्ष पहले एक बहुत बड़े बज़ुर्ग गुज़रे हैं। उन का नाम नानक था। उन से सिक्ख धर्म शुरू हुआ। उन्हों ने उम्र भर लोगों को अच्छी बातें बताईं और उन को सच्च और सुख का रास्ता दिखाया। वह सब लोगों को दुःख दर्द और मुसीबत से बचाना चाहते थे और हिन्दू मुसलमान दोनों को एक जैसा समझते थे। वह हमेशा यही कहते थे कि हिन्दू, मुसलमान एक ही शरीर की दो आंखें हैं इन का जुदा समझना गलती है। उन की यह बात हिन्दू और मुसलमान दोनों को इतनी अच्छी लगी कि दोनों उन को अपना समझने लगे। यह भी मशहूर है कि जब गुरु नानक इस दुनिया से गुज़र गये तो हिन्दुओं ने कहा कि यह हमारे बज़ुर्ग थे, हम इन के शरीर को हिन्दू रीति के अनुसार जलायेंगे, मुसलमानों ने कहा कि यह हमारे बज़ुर्ग थे हम इन के जिस्म को दफ़न करेंगे। इस से श्री गुरु नानक की बड़ाई का पता चलता है। आखिर रावी के किनारे करतार पुर में एक गुरु-द्वारा बना जिस के नीचे समाधि और कबर दोनों बनाई गईं। हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख सब उस जगह को पवित्र समझते हैं।

गुरु नानक पंजाब में पैदा हुये थे। लेकिन उन्हों ने आयु का बड़ा हिस्सा पंजाब से बाहिर दूसरे मुल्कों और सूबों में गुज़ारा और मुल्क के कोने कोने में भाई चारे का संदेश पहुंचाया। बाबा नानक ने हिन्दोस्तान की हालत देखी थी। पुरानी बादशाहियां खत्म हो चुकी थीं और छोटे छोटे राजाओं

और नवाबों ने घर घर राज बना रखे थे । लोगों को सताना और उन पर ज़ुल्म करना उन लोगों के लिये मामूली बातें थीं ।

बाबर जिस ने मुगल खानदान की सल्तनत शुरू की अभी हिन्दोस्तान में आया ही था और अमन करने की कोशिश कर रहा था । मगर मुल्क की हालत अच्छी नहीं थी । बाबा नानक भाई की जंग और आपस का झगड़ा देख कर बहुत दु:खी हुए । उन्हों ने मुल्क की हालत सुधारने का पक्का इरादा किया । गुरु नानक ने इस बात का प्रचार किया कि शान्ति और प्रेम का रास्ता ही सच्चा रास्ता है ।

जिन लोगों ने गुरु नानक के उपदेश को माना वह सिक्ख कहलाये । गुरु नानक एक फकीर की सी ज़िन्दगी बसर करते थे । वह जगह जगह घूमते रहे और जिस जगह भी खुदा का नाम लिया जाता वह उस जगह की इज्ज़त करते । वह मक्का शरीफ भी गये जहां काबा है और बनारस और हरिद्वार भी गये जो हिन्दुओं के पवित्र स्थान हैं । उन्हों ने बुद्ध मत के मानने वालों से मिलने के लिये तिब्बत का भी सफर किया । तिब्बत को जाते हुये गुरु नानक कश्मीर भी आये ।

इतिहास से पता चलता है कि कश्मीर में बाबा नानक की बड़ी आवभगत हुई । हिन्दू मुसलमान एकता कश्मीर की पुरानी रीत थी इस लिये कश्मीर में गुरु नानक की शिक्षा पसन्द की गई तो कोई अचम्भा नहीं । बाद में हिन्दू मुसलमान और सिक्खों ने भाई भाई की तरह रह कर यह साबित कर दिया कि वह गुरु नानक जी का उपदेश नहीं भूले हैं ।

सवालात

१. गुरु नानक देव कहां पैदा हुये और कहां कहां गये ?
२. गुरु नानक जी ने क्या शिक्षा दी है ?
३. हिन्दू और मुसलमान सब उन्हें क्यों प्यार करते थे ?
४. कश्मीर ने गुरु नानक से क्या लाभ उठाया ?

१३. मिर्ज़ा हैदर काश्गरी

चार सौ साल से कुछ दिन ज्यादा हुये कि बीच एशिया से एक और कौम आई जिस ने हिन्दोस्तान पर हमला किया। उस कौम को मुगल कहते हैं। जो लोग हिन्दोस्तान आये उन का सरदार बाबर था। वह बहुत बहादुर आदमी था। बाबर ने लाहौर जीतने के बाद फौरन अपनी फौज कश्मीर भेजी। उस वक्त मलिक काज़ी चक कश्मीर का बादशाह था। मुगलों की फौज कश्मीरी फौज से हार कर भिम्बर से वापस चली गई।

उस हार से मुगलों की हिम्मत नहीं टूटी। बाबर के बाद उस का बेटा हुमायूं तख्त पर बैठा। उस ने तीस हज़ार सवारों की एक फौज कश्मीर फतह करने के लिये भेजी। उस फौज का सरदार हुमायूं का भाई मिर्ज़ा कामरान था। मिर्ज़ा काम-रान ने खुद नौशहरा में डेरा डाला और फौज को एक दूसरे सरदार की कमान में कश्मीर भेजा। उस समय कश्मीर का बादशाह सुल्तान मुहम्मद शाह था। उस ने अपने अमीरों समेत मुगल फौज का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया। घमसान की लड़ाई हुई और मुगल फौज हार कर हिन्दोस्तान लौट गई।

जब हुमायूं शेरशाह सूरी से हार कर दरिया चिनाब के किनारे ठहरा था तो उसे बहुत से कश्मीरी मिले। यह लोग कश्मीर के बादशाह के खिलाफ थे। उन्हों ने हुमायूं को कश्मीर फतह करने के लिए कहा। उस समय हुमायूं अपनी मुश्किलों में घिरा हुआ था और खुद कश्मीर नहीं जा सकता था। इस लिये मिर्ज़ा हैदर कश्मीर फतह करने के लिये मुकर्रर

किया गया । मिर्ज़ा हैदर बावर की मासी का लड़का था । वह एक बहुत बड़ी फौज ले कर कश्मीर चला आया । कश्मीर का बादशाह हार कर हिन्दोस्तान भाग गया ।

मिर्ज़ा हैदर ने मुल्क की बाग डोर सम्भाल कर नाज़ुक शाह के सिर पर ताज रखा । नाज़ुक शाह सिर्फ कहने को बादशाह था । हकूमत असल में मिर्ज़ा हैदर के हाथ में थी । मिर्ज़ा ने अपने अच्छे बरताव से अमीरों और जनता दोनों के दिल मोह लिये । जिस तरह मुसलमान उस से खुश थे उसी तरह हिन्दू भी उस के बरताव से खुश थे । मिर्ज़ा हैदर ने तमाम बागियों का खातिमा कर के मुल्क में शान्ति कायम की । मुहम्मद-उल-दीन फोक ने कश्मीर के इतिहास में लिखा है कि "मुल्क में खुशहाली थी । लोग सन्नत और हरफत के काम में लगाये गये । दस्तकारी का सामान किया गया । मुल्क में नई नई सन्नत और कारीगरी का रिवाज हुआ । किस्म किस्म के ताक, दरवाज़े, दरीचे, तकियेदार पिंजरे कश्मीर में बनने लगे । मिर्ज़ा हैदर ने दूर दूर के मुल्कों से उस्ताद और कारीगर बुलवाये जो कि अलग अलग सन्नतों के माहिर थे ।"

मिर्ज़ा हैदर आलिमों और कारीगरों की बड़ी इज्ज़त करता था । वह बहुत सारा समय कवियों और पढ़े लिखे लोगों के बीच गुज़ारता था । मिर्ज़ा ने तारीख रशीदी लिखी है और उस में कश्मीर का जो हाल लिखा है उस का मौलवी हश्मत अल्ला ने जम्मू व कश्मीर के इतिहास में इस तरह वर्णन किया है :—

"गर्मी के मौसिम में हवा बड़ी सुहावनी होती है । पंखे की भी ज़रूरत नहीं होती । ठंडी हवा हमेशा चलती रहती है जिस से जी खुश होता है । जाड़े की सर्दी भी ज्यादा सख्त नहीं होती । बर्फ काफी पड़ती है फिर भी पोस्तीन की ज़रूरत नहीं होती लेकिन आग तापने से जी उचाट नहीं होता ।

शहर में शहर के आस पास बहुत सी शानदार इमारतें हैं । कई तो पांच मन्ज़िल की हैं । हर एक मन्ज़िल में कमरे, पिंजरे, अयवान और गरफे (बुखारचे) बनाये जाते हैं । गरफे बाहिर निकले हुए होते हैं और बड़े भले मालूम होते हैं । बाज़ारों, सड़कों और शहर के कूचों में गढ़े हुये पत्थरों का फर्श है । फलों में नाशपाती, शहतूत, गिलास और दूसरे मेवे पैदा होते हैं । सेब बहुत अच्छा होता है । कश्मीर में तूत बहुत हैं । उस के पत्तों पर रेशम के कीड़े पलते हैं । मगर उस के खाने का दस्तूर नहीं बल्कि उस का खाना अच्छा नहीं समझा जाता । बागों में दीवारें कम होती हैं और फल तोड़ने से रोकने का दस्तूर नहीं ।

कश्मीर में सब से बढ़ कर अजीब चीज़ उस के बुतखाने हैं जो पूरे कश्मीर में डेढ़ सौ या इस से ज्यादा होंगे । यह इमारतें गढ़े हुए पत्थरों को नीचे ऊपर रख कर तैयार की गई हैं । गारे का इस्तेमाल बिल्कुल नहीं हुआ है । चूने के बगैर सूखे पत्थरों की द्राड़ें इस खूबी के साथ मिलाई हैं कि कागज़ भी उन के बीच में नहीं जा सकता । हर एक पत्थर तीन गज़ से आठ गज़ तक लम्बा है और मोटाई में एक गज़ है । यह समझ में नहीं आता कि इतने बड़े पत्थर किस तरह उठा कर लाये गये और क्यों कर इमारत के हर हिस्से पर पत्थर पर खुदी हुई खूबसूरत तस्वीरें बनी हुई हैं ।"

सवालात

(१) बाबर कौन था ?

(२) मुगलों ने कश्मीर पर कैसे चढ़ाई की ?

(३) मिर्ज़ा हैदर ने मुल्क की भलाई के लिये क्या किया ?

(४) कश्मीर की हालत मिर्ज़ा हैदर के वक्त में क्या थी ?

(५) यहां की इमारतों और बाजारों के बारे में मिर्ज़ा हैदर ने क्या लिखा है ?

१४. जलालु-द्दीन अकबर

जब हुमायूं बादशाह अपनी लाइब्रेरी की सीढ़ियों से गिर कर मर गया, उस वक्त उस का लड़का अकबर ज़िला गुरदास पुर के कस्वा कलानूर में था। अकबर की आयु उस समय तेरह वर्ष की थी। कलानूर में ही १५५६ में अकबर की ताजपोशी बड़े सादा और मामूली तरीका से हुई।

उस वक्त हिन्दोस्तान का राज काज बिखरा हुआ था। जगह जगह छोटी छोटी हकूमतें कायम थीं। उन को एक करने का मुश्किल काम उस तेरह वर्ष के लड़के के सिर आन पड़ा। अकबर की किस्मत अच्छी थी कि उस का होशियार और सियाना उस्ताद बैरम खां उस की मदद को मौजूद था। अकबर ने हेमो बकाल को पानीपत की दूसरी लड़ाई में हराया और देहली और आगरा पर कब्ज़ा कर लिया। अकबर जब जवान हुआ तो उस ने हकूमत की बागडोर अपने हाथ में ले ली। हकूमत का अच्छा काम करने के लिये उस ने बड़ी कोशिश की और आखिर इस में सफल हुआ। शान्ति रखने के लिये ज़रूरी है कि सरहद्दों के करीब जो भी हकूमतें हों उन में कोई खलबली न हो क्योंकि उस से राज्य को खतरा पैदा होता है। हिन्दोस्तान कई हिस्सों मे बांटा हुआ था। यह बात मुल्क के लिये बहुत खतरनाक थी। इस लिये अकबर ने मुल्क को एक करने की कोशिश की। आहिस्ता आहिस्ता उस ने सारे उत्तरी हिन्दोस्तान को अपनी हकूमत में मिला कर दक्षिण की तरफ ध्यान दिया और किला असीर गढ़ तक पहुंचा। राजपूताना और बंगाल की हकूमतों को भी

अकबर का लोहा मानना पड़ा । हिन्दोस्तान की यह हकूमतें अकबर के हमलों का मुकाबला न कर सकीं जिस की सब से बड़ी वजह यह थी कि हिन्दोस्तान के आम लोगों ने उन लड़ाइयों में कोई ज्यादा दिलचस्पी नहीं ली । लेकिन जहां कहीं लोगों ने अपने इलाका की आज़ादी बचाने की कोशिश की वहां अकबर को सख्त मुश्किलें उठानी पड़ीं । ज्यादातर लोग सोचते थे कि लड़ाई में जिस की जीत हुई वही मालिक बनेगा। अगर एक मालिक गया तो दूसरा आ जायेगा । लोगों की ज़िन्दगी में कोई बड़ा फर्क नहीं होगा । इसी लिये जनता हाकिमों के झगड़ों में नहीं पड़ती थी और हाकिम लोग जनता की हालत को अच्छी तरह नहीं समझते थे । ऐसी सूरत में अगर मुगल फौजों ने दूसरे राजाओं की फौजों को हरा दिया वह कोई अचम्भे की बात नहीं ।

अकबर जब काबुल की लड़ाई जीत कर लौटा तो उसे कश्मीर के हालात मालूम हो चुके थे । यहां उस वक्त कश्मीर का आखिरी स्वतन्त्र बादशाह युसूफ चक राज्य करता था । यह बादशाह राग रंग में मस्त रहता था । हकूमत के लायक नहीं था । उस की प्रजा बड़ी दुःखी थी । वह गाने बजाने वालों की राय पर चलता था । उस की अच्छी मलिका हब्बा-खातून ने कई बार उस का ध्यान देश की दुर्दशा की तरफ खींचा मगर बादशाह के कानों पर जूं तक न रींगी । अकबर ने इन हालात से फायदा उठाया और राजा भगवान दास को कश्मीर पर चढ़ाई करने के लिये भेजा । यूसुफ चक भला मुगल फौजों का क्या मुकाबला कर सकता था । फिर भी कश्मीरियों ने अपने वतन की मिटती हुई आज़ादी को बचाने के लिये बड़ा सख्त मुकाबला किया और भगवान दास जैसा जरनैल भी मजबूर हो गया कि सुलह का रास्ता ढूंढे । यूसुफ चक को शाही दरबार में भेज दिया गया । यहां वह टोडर-मल की निगरानी में रहा ।

यूसुफ शाह चक के बेटे याकूव ने अपने वतन को आज़ाद कराने की कोशिश की। एक साल तक उस ने राज्य किया। मगर लोगों पर बड़ी सख्ती की। थोड़े ही काल में लोग उस से तंग आ गये और एक साल बाद उस ने मिर्ज़ा कासिम खां मीरबहर से हार कर हथियार डाल दिये। वह हकूमत जिसे लोगों की हमदर्दी और मदद हासिल न हो ज्यादा देर तक खड़ी नहीं रह सकती। कश्मीर के लोगों को चक बादशाहों के ज़माना में कभी अमन चैन नहीं मिला। इस लिये उन्हों-. ने मुगलों का आना बुरा नहीं माना और कश्मीर भी मुगल सल्तनत का एक हिस्सा बन गया।

अकबर की हकूमत को लोगों ने इस लिये सहन कर लिया कि अकबर अपनी हकूमत को लोगों की मर्ज़ी से चलाना ज्यादा पसन्द करता था। वह ज़माना शख्सी हकूमत का था मगर फिर भी अकबर के नौ रतन हकूमत के हर काम में उस को अपनी राय देते थे और बादशाह उन की राय का बड़ा खयाल करता था। कश्मीर फतह होते ही अकबर ने मुहम्मद भट्ट को मुल्क के इन्तिज़ाम के लिये भेजा। मुहम्मद भट्ट कश्मीरी था और चक बादशाहों के वक्त यहां का हाकिम रह चुका था। उस ने अपनी लियाकत और हमदर्दी से लोगों के दिल में घर बना लिया। वह चक बादशाहों के तौर तरीकों से नाराज़ हो कर मुगल दरबार में चला गया था। मुहम्मद भट्ट के यहां वापस आने से लोगों में बड़ा विश्वास पैदा हो गया और मुल्क में अमन और शान्ति की लहर दौड़ गई।

उन्हीं दिनों यूसुफ शाह रज़वी कश्मीर में सूबेदार बना कर भेजा गया। याकूव के बहुत से साथियों ने हथियार डाल दिये। मगर सय्यद अब्ब-उल-माली, शमस चक और शमस डोली ने हार नहीं मानी। शमस चक और शमस डोली ने पुंछ में जा कर ऊधम मचाया। तब अकबर ने उन को काबू

करने के लिये मुहम्मद भट्ट को भेजा और उस न उन दोनों को हरा कर भगा दिया । याकूब और सय्यद अब्ब-उल-माली बड़ी बहादुरी से लड़ा लेकिन पकड़ा गया । यूसुफ शाह सूबेदार ने उस को सज़ा नहीं दी । बल्कि उस की बहादुरी की तारीफ की और उसे शाही इनाम दिला कर उस की इज्ज़त बढ़ाई । कश्मीर के दूसरे अमीरों ने यह अच्छा बरताव देखा तो उन्हों-ने चक सरदारों का साथ छोड़ दिया और मुगलों से आ मिले । बाकी सरदार जो मुगलों की हकूमत नहीं मानते थे पकड़े गये और उन्हे सज़ायें दी गईं ।

उन्हीं दिनों अकबर बादशाह कश्मीर की सैर के लिये आया । श्रीनगर में बादशाह यूसुफ शाह सूबेदार के हां ठहरा, दरिया का सुन्दर दृश्य (नज़ारा) बादशाह को बहुत पसन्द आया । उन दिनों कश्मीर में कोई तीस हज़ार किश्तियां थीं लेकिन कोई बादशाह के लायक नहीं थी । नई किश्तियां बन-वाने के लिये मालाबार से कारीगर मंगवाये गये । चन्द ही दिनों में शानदार और खूबसूरत किश्तियों का एक दरियाई महल तय्यार किया गया । ऐसा मालूम होता था कि दरिया में एक नया शहर बस गया है ।

याकूब ने जो दरबदर फिरने से तंग आ गया था बादशाह से माफी चाही । बादशाह ने इस दुश्मन को भी माफ कर दिया और बीस हज़ार की जागीर दी । मगर एहतियात के खयाल से उस को राजा मानसिंह की निगरानी में रखा । कुछ दिनों के बाद याकूब को उस के भाई ने ज़हर दे कर मार दिया ।

कश्मीर में अकबर बादशाह ने हुक्म जारी किया कि कोई फौजी अफसर या कर्मचारी जनता को किसी प्रकार का दुःख न पहुंचाये और अगर इस किस्म की कोई बात बादशाह के सुनने में आई तो सख्त सज़ा दी जायेगी । पैंतीस दिनों की सैर के बाद अकबर हिन्दोस्तान लौट गया । आगरा

पहुंचते ही बादशाह ने बड़े होशियार अफसरों को बन्दोबस्त मालिया के लिये कश्मीर भेजा । उस नये इन्तिज़ाम से यहां पहले पहल बहुत शोर हुआ क्योंकि उस तरह रुपया गबन करने का बहुत कम मौका रह गया था । मुल्क में इतनी गड़-बड़ हुई कि अकबर को दूसरे साल फिर कश्मीर आना पड़ा । बादशाह के आते ही यह फसाद तो दब गया । लेकिन लोग बहुत डरे कि शायद बादशाह बहुत सख्त सज़ाएं देगा । मगर उस ने सब को तसल्ली दी और श्रीनगर पहुंचते ही चौदह हज़ार आदमियों को खाना खिलाया और वह लोगों से बड़ी अच्छी तरह पेश आया । इस से लोगों के दिल से बादशाह का डर दूर हो गया ।

चक खानदान तो मिट रहा था फिर भी उन में से कुछ सरदारों का असर रसूख बाकी था । अकबर बड़ी दूर की बात सोचने वाला बादशाह था । उस ने हिन्दोस्तान में राज-पूत घरानों में शादियां कर के उन को अपना दोस्त बनाया था । इसी तरह यहां अकबर ने शमस चक की लड़की से शादी की जिस से यह खानदान भी अकबर का दोस्त बन गया ।

चकों के राज्य में जनता बड़ी निढाल हो चुकी थी । बारिश की कमी की वजह से गल्ला बहुत कम पैदा हुआ तो कहत पड़ गया । बादशाह ने हारी पर्वत पर किला बनाने का हुक्म दिया और इस के लिये एक करोड़ दस लाख की रकम खज़ाने से दी । उस से लोगों को मज़दूरी मिल गई और वह इस योग्य हुए कि कहत का मुकाबला कर सकें । हारी पर्वत के चारों ओर जो बड़ी पक्की दीवार है वह भी इसी लागत से तामीर हुई है ।

जब मुहम्मद कली खां मुगलों का सूबेदार बन कर आया तो उस ने मुल्क का अच्छा इन्तिज़ाम किया । बहुत सी इमारतें बनवाईं, कई बाग लगवाये । यहां अब तक कलम या दरख्तों

को पैवन्द लगाने का रिवाज नहीं था। उस ने काबुल से फलों के पौदे मंगवा कर पैवन्द लगाये। यह तजरबा बड़ा सफल रहा। इस से बागों में बड़ी तरक्की हुई और कश्मीर में तरह तरह के फल पैदा होने लगे।

अकबर जब तीसरी और आखिरी बार कश्मीर आया तो लोगों ने कश्मीर के अफसरों के खिलाफ शिकायत की। अकबर ने उन अफसरों को सज़ा दी जिन के खिलाफ सच्ची शिकायत की गई थी और जिन ज़मींदारों पर उन्हों ने ज़ुल्म किया था उन के लगान माफ कर दिये गये। उस बार बादशाह ने ज़ैन-उल-आब्दीन का बनवाया हुआ ज़ैना लैंक देखा और एक बहुत बड़ी किश्ती बनवा कर दरिया की सैर की। कश्मीर के लोग १३ भादों को दरियाए जेहलम की पूजा किया करते थे और दीपक माला भी होती थी। क्योंकि लोगों का खयाल था कि उस दिन दरिया जेहलम पैदा हुआ था। बादशाह ने प्रजा की खातिरदारी के लिए हुक्म दिया कि तमाम पहाड़ों, दरियाओं और किश्तियों में रोशनी हो। सारा शहर जगमगा उठा। बादशाह ने एक बड़ा जशन किया जिस में गरीबों को बहुत रुपया बांटा गया। उन्हीं दिनों बादशाह ने ज़मींदारों के लगान में बहुत कमी कर दी जिस से ज़मींदार खुशहाल हो गये। बादशाह की इन मेहरबानियों ने लोगों के दिलों में अपने कश्मीरी बादशाह ज़ैन-उल-आब्दीन की याद ताज़ा कर दी।

सवालात

(१) अकबर बादशाह किस का लड़का था? वह तख्त पर किस उम्र में बैठा? उस ने हिन्दोस्तान का कैसा इन्तिज़ाम किया?

(२) अकबर बादशाह कितनी बार कश्मीर आया? उसने कश्मीरियों के लिये क्या किया?

(३) हारी पर्वत का किला किस ने बनवाया और क्यों बनवाया ?

(४) अकबर बादशाह के राज्य में ज़ैन-उल-आब्दीन की याद क्यों ताज़ा हुई ।

१५. नूरुद्दीन जहांगीर

जहांगीर अकबर का बेटा था । वह १६०५ में अकवर के बाद हिन्दोस्तान का बादशाह बना । उस को अपना राज्य मज़बूत करने में ज्यादा मुश्किल नहीं पड़ी । शुरु में उस के बड़े लड़के खुसरो ने बाप के खिलाफ बगावत की मगर वह सफल न हुआ ।

जहांगीर की ज़िन्दगी की सब से मनोहर घटना नूरजहां से शादी है । राज्य के काम पर भी उस शादी का बहुत असर पड़ा था । बादशाह हर काम में नूरजहां की राय लेता था । कभी कभी तो मलिका खुद ही हुक्म जारी कर देती थी । कुछ इतिहासकारों का ख्याल है कि असल में हकूमत की बागडोर नूरजहां के हाथ में थी ।

जहांगीर अकबर के साथ कश्मीर आ चुका था । उस समय वह शाहज़ादा था और सलीम कहलाता था । अकबर ने जिस तरह चक खानदान में शादी की थी उसी तरह उस ने सलीम की शादी भी हुसैन शाह चक की लड़की से कर दी । हुसैन शाह चक असर रसूख वाला अमीर था । जब इस की लड़की से मुगल शाहज़ादे की शादी हो गई तो वह भी मुगलों का दोस्त बन गया और कश्मीर में मुगल हकूमत की जड़ें मज़बूत हो गईं ।

सलीम जब तख्त पर बैठा तो उस की तबीयत भी कश्मीर की तरफ लगी । वह सैर का शौकीन था और कश्मीर की खूबसूरती देख चुका था । जब नूरजहां हिन्दोस्तान की मलिका बनी तो उस ने भी कश्मीर की तरफ ध्यान दिया ।

जहांगीर के राज्य में कश्मीर में कोई बड़ी घटना नहीं हुई । किश्तवाड़ के राजा ने अलबत्ता बगावत की थी, मगर यह बगावत जल्द ही दबा दी गई और राजा ने अपने दो लड़के ज़मानत के तौर पर जहांगीर के दरबार में भेज दिये ।

जहांगीर में यह बड़ी अच्छाई थी कि वह जिस मुल्क में जाता वहां के लोगों के रहने सहने और उन की आदतों को अच्छी तरह देखता और समझता । उस ने आपबीती "तुज़कि जहांगीरी" में कश्मीर के हालात भी अच्छी तरह और बड़े मनभावने ढंग में लिखे हैं । जहांगीर कहा करता था कि कश्मीर मेरे राज्य का एक बाग है । जिस में सदा बहार रहती है । यह स्वर्ग का एक टुकड़ा है जो ज़मीन पर उतर आया है । कश्मीर एक किला है जिसे कुदरती दीवारों ने बहुत ही मज़बूत बना रखा है । यहां दुश्मन का आना बहुत मुश्किल है और जो कोई इस पर चढ़ाई करेगा मुंह की खायेगा । यहां से बढ़ कर मनभावनी जगह का होना मुमकिन नहीं । अगर यह बादशाहों के लिये आराम की जगह है तो फकीरों और ऋषियों के लिये इबादत और ध्यान ज्ञान की भी जगह है । ऐसी जगह कहीं और नहीं, इसी वजह से अमीर गरीब सब इस की तरफ खिंचे चले आते हैं ।

शहर श्रीनगर का हाल बयान करते हुए जहांगीर ने "तुज़कि जहांगीरी" में लिखा है कि यह शहर बड़ा खुला हुआ है । इस के बीचों बीच दरिया जेहलम बहता है जिस ने शहर की खूबसूरती को बहुत बढ़ा दिया है । यह दरिया वेरीनाग के चश्मे से निकलता है । दरिया पर आने जाने के लिये

पत्थर और लकड़ी के बने हुये सात पुल हैं जिनको यहां के लोग कदल कहते हैं । कारोबार और आदमियों के आने के लिये भी किश्तियां काम में लाई जाती हैं । काश्मीर में बहुत ज्यादा किश्तियां और मल्लाह हैं । यहां की ज़मीन के बारे में जहांगीर ने लिखा है कि कश्मीर की ज़मीन में पैदावार की बहुत ताकत है । यही वजह है कि यहां गल्ला बहुत पैदा होता है । जिस से लोगों को लगान अदा करने में बिल्कुल मुश्किल नहीं पड़ती । कुदरत ने इस देश को तरह तरह की अच्छी चीज़ों और रंगीनियों से माला माल कर रखा है ।

जहांगीर के राज्य में भी कश्मीर में मुसलमानों की गिनती ज्यादा थी । मगर हिन्दुओं के साथ उन का व्यवहार बड़ा अच्छा था । उन के मेल जोल से यह मालूम होता था जैसे एक ही घर के लोग हैं । मुसलमानों में हिन्दुओं की रस्में मनाने का रिवाज था और कई जगह तो आपस की शादियां भी होती थीं । जहांगीर इन हालात से बहुत खुश था । वह यहां के लोगों की बड़ी तारीफ करता था और "तुज़कि जहांगीरी" में उस ने कश्मीर के कारीगरों की भी कई बार बड़ी तारीफ की है ।

जहांगीर के ज़माने में यहां सात सूबेदार आये । वह जानते थे कि बादशाह कश्मीर का खास खयाल रखता है इसलिए इन सूबेदारों ने बड़े इन्साफ से हकूमत की और जनता को बड़ा सुखी रखा । उस ज़माना में कश्मीर में एक बीमारी फैली जिस की वजह से चालीस दिन के अन्दर अन्दर हज़ारों आदमी मर गये और घर के घर साफ हो गये । इस के बाद एक भयानक आग लगी । कोई बारह हज़ार मकान जल कर राख का ढेर हो गये । जहांगीर उस वक्त कश्मीर में ही था । उस ने यहां के लोगों के साथ बड़ी हमदर्दी का बरताव किया और लोगों को फिर से बसाने के लिये शाही खज़ाने से दिल

खोल कर सहायता की । उसे इस बात का खयाल था कि शाही खज़ाना में रुपया लोग ही देते हैं और इस का सब से अच्छा खर्च यही है कि रुपया लोगों के काम आये । कश्मीर में जो आग लगी थी उस से जामिया मस्जिद भी जल गई थी । जहांगीर ने उस की मरम्मत करवाई और कोई सतरह साल की मेहनत के बाद यह मस्जिद अपनी पहली शकल में आ गई। नूरजहां ने ज़ड्डी बल की खानकाह नये सिरे से बनवाई और खानकाहे शाह हमदान के सामने दरिया के उस पार एक बड़ी शानदार मस्जिद भी बनवाई जो पत्थर मस्जिद के नाम से मशहूर है ।

जहांगीर के राज्य की यादगारों में शालामार बाग, चश्मा शाही, वेरी नाग और अच्छावल खास तौर पर वर्णन करने के योग्य हैं । यहां लाखों लोग आते हैं और यहां के खूबसूरत नज़ारों और कारीगरों के हुनर की तारीफ करते हैं । जहांगीर ने एक नहर खुदवाई थी जो नसीम बाग और निगीन से होती हुई झील डल में आकर गिरती थी । उस के संगम पर उस ने एक शानदार महल बनवाया था जिस का नाम बहरआरा रखा गया था । जहांगीर और नूरजहां ज्यादा उसी महल में रहते थे और चान्दनी रातों में किश्ती की सैर को निकलते थे । उन किश्तियों को औरतें चन्दन के चप्पुओं से चलाती थीं जिन पर छोटे छोटे घुंघरू बन्धे होते थे । यही सैर तफरीह और नज़ारे जहांगीर को कश्मीर खींच लाते थे ।

जहांगीर को आखिरी उम्र में दमा हो गया था । पंजाब की गर्मी से घबरा कर वह कश्मीर आया मगर उस बार यहां की आबोहवा ने उल्टा असर दिखाया । इस लिये वह जल्द ही लौट गया । रास्ते में वह शिकार से दिल बहलाने की कोशिश करता रहा । मशहूर है कि एक पहाड़ी नौजवान एक ज़िन्दा हिरण पकड़ कर बादशाह के लिये ला रहा था कि उस का पांव पहाड़ की चोटी से फिसल गया और घायल होकर मर

गया । उस की लाश बादशाह के पैरों के पास आकर गिरी । जहांगीर इस दु:ख भरे नज़ारे को देख न सका । वह बेहोश हो गया और उसी रात दुनिया से गुज़र गया । उस की लाश लाहौर पहुंचाई गई और शाहदरा के बाग में दफन की गई । उस के बाद उस के लड़के खुरम ने उस का मकबरा बनवाया जो मुगलों की इमारतों में बहुत खूबसूरत माना जाता है ।

सवालात

(१) 'तुज़कि जहांगीरी' किस ने लिखी है ?
(२) जहांगीर के ज़माने में कश्मीरियों को कौन कौन सी कुदरती आपदाओं का सामना करना पड़ा ?
(३) जहांगीर बादशाह को कश्मीर क्यों इतना प्यारा था ?
(४) मलिका नूरजहां के बारे में आप क्या जानते हैं ?
(५) कश्मीर में जहांगीर की बनवाई हुई इमारतों के नाम बताइये ?

१६. शाहजहां

जहांगीर जब कश्मीर से जाता हुआ राजौरी के पास मर गया तो उस के बेटों में तख्त के लिये काफी झगड़ा हुआ । लेकिन शाहजहां ने अपने भाइयों पर पूरी जीत हासिल की और वह हिन्दोस्तान का बादशाह बन गया । उस ने अपने बाप दादा की रीत पर चल कर थोड़े ही दिनों में हिन्दोस्तान के एक बड़े हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया । सिर्फ दक्षिण की सल्तनतों पर वह अच्छी तरह नहीं छा सका ।

शाहजहां के ज़माने से इल्म, अदब और हुनर ने ऐसी तरक्की की जैसी पहले नहीं हुई थी । शाहजहां ने बहुत सी

इमारतें बनवाईं । यहां हर एक का अलग अलग हाल बताना मुमकिन नहीं । शाहजहां को बागों का भी बहुत शौक था । उस ने हिन्दोस्तान के कई शहरों को बागों से सजाया, कश्मीर का निशात बाग शाहजहां के ससुर आसफ खां ने बनवाया था ।

शाहजहां के ज़माने में कश्मीर में कोई बड़ी सियासी तब्दीली नहीं हुई । अकबर और जहांगीर की तरह शाहजहां को भी कश्मीर प्यारा था । उस ने कश्मीर की तरफ ध्यान दिया और यहां शान्ति रही । लेकिन एक बार बारिश बहुत हुई जिस से शाली की फसल बिल्कुल तबाह हो गई और ऐसा कहत पड़ा कि पांच लाख से ज्यादा इनसान घर छोड़ने पर मजबूर हो गये । जब यह लोग भूख से मरते हुये लाहौर पहुंचे उस समय शाहजहां वहां मौजूद था । लोगों ने अपनी कहानी बड़े दुःख भरे शब्दों में सुनाई । बादशाह का दिल भर आया । उसी समय शाही खज़ाना से उन को एक बड़ी रकम दिलवाई गई और उन के खाने के लिये लंगर जारी कर दिया । वहां उन को दोनों समय मुफ्त खाना मिलता था । शाहजहां ने वक्त पर इमदाद की और लोगों को भूखों मरने से बचा लिया । उस के बाद बादशाह ने हुक्म दिया कि बीस हज़ार रुपया कश्मीर भेजा जाये ताकि भूख के मारे लोगों को खाना मिले । तरबियत खां सूबेदार अच्छे ढंग से इन्तिज़ाम न कर सका उस वजह से यह सूबेदार हटा दिया गया और उस की जगह ज़फर खां कश्मीर का सूबेदार मुकर्रर हो कर आया । फिर दूसरी बार तीस हज़ार की रकम दी गई ताकि लोगों की हालत सुधारने का काम पूरा हो सके ।

जहांगीर के ज़माना में तिब्बत फतह करने की कोशिश की गई मगर इस में कामयाबी नहीं हुई । उस वक्त अब्दाल तिब्बत का हाकिम था । यह पहाड़ी इलाका ऐसा था कि कुदरती रुकावटों से उस का बचाव हो सकता था । इस लिये

अब्दाल किसी की परवाह नहीं करता था। उस ने चक खानदान के बागी लोगों को अपने हां रख छोड़ा था। ज़फर खां ने अब्दाल को समझाने की कोशिश की और उस से कहा कि वह शाहजहां को अपना बादशाह मान ले। अब्दाल ने प्रण किया। मगर थोड़े ही दिनों बाद वह अपने प्रण से फिर गया। तब ज़फर खां ने शाहजहां के हुक्म से दस हज़ार पैदल फौज और दो हज़ार रिसालों के साथ तिब्बत पर चढ़ाई कर दी। उस से मालूम होता है कि कश्मीरी तलवार के धनी थे और वह कठिन रास्तों और पहाड़ों में लड़ने के गुर अच्छी तरह जानते थे। ज़फर खां की फौज ने तमाम मुश्किलों के होते हुए तिब्बत फतह कर लिया और कश्मीरियों की वजह से तिब्बत भी कुछ दिनों के लिये मुगल सल्तनत का हिस्सा बन गया।

शाहजहां के वक्त कश्मीर में आठ सूबेदार आये जिन्होंने बड़ी सूझ बूझ से राज्य किया और लोगों का दिल मोह लिया। उन में से अलीमरदान खां कश्मीर और लाहौर दोनों का सूबेदार था। उस ने बड़ी होशियारी और बुद्धिमता से राज्य का काम चलाया। वह गरीबों की दिल खोल कर मदद करता था। नाला तेलबल के पास उस ने अली आबाद के नाम से एक बड़ा बाग लगवाया और उस में शानदार इमारतें बनवाईं जिन के खण्डहर अभी तक मौजूद हैं। उस ने पहाड़ काटने वाले कारीगरों से कश्मीर आने के रास्ते साफ करवाये। जगह जगह नहरें, चश्मे और सरायें बनवाईं। उन के निशान अभी तक मिलते हैं। सूबेदार लश्कर खां भी अली मरदान की तरह जनता का खयाल रखता था। कहते हैं कि उस के ज़माना में गल्ला इतना पैदा हुआ कि एक मुर्गी के बदले में एक खिरवार (दो मन) शाली मिल जाती थी। उस ने झील डल के उत्तर की तरफ बड़े अच्छे बाग लगवाये और इमारतें बनवाईं। मशहूर है कि उस ज़माना में एक बार जेहलम

दरिया भी जम गया था और लोग दरिया की जमी हुई वर्फ पर आसानी से चलते फिरते थे ।

शाहजहां का नाम दुनिया की तारीख में चमकता रहेगा । इस लिये नहीं कि उस ने कई इलाके फतह किये वल्कि इस लिये कि उस ने इनसानों की भलाई की तरफ ध्यान दिया । उस के ज़माना में विद्या और कला ने बड़ी तरक्की की । उस के दरबार में हर किस्म के कारीगर मौजूद थे । उन्हों ने अपने हुनर से ऐसी ऐसी चीज़ें तैयार कीं जो दुनिया की अजीब चीज़ों में गिनी जाती हैं । ताजमहल भी हिन्दोस्तानी कारीगरों के हुनर का पता देता है । शाहजहां ने जो इमारतें बनवाईं उन में ताजमहल, देहली का लाल किला, देहली की जामिया मस्जिद, मोती मस्जिद, आगरा और अजमेर की जामा मस्जिद खास तौर पर ज़िकर के काबिल है । उन के बनाने में कश्मीरी कारीगरों ने भी हिस्सा लिया था । उर्दू ज़बान ने भी शाहजहां के ज़माना में जन्म लिया । उस वक्त यह लश्कर या फौज की ज़बान समझी जाती थी । फारसी ज़बान की तरक्की भी उस ज़माना में हुई । शाहजहां के दरबार में विद्वान, कवि, हकीम, हिसाबदान, नजूमी सभी रहते थे । उन में हिन्दू भी थे और मुसलमान भी । बादशाह को राग से बड़ा लगाव था । उसी ज़माना में बहुत सी रागनियां बनी थीं ।

इन तमाम बातों का असर कश्मीर पर भी पड़ा और यूं भी कश्मीर के अमन और शान्ति, अच्छी आबोहवा और कुदरती नज़ारों के कारण यहां विद्वान और ज्ञानी लोग आ कर बसते थे । बीच एशिया में सियासी गड़बड़ थी । लोगों को विश्वास नहीं था । इस लिये भी वहां से लोग हिन्दोस्तान और कश्मीर आकर बसते थे । ख्वाजा खाविन्द महमूद जो अपने ज़माना के बहुत मशहूर आलिम और सूफी थे, कश्मीर

आये और यहां के हो रहे । कुदसी और कलीम ने कश्मीर ही में "बादशाह नामा" लिख कर पूरा किया । मुल्लाह शाह भी एक बड़े विद्वान थे और कश्मीर आया करते थे । मुल्ला हसन फारुकी, मुल्ला हसन फानी और गनी तो थे ही कश्मीरी । उन के इल्म और सूझ बूझ की धूम हिन्दोस्तान और ईरान में थी । उन लोगों ने कश्मीर में इल्म को इतनी तरक्की दी कि कश्मीर इल्म और हुनर का घर बन गया ।

सवालात

(१) शाहजहां के ज़माना में कश्मीर की क्या हालत थी ?
(२) तिब्बत कैसे मुगल सल्तनत में शामिल हुआ ?
(३) अलीमरदान खां ने कश्मीर की भलाई के लिये क्या किया ?
(४) शाहजहां की बनवाई हुई मशहूर इमारतें कौन कौन सी हैं ?
(५) शाहजहां के ज़माना में कश्मीर में कौन सी इमारतें हैं ।

१७. औरंगज़ेब आलमगीर

शाहजहां के चार बेटे, दारा शिकोह, शुजा, औरंगज़ेब और मुराद थे । दारा शिकोह सब से बड़ा था । मगर मुगलों के हां साफ तौर पर यह कानून नहीं था कि बाप के बाद सब से बड़ा लड़का तख्त पर बैठे । इस लिये हर लड़का तख्त पर बैठने की कोशिश करता और आपस में लड़ाई होती थी । भाई भाई के खून का प्यासा हो जाता था ।

शाहजहां जानता था कि इधर इस की आंखें बन्द हुईं और उधर चारों भाई तख्त के लिये लड़ने लगेंगे । दारा-शिकोह शाहजहां को बहुत प्यारा था । इस लिये उस ने उस

को शाहज़ादा बुलन्द इकबाल का लकब दिया और दरबार में एक सुनहरी कुर्सी पर उसे अपने पास जगह दी । वह लोगों पर यह ज़ाहिर करना चाहता था कि मेरे बाद दारा शिकोह बादशाह बनेगा । एक कहानी मशहूर है कि एक बार शाह-जहां एक साधु के पास गया और उस से पूछा कि मेरे बाद हिन्दोस्तान के तख्त पर कौन बैठेगा । साधु ने कहा कि तुम बारी बारी अपने बेटों के नाम लो । शाहजहां ने सब से पहले दारा का नाम लिया । साधु ने कहा कि उस का हाल वही होगा जो ईरान के दारा का हुआ । ईरान का बादशाह दारा सिकन्दर आज़म के हाथों मारा गया था । बादशाह ने दूसरे बेटे शुजा का नाम लिया । साधु ने कहा कि यह शुजा याने बहादुर नहीं इस लिये तख्त पर नहीं बैठेगा । तो बादशाह ने मुराद का नाम लिया, इस पर साधु ने कहा कि यह नामुराद यानी नाउम्मीद होगा । फिर बादशाह ने औरङ्गज़ेब का नाम लिया, साधु झट बोल उठा कि उस से तख्त सजेगा । औरङ्ग के अर्थ हैं तख्त और ज़ेब याने जो उस को सजा दे । यह तो खैर कहानी है मगर दर असल हुआ भी यही कि शाहजहां के बाद औरङ्गज़ेब तख्त पर बैठा ।

शाहजहां बहुत चाहता था कि दाराशिकोह तख्त पर बैठे । उस के तमाम बेटों में दारा सब से ज्यादा खुले दिल वाला था । उस ने शिक्षा भी अच्छी पाई थी । वह सूफी बज़ुर्गों और वेद जानने वालों के पास काफी वक्त गुज़ारता था । उन का असर उस पर बहुत गहरा था । दारा ने उपनिषद् का फारसी में अनुवाद भी करवाया और बड़े शौक से पढ़ा । वह हिन्दू मज़हब और इस्लाम के फर्क को सूफियों की मदद से कम करना चाहता था । दारा शिकोह शाहजहां के साथ कई बार कश्मीर भी आया था । उसी ने परी महल बनवाया जो कि एक बड़ा अच्छा किताब घर था । उस में हर मज़हब की चुनी हुई किताबें थीं । वहां विद्वानों में वाद विवाद होता

और दारा यह चाहता कि अलग अलग मज़हबों के मानने वाले किसी एक बात पर मिल जायें और मज़हबी फर्क बाकी न रहे। कश्मीर में वह आखुन मुल्ला-शाह से रूहानी ताल्लुक रखता था। अगर दारा अपने मकसद में कामयाब हो जाता तो हिन्दुओं और मुसलमानों में बड़ा गहरा भाईचारा कायम हो जाता और आपस के झगड़े हमेशा के लिये खत्म हो जाते। मगर दारा अपनी कोशिशों में कामयाब नहीं हुआ। हारी पर्वत में मुल्ला-शाह आखून की मस्जिद और बाग भी दारा की यादगार है।

औरङ्गज़ेब बहुत सी बातों में फकीर आदमी था मगर उस में एक खराबी थी कि वह दूसरों पर बहुत कम भरोसा करता था। हर एक को शक की नज़र से देखता था। इस लिये उसे राज्य का सारा काम खुद ही करना पड़ता था। उस ने बड़ी शानदार जीतें हासिल कीं मगर वह राज्य को अच्छे तरीकों पर न चला सका। उस का ज्यादा वक्त लड़ाइयों में गुज़रा और जब उस ने दक्षिण की तरफ मुंह मोड़ा तो उत्तर में उस की हकूमत कमज़ोर हो गई। ऐसी सूरत में उसे कश्मीर की तरफ ध्यान देने का ज्यादा मौका नहीं मिला। फिर भी उस ने जनता की तरक्की का खयाल रखा और उन की सेवा की। कश्मीर में कुछ सूबेदार ऐसे आये जिन्होंने प्रजा पर ज़ुल्म किया और लूट मार में लगे रहे। जब लोग तंग आ जाते तो बादशाह से शिकायत करते। औरङ्गज़ेब ने लोगों की शिकायत सुनी और कई सूबेदारों को हटा कर उन्हें सख्त सज़ायें दीं।

औरङ्गज़ेब के ज़माना में जामिया मस्जिद में आग लग गई जिस से मस्जिद तबाह हो गई थी। उस ने तीन वर्ष में उस की अच्छी मरम्मत करवाई और मस्जिद फिर अपनी असली हालत में आ गई। एक बार ज्यादा बारिश की वजह

से बहुत बड़ा सैलाब आया । हज़ारों घर उजड़ गये, मवेशी मर गये, खेती खराब हो गई । उस के बाद भूचाल भी आये जिन से हज़ारों मकान गिर गये । कुदरती मुसीबतों की वजह से कश्मीर के लोगों ने बड़ी तकलीफ उठाई ।

सवालात

१. शाहजहां के कितने बेटे थे, उस के बाद तख्त पर कौन बैठा ?
२. दारा शिकोह के बारे में आप क्या जानते हैं ? वह क्या चाहता था ?
३. औरंगज़ेब के ज़माना में कश्मीर में कितने और कैसे सूबेदार आये ।

१८. कश्मीर में मुगल यादगारें

बहुत समय गुज़र जाने के बाद मुगलों के ज़माना में हिन्दोस्तान में शान्ति हुई और मुल्क को दोबारा एक लड़ी में पिरो दिया गया । हिन्दोस्तान को जिन चीज़ों पर मान था वह चीज़ें फिर उभरीं और मुगल बादशाहों की देख भाल में हिन्द में रहने वालों ने अपनी कारीगरी और हुनर दिखाये । दूसरे मुल्कों में भी हिन्दोस्तान का नाम मशहूर हुआ । मुगल बादशाहों ने कश्मीर पर भी ध्यान दिया और उन्होंने यहां कई अच्छी जगहें बनवाईं जो उन के बाद यादगार रही हैं । लोग मुगलों की बनवाई हुई इमारतों और दूसरी जगहों को आज भी देखते हैं और उस वक्त की कारीगरी और मुगलों की पसन्द की प्रशंसा करते हैं । यहां कुछ यादगारों का वर्णन किया जाता है ।

शालामार बाग :—यह बाग झील डल के किनारे पर

वाका है और कश्मीर के तमाम बागों से अच्छा और खूब-सूरत समझा जाता है । उस में पठान और सिक्ख हाकिमों ने अपनी अपनी पसन्द से कुछ तब्दीलियां भी कराईं । इस लिये उस बाग में वह बात नहीं जो नूरजहां और जहांगीर के वक्त में थी । लोगों का खयाल है कि पहली सी लुभावट अब नहीं रही । उस बाग का पहला हिस्सा वहां था जहां अब सड़क है । दूसरे हिस्से में दीवाने आम था । यहां हर किस्म के लोग जा सकते थे । तीसरा हिस्सा दीवाने खास था जहां बड़े दरबारी बैठते थे और उस के पीछे हरम यानी औरतों के लिये जगह थी । इस हिस्सा में पत्थर पर खुदवाई का बहुत अच्छा काम था । संग मरमर की बारहदरी और बाग की बनावट बहुत खूबसूरत थी ।

निशात बाग :—उस बाग को शाहजहां के वज़ीर और ससुर आसफ खां ने बनवाया था । कहते हैं कि जब यह बाग बन गया तो शाहजहां को बहुत पसन्द आया । मुगलों के हां दस्तूर था कि जब कोई चीज़ बादशाह को पसन्द आ जाये तो मालिक उसे बादशाह की भेंट कर देता था । शाह-जहां ने कई बार कहा कि निशात बाग उसे बहुत पसन्द है । लेकिन आसफ खां ने कुछ खयाल नहीं किया । कहते हैं कि बादशाह को यह बात बुरी लगी और उस ने बाग का पानी बन्द करवा दिया । हरा भरा बाग सूख गया, बाग की बरबादी देख कर आसफ खां को बड़ा दुःख हुआ । उस के एक नौकर से आसफ खां की यह हालत न देखी गई और उस ने किसी से पूछे बगैर बाग का पानी फिर खोल दिया । बाग लहलहा उठा । आसफ खां उस नौकर पर बहुत खफा हुआ कि उस ने बादशाह के हुक्म के खिलाफ पानी क्यों खोला । जब बादशाह को यह पता चला तो नौकर की वफादारी पर बहुत खुश हुआ और उस को इनाम दे दिया । साथ ही साथ उस ने बाग में पानी ले जाने की इजाज़त भी दे दी । यह बाग भी झील

डल के किनारे है । कहते हैं कि पहले उस के दस तबके या चबूतरे थे । बाग धीरे धीरे ऊंचा होता जाता था । अब बाग के अन्दर जाते हुए जो बारादरी और लकड़ी के दो दरवाज़े मिलते हैं वह महाराजा रणवीर सिंह के वज़ीर पुन्नू के बनाये हुए हैं । इस की बनावट कोई बहुत अच्छी नहीं फिर भी वज़ीर पुन्नू प्रशंसा के योग्य हैं कि उस ने बाग को उजड़ने से बचा लिया । दूसरा हिस्सा बड़ा सुन्दर है या यूं कहिये कि यहां से बाग का असली रूप शुरू होता है । इसी तरह बाग के बाकी हिस्से भी अपने २ रंग में बहुत खूबसूरत हैं । आखिरी हिस्सा औरतों के लिये था और आसफ खां के विचार में यह बाग का सब से खूबसूरत हिस्सा था ।

चश्मा शाही :—श्रीनगर से कोई पांच मील की दूरी पर यह चश्मा और इस का शाही बाग है । इस बाग के पूरा होने पर जहांगीर ने शायरों से उस के तैयार होने की तारीख निकालने को कहा तो उन्होंने "कैसर शाही १०४१" से उस-की तारीख निकाली । जिस के अर्थ हैं 'चश्मा शाही' । यह चश्मा फिर इसी नाम से मशहूर हुआ । मुगल बागों में यह सब से छोटा है । लेकिन इस की खूबसूरती और लुभावट भी कम नहीं । बाहर की दीवार और बाराह-दरियां बाद की बनी हुई हैं । लेकिन झरना, चश्मा और फव्वारे जहांगीर ही के बनवाये हुए हैं । चश्मा का पानी सेहत के लिये अच्छा समझा जाता है । दूर दूर से आने वाले यात्री उस का पानी पीने जाते हैं ।

अच्छा बल :—यह चश्मा बहुत पुराना है । अकबर के वज़ीर और दोस्त अब्बुल फज़ल ने, जिस ने अकबर नामा लिखा है, उस चश्मा के बारे में लिखा है कि ऐसा चश्मा कश्मीर में और कहीं नहीं । इतना साफ और तेज़ी से बहने वाला चश्मा मैं ने अभी तक नहीं देखा । जहांगीर ने यहां एक शानदार बाग लगवाया जिस में तरह तरह के फव्वारे

और झरने बनवाये । एक हमाम तैयार करवाया जिस में गर्म और टण्डा पानी हर वक्त मौजूद रहता था । कहते हैं कि एक लोहे के तवे के नीचे एक दीपक ऐसी कारीगरी से लगवाया गया था जो हमेशा जलता रहता था और तवे को गर्म रखता था । जब पानी उस पर से गुज़रता तो गर्म हो-कर हमाम में पहुंचता । उसकी बनावट देखने के लिये जब हमाम खोदा गया तो दीपक बुझ गया और फिर न जल सका । कुछ माहिरों का खयाल है कि यह चश्मा दरिया चिनाब की दबी हुई सोत है जो यहां आ कर फूटती है । इस-लिये चश्मा का पानी दरिया के पानी के साथ साथ अपनी रंगत बदलता रहता है ।

वेरी नाग :—यह चश्मा अच्छावल से थोड़ी दूर पर फूट पड़ता है । कहते हैं क इसी से दरिया जेहलम निकला है । कहानी मशहूर है कि पार्वती जी ने शिवजी से दरिया का रूप धारने के लिये कहा ताकि वह कश्मीर को पवित्र कर सकें । उस पर शिवजी ने उस जगह त्रिशूल मारा जिस से ज़मीन में छेद हो गया और यह चश्मा फूट पड़ा । उस को सिला घाट के नाम से भी याद किया जाता है । यहां जो इमारत बनी है वह जहांगीर ने शुरू करवाई और शाहजहां ने पूरी की थी । जहांगीर ने अपनी किताब "तुज़कि जहांगीरी" में वेरी नाग का पूरा पूरा हाल लिखा है । जिस से पता चलता है कि वह वेरी नाग को बहुत पसन्द करता था ।

जामा मस्जिद :—इस मस्जिद को सुल्तान सिकन्दर ने बनवाया था । ज़ैन-उल-आब्दीन ने उस के साथ एक स्कूल भी बनवाया और मस्जिद की शान बढ़ाई । जब १६२० में कश्मीर में भयानक आग लगी तो उस मस्जिद का एक बड़ा हिस्सा जल गया । जहांगीर ने उस की मरम्मत शाही खज़ाने से करवाई और कोई सतरह साल की मेहनत के बाद

यह मस्जिद फिर अपनी असली शकल पर आ गई । उस के दक्षिणी दरवाज़े पर शाहजहां का एक फरमान खुदा हुआ है जिस में एतिकाद खां सूबेदार की हरकतों पर नाराज़गी ज़ाहिर की गई है और तमाम ऐसे टैक्स वन्द करने का हुक्म दिया गया है जो वह सूबेदार लोगों से नाजायज़ तरीका पर वसूल करता था । १६७४ में उस मस्जिद में फिर आग लग गई । जव औरङ्गज़ेव आलमगीर को खवर मिली तो उसने पहला सवाल यह किया कि मस्जिद के चिनार तो नहीं जले । जव मालूम हुआ कि चिनार नहीं जले तो उस को वड़ा सन्तोष हुआ क्योंकि मस्जिद तो आसानी से वन सकती थी लेकिन चिनार के जवान होने में वड़ा समय लगता । औरङ्गज़ेव ने तीन साल में मस्जिद को फिर से वनवा दिया । सिक्खों और पठानों के ज़माने में उस मस्जिद की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया । सिक्खों के राज्य में तो एक वक्त ऐसा आया जव इस मस्जिद के दरवाज़े भी वन्द कर दिये थे । लेकिन जव खालसा दरवार से शेख गुलाम मही-उद्-दीन सूवेदार वन कर आया तो उस ने यह पावन्दी हटाई और डेढ़ लाख रुपया लगा कर मस्जिद की मरम्मत करवाई । डोगरों के ज़माना में मस्जिद की हालत फिर खराव हो गई थी । महाराजा प्रताप सिंह के अहद में कश्मीरियों ने चन्दा जमा करके इस मस्जिद की मरम्मत करवाई ।

पत्थर मस्जिद :—यह मस्जिद श्रीनगर के बीच में स्थित है । सारी इमारत पत्थर की बनी हुई है । यह मस्जिद मलिका नूरजहां ने बनवाई थी ।

हारी पर्वत का किला :—हारी पर्वत मुसलमानों को इसलिये प्यारा है कि यहां मखदूम साहिव की ज़ियारत है । हिन्दू उस के हर पत्थर को पवित्र समझते हैं क्योंकि मशहूर है कि जव जलोद्भव मारा गया तो देवताओं ने उस जगह

को अपना स्थान बना लिया था। अकबर ने उस को नागर नगर का नाम दिया और जब कश्मीर में कहत पड़ा तब यह किला बनवाना शुरू किया ताकि लोगों को रोज़ी कमाने का मौका मिले। उस किले और पक्की दीवार पर एक करोड़ दस लाख रुपया खर्च हुआ था। उसी के पास आखून मुल्ला शाह साहिब की मस्जिद है जिसे दारा शिकोह ने बनवाया था। यह मस्जिद मुगल इमारतों में बड़ी अच्छी मानी जाती है।

परी महल:—यह चश्मा शाही के करीब पश्चिम में एक छोटी सी पहाड़ी पर बना था। अब उस के खण्डहर की कुछ दीवारें खड़ी दिखाई देती हैं। रास्ता कठिन होने की वजह से हाकिमों ने उस की मरम्मत की तरफ ध्यान नहीं दिया। परी महल शाहजहां के बड़े लड़के दारा शिकोह ने बनवाया था। उस में एक बहुत बड़ा किताब घर था और शाहज़ादा आलिमों को बुलवा कर यहां वाद विवाद करता था। कहते हैं कि औरङ्ज़ेब के ज़माना में यहां एक मदरसा खोला गया था। यहां लोग दूर दूर से पढ़ने आते थे।

सवालात

१. शालामार बाग किस ने बनवाया था ?
२. निशात बाग में पानी क्यों बन्द हुआ था, फिर कैसे खुला ?
३. अच्छाबल और चश्मा वेरीनाग के बारे में आप क्या जानते हैं ?
४. हारी पर्वत का किला क्यों बना था ?
५. नूरजहां ने कश्मीर में कौन सी मस्जिद बनवाई थी ?
६. मुगलों के ज़माना में बनी हुई इमारतों के नाम बताइये ?

१९. कश्मीर में अन्धेरगर्दी

औरङ्गजेब के मरते ही मुगलों में आपस का झगड़ा शुरू हो गया । बहुत से सूबेदार अपने इलाका में बादशाह बन बैठे । देहली का बादशाह बस आस पास के इलाका का मालिक रह गया । मुगल सल्तनत की लड़ी टूट गई और उस का दाना दाना बिखर गया ।

ऐसे समय में देहली का बादशाह कश्मीर की तरफ क्या ध्यान देता ? यहां जो सूबेदार आता मनमानी करता । इस गड़बड़ के ज़माना में सूबेदारों ने कश्मीरियों पर बड़े ज़ुल्म किये । अगर किसी सूबेदार ने अच्छी हकूमत की और लोगों का खयाल रखा तो खुदा के डर से । उस को बादशाह का कोई डर नहीं था ।

उस ज़माना में हिन्दोस्तान पर बाहिर के हमले भी हुये और कश्मीरियों को बुरा समय देखना पड़ा । ईरानी बादशाह नादिरशाह ने हिन्दोस्तान पर चढ़ाई की और उस ने ऐसी लूट मार और मार काट की कि आज तक नादिर शाह इस के लिये बदनाम है और लूट मार करने वाली हकूमत को नादिर शाही कहते हैं । उस के जाने के कुछ दिनों बाद अहमद शाह अब्दाली ने काबुल और कन्धार पर कब्ज़ा किया और उस ने हिन्दोस्तान पर भी हमले किये और मुगलों के हाथ से उत्तर की तरफ का बहुत सा इलाका निकल गया ।

कश्मीरी मुगल सूबेदारों से तंग आ गये थे । उन्हों ने अहमदशाह अब्दाली को कश्मीर पर कब्ज़ा करने के लिये

कहा और प्रण किया कि वह उसे हर तरह की मदद देंगे। अहमद शाह अब्दाली मान गया। मुगल सूबेदारों ने अफगानी हमलावरों का डट कर मुकावला किया मगर हार गये और कश्मीर अफगान सल्तनत में शामिल हो गया और लगभग छयासठ साल अफगानों के कब्जे में रहा। जो अफगान सूबेदार यहां आये उन्हों ने वह ज़ुल्म तोड़े कि कश्मीर के लोग मुगल सूबेदारों के ज़ुल्म भूल गये और उन्हें फिरिश्ता समझ कर याद करते रहे। मगर उन्होंने यह मुसीवत खुद हीं बुलाई थी। शिकायत किस से करते। अफगानों के ज़ुल्म कश्मीरियों को हमेशा याद रहेंगे। जो अफगान सूबेदार कश्मीर आता, स्वतंत्र बन जाता। काबुल में जब तक अफगान हकूमत मज़बूत रही वहां से फौज आती और छोटी लड़ाई के बाद सूबेदार को पकड़ ले जाती। दूसरा सूबेदार आता, स्वतन्त्र बन जाता और वही कहानी दोहराई जाती। ऐसी हालत में मुल्क तरक्की क्या करता। जब काबुल में आपस का झगड़ा शुरू हो गया तो कश्मीर की हालत और भी खराब हुई। आखिर वज़ीर फतह मुहम्मद खां ने काबुल और कन्धार में हकूमत को नये सिरे से ठीक करके कश्मीर की तरफ भी ध्यान दिया मगर वह अपने बलबोते पर यहां सफल न हो सका। मजबूर होकर उस ने पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह से मदद मांगी। रणजीत सिंह ने इस प्रतिज्ञा पर मदद दी कि उसे आठ लाख रुपये सालाना कर दिया जाये। इस तरह वज़ीर फतह मुहम्मद खां ने कश्मीर को दोबारा फतह किया और मुहम्मद अज़ीम खां को यहां का हाकिम बना कर खुद वह काबुल वापस गया।

मुहम्मद अज़ीम खां राज्य सम्भालते ही बड़ी शान से हकूमत करने लगा। वह अपनी कामयाबी पर इतना फूला कि उस ने दूसरे ही साल रणजीत सिंह को खराज देने से इन्कार कर दिया। महाराजा रणजीत सिंह एक टिड्डी दल फौज लेकर चढ़ आया और बड़ी सख्त लड़ाई हुई। कश्मीरियों

ने तलवार उठा कर ऐसा मुकाबला किया कि महाराज की फौज ने मुंह की खाई और उसे यहां से भागना पड़ा । मगर किसी तरह मुहम्मद अज़ीम खां को यह ख़याल पैदा हो गया कि कश्मीरी पण्डितों ने महाराज रणजीत सिंह को बुलाया था और वह उस की मदद से हिन्दू राज्य कायम करना चाहते थे । उस ने पण्डितों पर तरह तरह के ज़ुल्म तोड़ने शुरू किये । पण्डित बीरबल दर जो मुहम्मद अज़ीम खां की हकूमत में वज़ीर माल थे यहां से भाग कर महाराजा रणजीतसिंह के दरबार में पहुंचे और यहां की कहानी सुनाई । महाराजा कश्मीर पर फिर चढ़ाई करने के लिये तैयार हो गया । उस दफा सिक्ख फौज की जीत हुई । क्योंकि अब कश्मीर के लोग अज़ीम खां के ज़ुल्म से तंग आकर उसके खिलाफ हो गये थे । कश्मीर खालसा सल्तनत में शामिल हो गया । अब सिक्खों ने लूट मार शुरू की कि लोग अफगानों का ज़ुल्म भूल गये ।

शेरे पंजाब महाराजा रणजीत सिंह के राज्य का ढंग अजीब था । जब किसी की शिकायत सुनता तो बहुत नाराज़ होता । मगर जब वह आदमी सामने आता और नज़राना की भारी रकम पेश करता तो महाराजा उस की गलती भूल जाता और उस पर मेहरबान होता । खालसा दरबार से जो सूबेदार यहां आये वह राज्य का काम बिल्कुल नहीं जानते थे । बीरबल दर ने भी ज़ुल्म ढाने में कोई कमी नहीं छोड़ी । जब हरिसिंह नलवा यहां का सूबेदार बन कर आया तो यहां का ज़ुल्म और बढ़ गया और कश्मीर ने विदेशी राज्य का मज़ा फिर से चखा । आज लाहौर से लाखों रुपया के पशमीना और कालीन की मांग आती । कल उस से दुगने की मांग आती । वह लूट मुल्क कहां तक बरदाश्त करता । नतीजा यह हुआ कि कश्मीर बिल्कुल गरीब हो गया । खालसा दरबार से मियां महान सिंह और शेख गुलाम मही-उद्-दीन जैसे अच्छे और नेक सूबेदार भी आये । उन्होंने लोगों का बहुत

खयाल किया मगर उन का ज़माना वहुत थोड़े दिनों रहा और वह कश्मीर की दुर्दशा दूर न कर सके ।

खालसा दरवार और अंग्रेज़ों की ईस्ट इंडिया कम्पनी में जंग छिड़ गई । यह सिक्खों की पहली जंग के नाम से मशहूर है । इस में सिक्खों को सख्त हार हुई और उन्होंने हर्जाने की शकल में कश्मीर का सारा इलाका अंग्रेज़ों को दे दिया । अंग्रेज़ उस वक्त दूर पार के मुल्क का बोझ सम्भालना नहीं चाहते थे । उन्होंने यह इलाका महाराजा गुलाब सिंह के हाथ बेच दिया । दुनिया के इतिहास में ऐसा कारोवार नहीं हुआ था कि पूरी कौम भेड़ वकरियों की तरह बेची गई हो । कश्मीरी अफगानों और सिक्खों के ज़ुल्म से इस कदर पिस चुके थे कि वह उस समझौते के खिलाफ अपनी ज़वान तक न हिला सके ।

अफगानों और सिक्खों के वक्त में कश्मीरियों को वहुत दु:ख उठाना पड़ा । इतिहास में ऐसी मिसालें कम मिलती हैं । इसी से उस ज़माने को कश्मीर में अन्धेरगर्दी का नाम दिया गया है ।

सवालात

१. औरंगज़ेब के मरने के बाद मुगलिया सल्तनत क्यों कमज़ोर हो गई ?
२. कश्मीरियों ने अहमद शाह अब्दाली को कश्मीर फतह करने के लिये क्यों बुलाया ?
३. कश्मीर सिक्खों के हाथ कैसे आया ?
४. सिक्खों ने कश्मीर अंगरेज़ों को क्यों दिया ?
५. सिक्खों और अफगानों का ज़माना अंधेरगर्दी का ज़माना क्यों कहा गया है ?

२०. डोगरा शाही

सन् १८४६ में अङ्गरेज़ों और जम्मू के महाराजा गुलाब सिंह में एक लेन देन हुआ जो "मुआहदा अमृतसर" के नाम से मशहूर है। गुलाब सिंह ने अङ्गरेज़ों को पचहत्तर लाख रुपये दिये और उस के बदले में अङ्गरेज़ों ने महाराजा गुलाब सिंह को कश्मीर का इलाका दिया जो कि सिक्खों को हरा कर उन के कब्ज़ा में आया था। इस तरह अङ्गरेज़ों से कश्मीरी कौम को डोगरा राज्य के हाथ बेच दिया गया।

महाराजा गुलाब सिंह पहले डोगरा राजा थे जिन्हों ने कश्मीर पर राज्य किया। उन के बाद १८५७ में महाराजा रणबीर सिंह गद्दी पर बैठे। उन के बाद १८८५ में उन के लड़के प्रताप सिंह राजा हुये। उन्होंने चालीस वर्ष हकूमत की। सन् १९२५ में उन के भतीजे महाराजा हरिसिंह गद्दी के मालिक हुये। हरिसिंह के राज्य में जम्मू व कश्मीर के अन्दर शख्सी राज्य का खातिमा हो गया।

महाराजा गुलाब सिंह ने १८४६ ई० से पहले ही किश्त-वाड़, भद्रवाह और पुन्छ का इलाका, बाद में लद्दाख, जांस्कार, कर्गिल, बल्तिस्तान यानी अस्कर्दू, खपलू, गिलगित, चिलास, दारेल, पुनियाल, यासीन, होन्ज़ा नगर और चित्राल फतह कर के अपने अधीन कर लिया था। इस लिये हमारी रियासत का नाम "रियासत जम्मू व कश्मीर व अवसाय तिब्बत हा वगैरा" पड़ गया। रकवा में यह रियासत ८४,४०० मुरब्बा मील है। हिन्दोस्तान में कोई दूसरी रियासत इतनी लम्बी चौड़ी नहीं थी।

महाराजा गुलाब सिंह के जमाना में डोगरे लड़ाइयों म लगे रहे। महाराजा ने मुल्क के इन्तिज़ाम की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया। अलवत्ता मुआफियों के वहुत से पट्टे जो पहले हाकिमों ने लोगों को दिये थे महाराजा गुलाव सिंह ने ज़ब्त कर लिये और उस तरह अपने खज़ाने की आमदनी वढ़ाई। मुल्क में गड़वड़ और फसाद रोकने के लिये फौज और पोलीस का इन्तिज़ाम किया गया। लोगों से कह दिया गया था कि वह एक रुपया नज़राना देकर अपनी शिकायत सीधे महाराज के पास ले जा सकते हैं। इस तरह कुछ लोगों की सुनवाई झट पट हो जाती थी।

गुलाव सिंह के बेटे महाराजा रणवीर सिंह ने मुल्क की देखभाल की तरफ ज्यादा ध्यान दिया। कश्मीर एक दूर पड़ा पहाड़ी मुल्क है। रास्ते कठिन और पहाड़ी हैं। लोगों को पड़ोसी मुल्क के साथ व्योपार करने में भी वहुत मुश्किल होती थी। व्योपार को तरक्की देने के लिये रणवीर सिंह ने रास्ते दुरुस्त करने की तरफ ध्यान दिया। उन के ज़माना में अदालतें कायम हुईं। स्कूल और हस्पताल भी खोले गये। मगर ज्यादा तर काम जम्मू और श्रीनगर के शहरों में हुआ। गांव वालों की ज़िन्दगी सुधारने के लिये कुछ नहीं किया गया। महाराजा ने विद्या की तरफ भी ध्यान दिया। लोगों के पास जो पुरानी संस्कृत और फारसी की हाथ से लिखी हुई किताबें मौजूद थीं वह जमा कराईं और उन को ठीक करा कर कई किताबें छपवाईं। इस काम के लिये वहुत से आलिम और पण्डित मुलाज़िम रखे गये। दफ्तरों का कारोवार फारसी में होता रहा! महाराजा ने डोगरी ज़वान को सरकारी ज़वान वनाने की कोशिश की मगर उस में कामयाबी नहीं हुई।

उन के बेटे महाराजा प्रताप सिंह के ज़माना में जेहलम

वेली रोड और बानिहाल कार्ट रोड दो बड़ी सड़कें तैयार हुईं । उन की वजह से रावलपिण्डी और जम्मू के रास्ते से कश्मीर आना जाना आसान हो गया और व्यापार में बडी तरक्की हुई । यात्री हज़ारों की गिनती में कश्मीर आने लगे । लेकिन यहां के लोग चूंकि गरीब थे और इन में शिक्षा भी नहीं थी इस लिए वह उन रास्तों से ज्यादा फायदा न उठा सके । सरकारी दफ्तरों में विदेशी लोगों का बहुत असर था । यह लोग डोगरों, कश्मीरियों, लद्दाखियों या गिलगित के लोगों का ज्यादा खयाल नहीं करते थे । उन लोगों ने अपने असर रसूख से फायदा उठा कर करोड़ों रुपये की जायदादें पैदा कीं । रिश्वत का बाज़ार गर्म किया और वे लूट खसूट का रुपया बाहिर ले गये । रियासत के गरीब बाशिन्दे मुंह ताकते रहे । यही हाल व्योपार का भी था । विदेशी लोगों ने यहां से बहुत फायदा उठाया । रियासत के बाशिन्दे अपनी गरीबी की वजह से सिर्फ छोटी छोटी दुकानें खोल सके । मगर बाहिर से आये हुये पूंजीपतियों से मुकाबला न कर सकते थे । इस समय जम्मू शहर में जितने लोग बसते हैं उन में बहुत से बाहिर के आये हुये हैं । जम्मू के व्योपारी लोग जो असल डोगरे थे सिर्फ एक दो मुहल्लों में बसते हैं और उन की हालत भी अच्छी नहीं । जंगलात के ठेके भी विदेशी लोगों को मिलते थे । उन्हों ने तो करोड़ों रुपया कमाया मगर कश्मीर के पुश्तनी बाशिन्दे लाखों की गिनती में गरीब और अनपढ़ रहे और तरह तरह की बीमारियों में फंसे रहे । विदेशी वज़ीरों और बड़े बड़े अफसरों ने हालात ठीक करने की कोशिश नहीं की । बहुत से धनी लोग कश्मीर आते, यहां की खूबसूरती देख कर खुश होते और कोशिश करते कि ज़मीन मिल जाये । अगर उन को ज़मीन मिल जाती तो वह कोठी बना कर यहीं रह जाते ।

महाराजा हरिसिंह के ज़माने में पुश्तनी बाशिन्दा होने का कानून पास हुआ । इस कानून की वजह से कोई विदेशी रियासत में छोटी या बड़ी नौकरी हमेशा के लिये नहीं ले सकता था । उन के मुकाबला में पुश्तनी बाशिन्दों को नौकरियों पर ज्यादा हक हो गया । फिर भी वज़ीर और कुछ बड़े बड़े अफसर बाहिर से आते रहे ।

महाराजा हरिसिंह के समय में लोगों के दिलों में आज़ादी की लगन पैदा हुई और जनता ने अपनी हालत सुधारने के लिये करवट ली । यहां के लोग अंगरेज़ी राज्य और शख्सी हकूमत के लूट खसूट से परेशान हो गये थे । गांव के लोग दु:ख और गरीबी में जकड़े हुये थे । ज्यादा तर लोग अनपढ़ थे । वह जागीरदारों, पूंजीपतियों और महाजनों के चंगुल में फंसे हुए थे । बच्चे, जवान, बूढ़े, मर्द और औरतें गरीबी की वजह से बीमार रहते थे । उन की देख भाल और दवा दारु के लिए कोई बन्दोबस्त नहीं था । चार पांच सौ गांव के लिए तहसील के हैडक्वार्टर पर एक दवाखाना होता था जिसे हस्पताल कहते थे । वह केवल दिखावे के लिए था । हज़ारों बच्चे पैदा होते ही मर जाते थे क्योंकि पढ़ी लिखी दाइयों का कहीं इन्तिज़ाम नहीं था । भद्रवाह और पाडर का इलाका भयानक बीमारियों का शिकार हो चुका था । लेकिन यहां भी बीमारी की रोक थाम का कोई इन्तिज़ाम नहीं किया गया ।

रियासत की खराब हालत देख कर कुछ पढ़े लिखे नौजवानों ने सोचा कि शख्सी राज्य बुरी चीज़ है । उन्हों ने देखा कि महाराजा और उन के दरबारी और रियासत के जागीरदार ठाठ से रहते हैं । खाने पीने और असर रसूख रखने वाले बाहिर के लोग भी मज़े में हैं मगर रियासत के गरीब लोग और मामूली आमदनी पाने वालों की हालत रोज़ बरोज़ बिगड़ती जा रही है । जो लोग इस तरह सोचने के

उन की एक छोटी सी जमात तय्यार हो गई और धीरे धीरे शख़्सी राज्य के खिलाफ आन्दोलन ज़ोर पकड़ने लगा ।

सवालात

१. कश्मीर की रियासत महाराजा गुलाब सिंह को कैसे मिली ?

२. डोगरा राजाओं के नाम बताइये ?

३. महाराजा प्रताप सिंह ने कौन सी दो बड़ी सड़कें बनवाई ?

४. डोगरा शाही में कश्मीरियों की हालत कैसी रही ?

५. डोगरा राज्य में कश्मीर में कौन से नये इलाके मिलाये गए ?

२१. आज़ादी के लिये दौड़ धूप

इस में शक नहीं कि डोगरा महाराजाओं के ज़माना में देश के अन्दर शान्ति रही । सड़कें बनीं और डाक तार का इन्तिज़ाम हुआ । इस तरह रियासत के अलग अलग इलाके एक लड़ी में बन्ध गए । मगर शख़्सी हकूमत और जागीरदारी की लूट खसूट अपनी जगह पर रही । महाराजा गुलाब सिंह को जो दौलत हासिल हुई वह उन्होंने शाही महल बनवाने और फौजों की तैयारी में लुटा दी । महाराजा रणवीरसिंह ने भी लाखों रुपये महल बनवाने में खर्च किए । जनता को भला इस से क्या फायदा पहुंच सकता था ।

एक तरफ राजा और जागीरदारों ने लोगों की गरीबी बढ़ाई तो दूसरी तरफ बाहिर से आने वालों ने भी व्योपार और नौकरियों में बहुत ज्यादा हिस्सा पाया । रियासत के पढ़े लिखे लोग जो खुद भी नौकरियां करना चाहते थे, जब देखते कि बाहिर वाले यह नौकरियां पा जाते हैं तो बुरा मानते

थे । दस्तकारों और काश्तकारों की हालत भी बहुत खराब थी ।

लोग अंगरेज़ों के पास जा कर शिकायत करते मगर भला अंगरेज़ हाकिमों को गरीब लोगों की फिकर क्यों होती । लोगों ने कश्मीर दरबार की बुराइयां अंगरेज़ रेज़ीडैंट और वायसराय से भी बयान कीं मगर, कोई सुनवाई नहीं हुई । अंगरेज़ अफसरों और हाकिमों की राजा लोग और उन के वज़ीर खूब सेवा टहल करते थे । उनके ठहरने के लिए कश्मीर में अच्छे २ बंगले बनवाये गये थे । होटल थे, घाट थे । उनके शिकार के लिए जंगल बन्द कराये जाते थे । ज़मींदार उन जंगलों से घास भी नहीं ला सकते थे । राजाओं नवाबों और अंगरेज़ अफसरों को जंगल में शिकार खेलने की खुली छुट्टी थी । अगर कोई बड़ा अफसर जैसे लाट साहिब कश्मीर आते तो सैंकड़ों लोग बेगार में पकड़े जाते । उन से बिना मज़दूरी काम लिया जाता था । अफसरों के कुत्ते भी आदमियों पर लाद कर एक जगह से दूसरी जगह ले जाए जाते थे । कभी कभी बेगार करने वाले मज़दूरों को जंगल के जानवर खा जाते । मगर हाकिम लोगों को इस बात की परवाह न होती थी । लाट साहिब, राजा साहिब और उन के दोस्त जंगल में मंगल करते थे ।

जब बेगारी के खिलाफ आवाज़ उठी तो महाराजा हरिसिंह के ज़माना में उस के खिलाफ हुक्म निकला और कहा गया कि जो लोग बिना मज़दूरी काम लेंगे उन्हें सज़ा दी जाएगी । रियासत से बाहिर के लोगों पर भी ठेकों और नौकरियों के हासिल करने में पाबन्दी लगी । मगर फिर भी अंगरेज़ अपना पंजा मज़बूत करने के लिए बाहिर से अफसर और वज़ीर भेजते थे । जागीरदारों सरमायादारों की लूट खसूट में कोई कमी नहीं हुई । शाही जलसों और जलूसों पर पानी की तरह रुपया बहाया जाता था । जनता की गरीबी और बीमारी

दूर करने के लिए कुछ नहीं किया गया । यह बुरा हाल देख कर लोगों को वहुत दुःख होता था । रियासत में कश्मीरी लोगों को निहत्था रखा गया था । उन्हें फौज में भरती नहीं किया जाता था । डोगरा राजे कश्मीरी लोगों पर भरोसा नहीं करते थे । जनता पर दुःख का बोझ वढ़ता गया ।

आज से कई वर्ष पहिले १९३१ में इस ज़ुल्म के खिलाफ़ कश्मीर के लोगों में वहुत गुस्सा वढ़ गया । लोग डोगरा राज्य क खिलाफ बोलने लगे । अपनी शिकायतें खुलमखुला बयान करने लगे । कुछ पढ़े लिखे नौजवान एक साथ बैठ कर सोचने लगे कि हालत कैसे वदलेगी । उन्हें क्या करना चाहिए । शुरू शुरू में उन नौजवानों ने मुस्लिम कांफ्रैंस वनाई । मुसलमान कश्मीरी ज्यादा दुःखी थे । इस लिये उन्होंने अपनी मांगें पहले उठाईं । मगर जल्द ही उन्हें पता चल गया कि रियासत के हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख सभी मिल कर लोगों की हालत सुधारें तो ज्यादा अच्छा होगा । रियासत के तमाम लोगों की हालत अच्छी होगी और तव ही मुसलमान लोगों की हालत अच्छी होगी । इस लिये १९३८ में नैशनल कान्फ्रैंस बनी जिस में सभी लोग शामिल हुए । इस तरह हमारी आज़ादी की तहरीक १९३१ में शुरू हुई और १९३८ में वहुत फैल गई ।

नैशनल कान्फ्रैंस ने शुरु ही से ज़िम्मादार हकूमत की मांग की । मतलब यह था कि आम लोगों को भी अपनी वात कहने और कानून वनाने का कुछ हक मिले । वड़ी मुश्किल से महाराजा एक असम्वली वनाने पर राजी हुआ । असम्वली वनी मगर उस में सरकारी मेम्बरों की गिनती ज्यादा थी । नैशनल कान्फ्रैंस के मेम्वर लोगों की हालत अच्छी करने के लिये असम्वली में जो वात कहते वह सरकारी मेम्वरों की वजह से कानून न होती थी । नैशनल कान्फ्रैंस बराबर आवाज़

उठाती रही । लोग इस की आवाज़ सुनते थे और राजा के खिलाफ होते जा रहे थे । हकूमत ने मजबूर हो कर नैशनल कान्फ्रैंस के मेम्बरों में से दो वज़ीर बनाये । मगर डेढ़ साल के वाद एक वज़ीर अलग हो गया क्योंकि नैशनल कान्फ्रैंस ने देखा कि इस के वज़ीरों को ठीक तरह का काम करने का मौका नहीं दिया जाता है ।

उसके वाद "कश्मीर छोड़ दो" का आन्दोलन शुरू हुआ । मांग यह थी कि पूरा अधिकार लोगों के नुमायन्दों को दिया जाये और शख्सी हकूमत खत्म हो । हकूमत ने हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख तमाम लीडरों को गिरिफ्तार किया । उस वक्त हिन्दोस्तान भर में आज़ादी की तहरीक वढ़ रही थी । कश्मीर की हकूमत को पीछे हटना पड़ा । उस ने लीडरों को जेल से छोड़ा और उन से समझौता की वातचीत शुरू की ।

समझौता की वातचीत हो रही थी कि पाकिस्तान की तरफ से १९४७ को कवायली हमला हुआ । उस हमला में पाकिस्तान की हकूमत और अङ्गरेज़ों का हाथ था । महाराजा की हकूमत घवरा गई । उस वक्त नेशनल कान्फ्रैंस के लीडरों ने हकूमत की वागडोर सम्भाली और लोगों की मदद से कबायली हमले का मुकावला किया ।

नैश्नल कान्फ्रैंस के लीडर वगैर रुपया पैसा और हथियार के मैदान में उतरे थे । उन्हों ने लोगों को उभारा । हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख एक हो कर अपना वतन वचाने निकले । होम गार्डज़ के दस्ते वनाये गये जो मोर्चा पर लड़ने गये । कश्मीर की हकूमत ने हिन्दोस्तानी हकूमत से मदद मांगी और इस में शक नहीं कि आड़े वक्त में हिन्दोस्तान ने फौज, रुपया और गल्ला से हमारी पूरी मदद की । हमारा वतन दुश्मन के कब्ज़ा में आने से वच गया । हकूमत नैशनल कान्फ्रैंस

के हाथों में पक्के तौर से आ गई । हम ने हिन्द से इलहाक किया और लाखों रियासती बाशिन्दों को आज़ादी मिली ।

सवालात

(१) हमारी आजादी की तहरीक कब शुरू हुई और कैसे ?
(२) रियासती बाशिन्दे डोगरों के ज़माना में तरक्की क्यों नहीं कर सके ?
(३) अंगरेज़ अफ़सर कश्मीरी लोगों की शिकायत क्यों नहीं सुनते थे ?
(४) कश्मीर की हकूमत किस तरह लोगों के हाथ में आई ?
(५) कबायली हमला कब हुआ और उस का मुकाबला किस तरह किया गया ?
(६) नैशनल कान्फ्रैंस किस लिए बनी थी ?

२२. हिन्दोस्तान की तहरीक आज़ादी

अठारहवीं सदी के बीच में अंग्रेज़ों ने हकूमत शुरू कर दी थी । वह तिजारत करने आये थे । उन्हों ने अपनी कोठियां बनाईं । उन की रक्षा के लिये सिपाही रखे गये और धीरे धीरे वह हाकिम बन बैठे । हिन्दोस्तान में फूट पड़ी हुई थी । राजा और नवाब छोटी छोटी हकूमतें बनाये बैठे थे । आपस में लड़ते थे और आम लोगों को दुःखी रखते थे । अंग्रेज़ ऐसे मुल्क से आये थे जहां मशीन ने तरक्की की थी । यह लोग सन्नत और कारोबार में आगे बढ़े हुए थे । हिन्दोस्तान पिछड़ा हुआ था । अंग्रेज़ों ने इस बात से फायदा उठाया और लोगों में अपनी धाक बिठा ली । तब वह राजाओं और

नवाबों के लड़ाई झगड़े में कभी एक की मदद करते कभी दूसरे की और अपनी ताकत वढ़ाते जाते ।

हिन्दोस्तान के लोगों को जल्द ही मालूम हो गया कि यह विदेशी व्यापारी किसी के दोस्त नहीं । यह सिर्फ अपना फायदा चाहते हैं । मगर लोगों में इतनी ताकत नहीं थी कि उन्हें निकाल वाहर करते । जहां अङ्गरेज़ों और जागीरदारों की लूट खसूट वढ़ जाती वहां किसान वगावत करते, मगर हार जाते । धीरे धीरे अङ्गरेज़ों की तिजारती कम्पनी यानी ईस्ट इण्डिया कम्पनी का असर वहुत वढ़ा । उस की लूट खसूट भी वढ़ी । लोगों में वहुत बेचैनी पैदा हुई और कुछ राजाओं और नवाबों को भी खयाल हुआ कि थोड़े दिनों में उन के हाथ से हकूमत की वाग डोर विल्कुल छिन जायेगी । ऐसे में अङ्गरेज़ के खिलाफ वहुत वड़ी वगावत हुई जिसे आजादी की पहली लड़ाई कहते हैं । अङ्गरेज़ों ने इसे १८५७ का गद्दर कहा था । इस में हिन्दू, मुसलमान सभी शरीक हुये थे ।

१८५७ की वगावत फौज से शुरू हुई थी । १० मई को मेरठ छावनी के सिपाहियों ने वगावत का झण्डा उठाया । वह देहली पहुंचे और वहां वहादुरशाह को हिन्दोस्तान का वादशाह वनाने का ऐलान किया गया । यह वगावत लखनऊ और कानपुर में भी फैली । झांसी की रानी लक्ष्मी वाई ने भी अङ्गरेज़ों के खिलाफ तलवार उठा ली और वह वड़ी वहादुरी से लड़ी । शुरू में जगह जगह अङ्गरेज़ों को हार हुई । मगर आखिर में रानी झांसी और वहुत से वहादुर जरनैल मारे गये । वहादुर शाह को पकड़ लिया गया और अङ्गरेज़ों ने अपने राज्य को पक्का कर लिया और कुछ दिनों के लिये आज़ादी की लड़ाई धीमी पड़ गई ।

अंग्रेज़ों को अपने राज्य का काम चलाने के लिए पढ़े लिखे हिन्दोस्तानियों की ज़रूरत पड़ती थी । तिजारत और कारोबार के लिये उन्हें तार और सड़कें बनानी पड़ीं । इन बातों से हिन्दोस्तान में योरुप की शिक्षा पहुंची । पढ़े लिखे लोगों के दिल में खयाल हुआ कि उन्हें भी हकूमत में थोड़ा बहुत हक मिलना चाहिये । आखिर कार १८८५ में उन लोगों ने एक सभा बनाई जिस का नाम नैशनल कांग्रेस था । उस सभा का शुरू शुरू में यह काम था कि अंग्रेज़ी हकूमत के सामने छोटी छोटी मांगें रखे जिस से कि बड़ी बड़ी नौकरियों में भी हिन्दोस्तानी लोगों को हिस्सा मिले ।

कांग्रेस में लोगों की गिनती बढ़ने लगी । इस में हिन्दोस्तानी व्योपारी और कारखानादार, वकील, डाक्टर और कुछ दिनों बाद किसान और मज़दूर भी आ गये । तब कांग्रेस का ज़ोर बढ़ा और १९०७ ई० में ही एक लीडर बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि आज़ादी हमारा पैदाइशी हक है । इस बात पर अंग्रेज़ों ने उन्हें सात वर्ष की सज़ा दी । अंग्रेज़ अपनी फौज और पोलीस से लोगों को दबाते थे और लोग जगह जगह जलसे जलूसों में अंग्रेज़ों के खिलाफ आवाज़ उठाते । १९१९ में पंजाब में अंग्रेज़ी राज्य के खिलाफ ज़बरदस्त आवाज़ उठी । अमृतसर के जलियां वाला बाग में जलसा हो रहा था कि एक अंग्रेज़ जरनैल ने निहत्थे लोगों पर मशीन गन से गोली चलाई जिस में बच्चे, बूढ़े और औरत मर्द मारे गये । जलियां वाला बाग के शहीदों ने आज़ादी के पौदे को अपने खून से सींचा और खुद अमर हो गये ।

इस ज़ुल्म के खिलाफ मुल्क भर में आवाज़ उठी और गांधी जी की रहनुमाई में एक ज़बरदस्त तहरीक शुरू हुई जिसे बाईकाट की तहरीक कह सकते हैं । लोगों में यह प्रचार किया गया कि अंग्रेज़ों से लेन देन न करें । उस के मुल्क

कपड़ा न पहने । स्कूलों और दफ्तरों का वाईकाट करें, मुल्क के लोग चरखा कातें और अपनी ज़रूरत खुद पूरी करें । १९२१ में बड़ी ज़बरदस्त तहरीक उठी। इस में किसानों ने भी हिस्सा लिया । हिन्दू मुसलमान सब एक थे । आज़ादी की तहरीक का फैलाव बढ़ता ही गया ।

१९३० में कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में रावी के किनारे हुआ। पण्डित जवाहर लाल नेहरू इस जलसे के प्रधान थे । इसी इजलास में ऐलान हुआ कि हिन्दोस्तान के लोगों की मांग मुकम्मल आज़ादी है और वह इस से कम किसी चीज़ पर राज़ी नहीं होंगे । अंग्रेज़ हिन्दोस्तान छोड़ दें । हिन्दोस्तानी लोग खुद हकूमत करेंगे । इस ऐलान से मुल्क में जोश पैदा हुआ । कांग्रेस के अन्दर किसान मज़दूर बड़ी गिनती में आने लगे । धीरे २ किसानों और मज़दूरों की सभायें बनीं जो जागीरदारों और कारखानादारों से अपना हक मांगतीं और आज़ादी की लड़ाई में भी मदद देतीं ।

जनता की तहरीक बढ़ने लगी तो फिर अंग्रेज़ों ने "फूट डालो और हकूमत करो" की पालिसी बड़ी तेज़ी से चलाई । उन के इशारे पर हिन्दू सभा और मुस्लिम लीग के लीडरों ने लोगों को समझाना शुरु किया कि हिन्दू मुसलमान साथ साथ नहीं रह सकते । यह बात ठीक नहीं थीं । सैंकड़ों वर्ष से हिन्दू मुसलमान साथ साथ रहते थे मगर चूंकि गरीब आदमी मुश्किल में थे । मुल्क तरक्की नहीं कर रहा था । बहुत से लोगों को धोखा हुआ कि शायद मुसलमान हिन्दू को नुक्सान पहुंचा रहा है और हिन्दू मुसलमान को । सच्ची बात यह थी कि अंग्रेज़ दोनों को नुक्सान पहुंचा रहा था और उन में फूट भी डाल रहा था ।

अंग्रेज़ की फूट डालने वाली पालिसी से हिन्दू मुसलमान एक दूसरे से दूर हुए । मगर फिर भी जब १९३९ में योरुप

में दूसरी बड़ी लड़ाई शुरू हुई तो हिन्दोस्तान में भी बड़ी बेचैनी पैदा हुई और अंग्रेज़ों के खिलाफ नफरत बढ़ी। १९४२ में उन के खिलाफ तहरीक उठी। कांग्रेसी लीडर गिरिफ्तार कर लिए गए, मगर जंग के बाद उन्हें जेल से छोड़ना पड़ा। उस वक्त फिर बगावत की सूरत पैदा हो गई थी। पोलीस और फौज, हवाई और समुद्री बेड़े के सिपाही हड़ताल कर रहे थे। ऐसे में अंग्रेज़ों ने इसी बात में अपनी भलाई देखी कि मुल्क की हकूमत हिन्दोस्तानी लीडरों के हवाले करे। १५ अगस्त १९४७ को मुल्क की आज़ादी का एक ऐलान हुआ।

मगर जाते जाते अंग्रेज़ों ने हमारे मुल्क को दो हिस्सों में बांट दिया। इस तरह हिन्दोस्तान और पाकिस्तान दो मुल्क बने। जाते जाते अंग्रेज़ों ने यहां दंगा फसाद कराया जिस से बे गुनाहों का खून बहा और मुल्क को फूट की बड़ी भारी कीमत देनी पड़ी।

हिन्दोस्तान आज़ाद हुआ तो कश्मीर को भी अंग्रेज़ों से छुटकारा मिला और हिन्दोस्तान की तहरीक से हमारी तहरीक में ताकत पैदा हुई और हम ने शख्सी हकूमत को भी खत्म कर दिया। कश्मीर में हिन्दू मुसलमान एक थे। उन में फूट नहीं पड़ी थी। इसलिए नैशनल कान्फ्रैंस की सरकार और हमारी असम्बली ने फैसला किया कि रियासत हिन्द ही में रहेगी और हिन्दोस्तानी भाईयों की मदद से तरक्की करेगी।

सवालात

(१) आज़ादी की पहली लड़ाई कब हुई?
(२) नैशनल कान्फ्रैंस कब और क्यों बनी?
(३) अंग्रेज़ों ने हमारे अन्दर फूट क्यों डाली?
(४) हिन्दोस्तान कब आज़ाद हुआ?

२३. तरक्की के रास्ते पर

१९३१ में कश्मीर की कौमी तहरीक की बुनियाद पड़ी थी। वैसे तो लोगों में बेचैनी पहले से थी ही पर इस साल लोगों का दबा हुआ गुस्सा फूट पड़ा। हकूमत ने मार पीट की। लोगों ने जलूस निकाले तो इन लीडरों को गिरिफ्तार कर लिया गया। उसी हंगामे में एक शख्स अब्दुल कादिर भी गिरिफ्तार किया गया। इस का मुकद्दमा जेल में हो रहा था। लोगों ने मांग की कि मुकद्दमा खुली अदालत में हो। हज़ारों लोग नारे लगाते हुए और हकूमत की फौज और पोलीस के टिड्डी दल को चीरते हुये जेल के दरवाज़े पर जा पहुंचे। मनमानी करने वाली हकूमत को यह बात बहुत बुरी लगी, क्योंकि इस की साख गिरती थी। इस लिए उस ने गोली चलाने का हुक्म दिया और बहुत से लोग शहीद हो गये। यह १३ जुलाई १९३१ की घटना है। इसी याद में हम हर साल शहीदों का दिन मनाते हैं।

गोली चलाने से लोगों में गम और गुस्सा की आग भड़क उठी और जगह जगह जलूस निकलने लगे, और हकूमत के खिलाफ नारे लगे। कुछ लोगों ने कोशिश की कि यह गुस्सा हकूमत के खिलाफ नहीं बल्कि हिन्दू आबादी के खिलाफ भड़के। मगर इस में ज्यादा कामयाबी नहीं हुई। लोग समझते थे कि असल मुजरिम हकूमत है। हकूमत ने जब देखा कि ज़ुल्म से आग और भड़क रही है तो इस ने लोगों के लीडरों को जेल से छोड़ दिया और इन से समझौते की बात चीत शुरू की। लीडरों ने शहीदों का नाम लेकर कसम खाई कि

हम उस वक्त तक लड़ते रहेंगे जब तक यही पोलीस और फौज जिस ने गोली चलाई थी, शहीदों के मज़ार पर आ कर खुद सलामी न दे ।

शुरू के दिनों में मुसलमानों की अलग एक कान्फ्रेंस थी । वह मुसलमान लीडर जो बाद में नैशनल कान्फ्रेंस में आये, मुस्लिम कान्फ्रेंस में काम करते थे । इस समय तक यह विचार पक्का नहीं हुआ था कि मुसलमानों की हालत भी इसी वक्त अच्छी होगी जब पूरी कौम की हालत अच्छी हो । डोगरा शाही ने चूंकि मुसलमानों पर ज्यादा ज़ुल्म किया था इसलिये पढ़े लिखे मुसलमानों ने अपनी सभा बना ली थी । मगर ज्यूं ज्यूं तहरीक बढ़ती रही और यहां के लीडरों पर हिन्दोस्तान की तहरीक का असर पड़ा फिर उन्हें यह विचार आया कि सब को मिल कर लड़ना चाहिये । हिन्दू और सिक्ख भी मुसलमानों की तरह मुश्किल में हैं । ज़ालिमों के खिलाफ सब एक हों तो अच्छा है । अलग अलग रहें तो हकूमत इन की कमज़ोरी से फायदा उठाएगी और इन में ज्यादा फूट डालेगी । इस लिये १९३८ में लीडरों ने फैसला किया कि सारी कौम की तनज़ीम बने । इस तनज़ीम का नाम आल जम्मू व कश्मीर नैशनल कान्फ्रेंस रखा गया । तब से यह तनज़ीम आज़ादी की लड़ाई में रहनुमाई कर रही है ।

लोग अङ्गरेज़ों और राजाओं के खिलाफ लड़ रहे थे मगर किस लिए ? आजादी हासिल करने के लिए । वह आज़ादी कैसी होगी ? इस से लोगों को क्या मिलेगा ? यह सवाल लोगों के दिलों में उठने लगे । १९४४ में नैशनल कान्फ्रेंस ने आज़ादी का एक नक्शा बनाया जिस में बताया गया था कि मज़दूरों, किसानों, मुलाज़िमों, दस्तकारों, ताजिरों, औरतों और बच्चों को आज़ादी से क्या हासिल होगा । हम आज़ादी के बाद किस किस्म की दुनिया बनायेंगे ! यह प्रोग्राम "नया

कश्मीर" के नाम से मशहूर हुआ ।

योरुप की दूसरी लड़ाई के बाद हिन्दोस्तान भर में आज़ादी की तहरीक ज़ोरों पर उठी । हमारी रियासत में भी १९४६ में "कश्मीर छोड़ दो" की तहरीक शुरू हुई । इस नारे का मतलब यह था कि अङ्गरेज़ यहां से जायें और शख्सी राज्य खत्म हो । पहले पहल कुछ लोगों का खयाल था कि डोगरा लोग ज़ुल्म करते हैं । मगर तजरबे की रोशनी में उन्हों ने देखा कि मनमानी ज्यादा शख्सी हकूमत की है । राजा को सब अधिकार देना ठीक नहीं । लोग खुद अपने राज्य का काम करें । "कश्मीर छोड़ दो" का मतलब यही था कि अङ्गरेज़ी साम्राज्य और राजा की मनमानी खत्म हो, उस की जगह लोक राज्य कायम हो ।

सन् १८४६ ई० से महाराजा गुलाब सिंह ने कश्मीर अङ्गरेज़ों से खरीदा था और डोगरा राजा समझते थे कि उन्हों ने हमेशा के लिये कश्मीरियों को भी खरीद लिया है । मगर जब उन्हों ने "कश्मीर छोड़ दो" का नारा सुना तो उन के दिल में डर समाया कि अब उन की मनमानी करने का वक्त खत्म हो रहा है । उन्हों ने नेशनल कान्फ्रेंस के लीडरों को गिरिफ्तार किया । गोलियां चलाईं, लोगों पर ज़ुल्म किया । मगर "कश्मीर छोड़ दो" की तहरीक बढ़ती रही ।

जब १५ अगस्त सन् १९४७ को हिन्दोस्तान आज़ाद हुआ तो आशा बन्धी कि कश्मीर की हालत भी ठीक होगी । अङ्गरेज़ नहीं चाहते थे कि कश्मीर उन के कब्ज़ा से निकल जाये । इस लिये उन्होंने पाकिस्तान की तरफ से हमला कराया । पाकिस्तान की हकूमत भी इस हमला के पीछे थी मगर नैशनल कान्फ्रेंस की रहनुमाई में कश्मीर के लोगों ने हमलावरों को मुंह तोड़ जवाब दिया । हिन्दोस्तानी फौजों ने उन की मदद की और हमलावरों की हार हुई ।

जब दुश्मन की फौज श्रीनगर के करीब आ पहुंची थी उस वक्त महाराजा बहादुर जम्मू चल दिये। रियासत का इन्तिज़ाम नैशनल कान्फ्रेंस ने सम्भाला और पहली बार लोगों की हकूमत कायम हुई।

सवालात

(१) आज़ादी की तहरीक कब शुरू हुई?
(२) शहीदों का दिन किस लिये मनाया जाता है।
(३) नया कश्मीर का प्रोग्राम कब बना?
(४) 'कश्मीर छोड़ दो' का क्या मतलब था?
(५) लोगों की हकूमत कब और कैसे बनी?

२४. नया कश्मीर

कश्मीर में शायद ही कोई ऐसा आदमी हो जिस ने नया कश्मीर ज़िन्दाबाद का नारा न सुना हो। वह बच्चे बड़े खुश किस्मत हैं जिन्हों ने ऐसे वक्त में जन्म लिया जब कि रियासत के लोग शख्सी राज्य खत्म कर के "नया कश्मीर" की बुनियाद रख रहे थे।

आज़ादी हासिल करने के बाद हर शख्स के कन्धों पर नयी ज़िम्मादारियां आती हैं। यह नयी ज़िन्दगी बनाने की ज़िम्मादारी जिस में तमाम लोग बराबर के हिस्सेदार हैं, अपनी किस्मत के आप मालिक हों और अपना भला बुरा समझते हों। जिस तरह एक मकान बनाने से पहले उस का नक्शा बनाया जाता है इसी तरह आज़ाद ज़िन्दगी बसर करने से पहले जरूरी होता है कि उस का नक्शा बनाया जाये।

लोग यह जानें कि उन्हें क्या करना है । सन्नत, दस्तकारी, तालीम, शिक्षा, दवा, इलाज, कानून, हकूमत हर चीज़ के बारे में सोचना समझना पड़ता है । नैशनल कान्फ्रेंस ने १९४४ में इसी क़िस्म का नक्शा बनाया था और इसी को "नया कश्मीर" कहते हैं ।

नया कश्मीर का प्रोग्राम बनाते वक्त जो सब से बड़ी बात ध्यान में रखी गई है वह यह है कि तमाम इन्सान बराबर हैं । किसी को यह हक नहीं कि वह ज़बरदस्ती दूसरे पर हकूमत करे । हर कौम को आज़ाद रहने का हक है और हर शख्स को अपनी मेहनत से कमाने और खाने का हक है । तमाम लोगों की भलाई इसी में है कि वह दूसरों की भलाई और उन की आज़ादी का खयाल करें ।

"नया कश्मीर" का असूल यह है कि जो इनसान पैदा हुआ है उस को पेट भर कर खाना, पहनने को कपड़ा और रहने को मकान मिलना चाहिये । बीमार हो जाये तो उस की देख भाल के लिये हस्पताल हो । बच्चों को लिखने पढ़ने की सुविधा मिले । बच्चों को इस बात पर बड़ी खुशी होगी कि उन के मां बाप आराम से रहें, उन का घर अच्छा हो, उन के पास रोज़गार हो और वह अच्छी तरह घर बार चलाते हों । चूंकि हमारी रियासत में सब से ज्यादा आबादी किसानों की है इस लिये लोगों की हालत अच्छी बनाने के लिये नया कश्मीर में सब से ज्यादा ज़ोर जागीरदारी खत्म करने पर दिया गया है और जब नैशनल कान्फ्रैंस की हकूमत बनी तो जागीरदारी खत्म करने का कानून पास किया गया । किसान दिन रात मेहनत करता है और बड़ी मुश्किल से खाने के लिये गल्ला पैदा करता है और बड़े बड़े ज़मींदार बगैर हाथ पैर हिलाये पैदावार में हिस्सा लेते थे । नया कश्मीर ने यह असूल रखा कि जो खेत बोये वही उसे काटे और पैदावार पर उसी का

हक हो ।

मुल्क की तरक्की और यहां के लोगों की भलाई के लिये ज़रूरी है कि सन्नत और दस्तकारी तरक्की करे । हमारी रियासत जंगल की दौलत से मालामाल है। ज़मीन के अन्दर धात की कानें हैं । उन से ज़रूरत की चीज़ें बन सकती हैं । सन्नत और दस्तकारी को तरक्की देने का एक तरीका तो यह है कि पैसे वाले लोग इन चीज़ों को अपने कब्ज़ा में रखें, गरीब दस्तकारों और मज़दूरों से काम लें और उन की मेहनत से लाभ उठायें । दूसरी तरक्की यह है कि दस्तकार और मज़दूर अपनी मेहनत का पूरा फल पायें और बड़े बड़े लोग उनकी मेहनत पर ऐश न करें । "नया कश्मीर" में दूसरे तरीका को अपनाया गया है । इस में कहा गया है कि मज़दूरों को इतनी मज़दूरी दी जायेगी कि वह इज्ज़त और आराम की जिन्दगी बसर कर सकें । हकूमत बड़े बड़े कारखाने अपने इन्तिज़ाम में चलायेगी । उस की ज़िम्मादारी होगी कि मेहनत करने वालों को अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने का मौका दे और दस्तकारों की खुशहाली का इन्तिज़ाम करे ।

नया कश्मीर में इस असूल पर ज़ोर दिया गया है कि मेहनत मज़दूरी के काम में कोई किसी का दास नहीं । हाकिम और हकूमत का भेद मिटना चाहिये । सब लोगों को एक दूसरे की मदद करनी चाहिये । शहर और गांव में दस्तकारों और काश्तकारों की अंजुमनें बनें जिस के मेम्बर एक दूसरे की मदद करते हों और एक दूसरे की ज़रूरत में काम आते हों । उन को "इमदाद बाहमी" की अन्जुमन कहते हैं ।

नया कश्मीर में कहा गया है कि बच्चों को तालीम पाने का हक है । पहले ज़माने में वही बच्चे तालीम पाते थे जिन के मां बाप अमीर हों । मगर नया कश्मीर के प्रोग्राम में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि तमाम बच्चों को तालीम

मिलनी चाहिये । इस के लिये हकूमत ज्यादा स्कूल खोलेगी और तालीम हासिल करना आसान बनायेगी । इस बात को सामने रख कर नेशनल कान्फ्रेंस की सरकार ने सरकारी स्कूलों, कालेजों और युनिवर्सिटी में बच्चों की तालीमी फीस माफ कर दी है ।

नया कश्मीर के प्रोग्राम में कहा गया है कि औरतों को मर्दों के बराबर हक मिलना चाहिये । उन को भी तालीम दी जाये । उन के सेहत की देख भाल का इन्तिज़ाम किया जाये । उन को नौकरियां मिलें और उन को भी असम्बली के चुनाव में हिस्सा लेने और मेम्बर बनने का हक मिले । इस वक्त लड़कियों में तालीम फैलाने की कोशिश की जा रही है । दवा इलाज के लिए भी शहरों और गांव में दवाखाने खोले जा रहे हैं क्योंकि किसी कौम की तरक्की के लिये ज़रूरी है कि लोग तन्दरुस्त हों । नया कश्मीर में औरतों, बच्चों और तमाम दूसरे लोगों के लिये दवा और डाक्टर की ज़रूरत मुहय्या करना सरकार का फर्ज़ माना गया है ।

नैशनल कांफ्रेंस पूरी कौम की जमात है । वह शख्सी हकूमत और बड़े लोगों की मुनाफाखोरी के खिलाफ है । वह रियासत में आज़ादी और बराबरी का रहन सहन बनाना चाहती है । इसीलिये "नया कश्मीर" के नाम से जो प्रोग्राम बनाया गया है उस में मेहनत करने वाली जनता का खयाल रखा गया है । बच्चों को चाहिए कि नया कश्मीर के प्रोग्राम को अच्छी तरह समझें । मज़दूरों, किसानों, दस्तकारों और तमाम मेहनत करने वाले लोगों की भलाई के लिये काम करें । ज़िराअत, सन्नत, दस्तकारी, शिक्षा और सेहत की तरक्की में अपना हिस्सा अदा करें और "नया कश्मीर" बना कर वह प्रण पूरा करें जो शहीदों के सामने किया गया था ।

सवालात

(१) नया कश्मीर का प्रोग्राम कब बना ?

(२) नया कश्मीर के प्रोग्राम में किन किन बातों का ख्याल रखा गया है ?

(३) नया कश्मीर में किसानों को क्या हक मिला है

(४) नया कश्मीर और पुराने कश्मीर में क्या फर्क है ?

सम्पादक तथा प्रकाशक :–

डाइरेक्टोरेट आफ एजुकेशन

प्रबन्धक :–

स्टेशनरी एण्ड प्रिंटिंग डिपार्टमेण्ट
जम्मू एण्ड कश्मीर गवर्नमेण्ट